

केवल चिकित्सकों एवं औषधालयों के लिये ।

सूची (गाइड)

की हर्बे-मिनरल औषधियों की



जे. एण्ड जे. डिशेन

लेबोरेटरीस प्र. लेमिटेड

हैदराबाद - 500 001. इन्डिया

डिशेन
की
हर्बो-मिनरल औषधियों की
सूची
(गाईड)

विषयसूची

प्रथम भाग	पृष्ठ 1 से 19
सामान्य परिचय (Introduction)	
द्वितीय भाग	पृष्ठ 20 से 84
भेषज गुण धर्म संग्रह (Materia-Medica)	
तृतीय भाग	पृष्ठ 85 से 146
परिशिष्ट (Addendum)	
अनुक्रमणिका (Index)	पृष्ठ 147 से 150

जे. एण्ड जे. डिशेन लेबोरेटरीस प्र. लिमिटेड
रेसीडेन्सी रोड, हैदराबाद, इन्डिया-500 001.

Website: www.dechane.com
e-mail: dechane@eth.net

भूमिका

हमें अपनी हर्बो मिनरल औषधियों के मार्ग निर्देशन हेतु सूची का नवीन संस्करण प्रस्तुत करते हुए हर्ष हो रहा है। विभिन्न जड़ी बूटियों एवं खनिज लवणों के वैज्ञानिक ढंग से निर्मित मिश्रण को औषधि के रूप में हर्बोमिनरल दवाओं के नाम से जाना जाता है, जिनको अयुर्वेद के “मर्दनम गुण वर्द्धनम” सिद्धान्त के आधार पर तैयार किया गया है, जिसके कारण बहुत थोड़ी मात्रा में ही ये औषधियाँ मानव शरीर पर तुरन्त अपना व्यापक प्रभाव दिखाती हैं। थोड़ी मात्रा में प्रयुक्त होने के कारण शरीर पर जहाँ एक ओर तुरन्त लाभ होता है वहीं दूसरी ओर मूल दवाओं के कारण होने वाले हानिकारक प्रभाव नहीं के बारबार होते हैं। यही इन हर्बोमिनरल औषधियों की विशेषता है। साथ ही साथ इन दवाओं की कीमत जहाँ तक सम्भव हो सका है कम से कम रखी गई है ताकि भारत जैसे निर्धन देश की अधिकांश जनता इनसे लाभान्वित हो सके।

90 वर्ष पूर्व **डिशन** ने भारत जैसे विशाल देश में बसने वाली 80% गरीब जनता की आवश्यकताओं को महसूस किया था और जिस समय चिकित्सा पद्धति गांवों की जनता की पहुंच के बाहर थी उस समय हर्बोमिनरल औषधियों को अपनी तकनीकी खोज के द्वारा निर्माण कर जनता की सेवा का व्रत लिया था। उसी साधना व परिश्रम का परिणाम है कि आज **डिशन** की औषधियाँ भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में खास कर और अब शहरों में भी, घर घर में आम तौर से इस्तेमाल की जाती हैं। भारत जैसे बहुभाषी देश में अपना

संदेश पहुंचाने के लिए यह सूची पुस्तिका (गाइड) प्रचलित 14 प्रान्तीय भाषाओं में प्रकाशित की गई है। जिससे अधिक से अधिक लोगों को जानकारी प्राप्त हो सके तथा वे इस से फायदा उठा सकें।

डिशन, देश के चिकित्सकों की अत्यंत आभारी है जिनका सहयोग उसको 90 वर्षों से प्राप्त होता रहा है। सारे भारत में एवं विदेशों में भी हमारी एजेन्सियों का जाल फैला हुआ है, ताकि दवाओं के मिलने में परेशानी न हो। फिर भी यदि हमारी दवाओं को प्राप्त करने में कोई परेशानी महसूस हो तो सज्जनों से प्रार्थना है कि हमें लिखने में संकोच न करें ताकि हम उनकी मदद कर सकें।

हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)
दिनांक : मई 2008

डिशन

प्रथम भाग

सामान्य परिचय (Introduction)

जे. एण्ड जे. डिशेन की स्थापना भारत में हैदराबाद में 1917 में हुई थी और इस का मूल उद्देश्य भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में देश में ही प्राप्त स्रोतों से उपलब्ध, कम से कम मूल्य में चिकित्सा सेवाएँ प्रदान करना था क्योंकि लगभग 5 लाख गांव वाले इस देश की 75% जनता गावों में बसती है जिसको, निर्धनता एवं साधन सुलभ न होने के कारण, मूल चिकित्सा सेवा तक उपलब्ध नहीं होने पाती।

हमारा पिछले 90 वर्षों से यह निरन्तर प्रयास रहा है कि गुणकारी, हानिरहित एवं कम से कम मूल्य की दवाओं को जनता को उपलब्ध करा कर देश के स्वास्थ्य की रक्षा की जा सके।

इलाज से बचाव अधिक अच्छा है

हमारा हमेशा से ही यह विचार रहा है कि इलाज से बचाव अधिक अच्छा है। जन साधारण को सबल करके ही उनके जीवन के स्तर को उठाया जा सकती है और रोगों को रोका जा सकता है।

इसके लिये हम अपनी एक पुस्तक “खोये हुये स्वास्थ्य का पुनरुद्धार” को पढ़ने की सिफारिश करते हैं। जनसाधारण में व्याप्त पोषण एवं जीवन के मूल सिद्धांतों के प्रति गलत धारणाओं को दूर करने के उद्देश्य से यह पुस्तक प्रकाशित की गई है जिसमें जीवनी शक्ति एवं स्नायु विकारों पर विशेष प्रकाश डाला गया है। यह पुस्तक हमारे जन साधारण के लिये डाक से भी मंगवाई जा सकती है।

ज्ञान की छोटी छोटी बातों के अभाव में अधिकांश लोग रोजाना होने वाली स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के लिये, परेशान रहते हैं। (और दूसरों को भी परेशान करते हैं।) चूँकि तमाम रोग शुरुवात की चिकित्सा से कम से

कम रोके जा सकते हैं और कहीं कहीं ठीक भी किये जा सकते हैं। इस लिये यह अवश्यक है कि व्यक्ति अपने स्वास्थ्य के बारे में सावधान रहे।

एक नवीन विचार धारा

वैसे तो मूल रूप से हर रोग के पीछे कोई न कोई कारण होता है पर यहां पर एक बात जान लेना बहुत जरूरी है कि विभिन्न मनुष्यों में व्याप्त एक ही रोग के पीछे एक-सा कारण नहीं होता है।

साथ ही यह भी जानने योग्य है कि एक कारण विशेष हमेशा एक ही रोग लक्षण नहीं उत्पन्न करता, ना ही हमेशा एक से रोग लक्षण एक ही कारण से उत्पन्न होते हैं।

इसलिये मानव शरीर में होने वाली व्याधियों के पीछे निम्नलिखित कारण एक या संयुक्त रूप से अनेक हो सकते हैं:-

(१) पोषण का समुचित अभाव, खाना न पचना, पचे हुये भोजन तत्वों का शरीर में व्याप्त न होना या कब्ज का होना।

(२) मानसिक एवं स्नायु विकार।

(३) रक्त की कमी या रक्त विकार।

उपरोक्त तथ्यों को और भली भांति समझने के लिये आप यों जान लीजिये कि मानसिक तनाव से आमाशय में घाव (Gastric Ulcer) उत्पन्न हो सकते हैं। इसी प्रकार घरेलू समस्याओं से परेशान व्यक्ति टी.बी. का शिकार हो सकता है। मानसिक तनाव एवं उलझनें और आज का मशीनी जीवन ही मानव शरीर में जटिल रोगों का उत्तरदायी है। इसी प्रकार समुचित पाचन न होने से आँखों पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है पर साथ ही स्नायु विकार भी आँखों पर बुरा असर डालसकते हैं। इसके अलावा रक्त दोषों के कारण भी आँखे खराब हो सकती हैं। इसी प्रकार जहां एक रोग विभिन्न कारणों से उत्पन्न होता है वहीं मानव शरीर के विभिन्न अंग उपरोक्त

लिखे एक या दो या तीनों कारणों के संयुक्त प्रभाव से प्रभावित हुये बगैर नहीं रह सकते। इस प्रकार दांतों पर बुरा प्रभाव, गलत पाचन क्रिया या मानसिक कुप्रभाव या रक्त दोष से, पड़ सकता है।

इसलिये यह आवश्यक है कि चिकित्सा करते समय प्रत्येक रोगी की शारीरिक दशा का अलग से अध्ययन किया जावे।

इस लिए आंखों की परेशानी, यकृत का ठीकसे काम न करना, कब्ज, फेफड़े में विकार, दाँत में दर्द या फोड़े फुन्सी के इलाज में जहाँ कोई एक अन्दरुनी औषधि या बाहरी मलहम या लोशन का प्रयोग लाभकारी हो तो सकता है पर जब तक रोगी का व्यक्तिगत रूप से अध्ययन न किया जाये, उसकी पूरी चिकित्सा सम्भव नहीं है, ना ही जड़ से रोग का निवारण सम्भव है। इस लिए डिशेन की चिकित्सा प्रणाली शरीर के रचनात्मक एवं मूल चिकित्सा सिद्धान्तों पर आधारित है और शायद हमारी सफलता का कारण भी यही है।

इस प्रकार डिशेन की औषधियों का जन्म ही मिश्रण के सिद्धान्त से हुआ है और यही सिद्धान्त न केवल औषधियों के मिश्रण पर वरन् चिकित्सा के सिद्धान्तों पर भी लागू होता है।

इस सिद्धान्त के अनुसार, किसी विशेष रोग की चिकित्सा के लिए कोई एक ही प्रकार की चिकित्सा प्रणाली निर्धारित नहीं की जा सकती परन्तु एक विशेष दशा के लिए विशेष चिकित्सा पद्धति निर्धारित हो सकती है। हमारा उद्देश्य यह रहा है कि समय समय पर चर्चित विभिन्न देशों के विद्वानों के मतों का उचित समन्वय किया जा सके ताकि मानव की चिकित्सा में उन सबका मिश्रित लाभ उपलब्ध हो सके। यहाँ एक बात कहना उचित होगा कि सभी मत अपनी अपनी जगह पर सही हैं पर उन सभी का एक साथ प्रयोग गलत होगा क्योंकि मानव स्वयं में एक संसार की सबसे जटिल मशीनरी है। इस लिए हमें विभिन्न मतों का समन्वय इस प्रकार करना होगा कि मनुष्य को उनका लाभ हो सके और हमने इसी

जटिल कार्य को करने की कोशीश अभी तक की है। अतः डिशेन की औषधियाँ आयुर्वेद, एलोपैथी एवं होम्योपैथी के सिद्धान्तों के समुचित समन्वय पर आधारित हैं।

हमारे सामने ज्ञान का अथाह भण्डार है और मानव सीमित शक्ति रखने वाला प्राणी है और इस असीमित भण्डार को ग्रहण करने के लिए मानव में विनय का गुण ही उसकी सहायता कर सकता है। यदि कोई विनम्रता सीखना चाहे तो उसे चिकित्सा शास्त्र का पूरा अध्ययन करना चाहिये क्योंकि अन्यविज्ञान की शाखाओं की अपेक्षा उसे चिकित्सा विज्ञान में अधिक विनम्रता बरतनी पड़ेगी। इस विज्ञान के असीमित ज्ञान भण्डार का ही यह कमाल है कि एक एलोपथ डाक्टर एक रोग का इलाज अपनी चिकित्सा पद्धति से करता है जब कि एक होम्योपथ उसी रोग का इलाज बिलकुल विपरीत तरीक से करता है यही हाल यूनानी, प्राकृतिक विज्ञान व मनोवैज्ञानिक चिकित्सकों का है। कहने का तात्पर्य यह है कि चिकित्सा विज्ञान में ज्ञान का भण्डार अपरिमित है। सबसे बड़ा चिकित्सक वही है जो विनम्रता से किसी भी व्यक्ति से ज्ञान सीखने को आतुर हो। सबसे बड़ा चिकित्सक वही है जो विद्वान होते हुये भी अपने को ज्ञान का आतुर समझे। सबसे बड़ा चिकित्सक वही है जो अपने रोगी की व्यक्तिगत आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखकर उस रोगी के लिये दवायें निर्धारित करे। इसके साथ ही सबसे बड़े डाक्टर में यह गुण हो कि वह अपने रोगी की चिकित्सा करते समय निम्न तीन बातों का ध्यान रखे:-

- 1) मानव मस्तिष्क का कार्य करने का ढंग,
- 2) मानव शरीर की जटिलतायें,
- 3) मानव हृदय में व्याप्त ईश्वरी शक्ति।

क्योंकि ये तीनों चीजें चिकित्सा में बड़ा महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं और जो इन तीनों के सम्बन्धों को नहीं समझने पाता वह वास्तव में एक पूर्ण असमर्थ चिकित्सक की श्रेणी में स्थान पायेगा।

डिशेन की औषधियाँ तमाम चिकित्सा प्रणालियों का ससन्वय इस प्रकार प्रस्तुत करती हैं कि मनुष्य को सभी प्रणालियों का लाभ तो मिले पर उसे प्रत्येक चिकित्सा प्रणाली में व्याप्त दोष न मिलने पाये।

हमें चिकित्सा विज्ञान की सभी शाखाओं में पारंगत विद्वानों एवं अनुसंधान कर्ताओं के प्रति बहुत ही श्रद्धा है। हमने उनके अलग अलग मूल सिद्धान्तों का गहराई से अध्ययन किया है और उनमें एकता ढूँढने का प्रयत्न किया है। इस प्रकार हमने पूर्वी एवं पाश्चात्य विचारों का समन्वय करने का प्रयत्न किया है। हाँलांकि हम यह दावा नहीं करते हैं कि हमारे द्वारा आविष्कृत प्रणाली अपने में सम्पूर्ण है पर हम यह विश्वास करते हैं कि हमने अंधक परिश्रम द्वारा विभिन्न प्रणालियों को एक ऐसा समन्वयात्मक रूप देने का यत्न किया है जिससे सभी प्रणालियों का फायदा मानव की चिकित्सा में मिले और उस में कोई दोष न विद्यमान हो।

चिकित्सा विज्ञान की प्रणालियों के मूल सिद्धांत

आयुर्वेद- 'मर्दनम गुण वर्द्धनम' सिद्धांत के अनुसार किसी औषधि को बराबर पीसने (Trituration)से शक्ति बढ़ जाती है। यह सिद्धांत होमियोपथी के पोटेन्सी बढ़ाने वाले सिद्धांत से भिन्न है। आयुर्वेद के प्राचीन विद्वानों एवं अनुसंधान कर्ताओं ने यह पाया कि निरन्तर खरल करने से दवा में एक विशेष शक्ति आ जाती है जो मूल दवा की अपेक्षा कई गुना अधिक होती है। इससे वही औषधि थोड़ी मात्रा में ही जो फायदा करती है, वही मूल रूप में ज्यादा मात्रा में, भी नहीं करने पाती।

इसी सिद्धान्त को लेकर हमने अपनी औषधियों का निर्माण किया है। हमारी सारी दवायें काफी खरल की जाती हैं जिससे उनकी शक्ति कई गुना बढ़ जाती है। इससे दवा शरीर में तुरन्त व्याप्त हो जाती है और छोटी खुराक में ही तुरन्त काम करती है।

नोट:- परमाणु कृत औषधि (Atomized) से हमारा अभिप्राय वही है जिसे हम अपनी गाइड में पिछले 90 वर्षों से लिखते आ रहे हैं यानी

निरन्तर खरल करके दवा के मूल स्थूल रूप को परमाणु कृत सूक्ष्म रूप दे देना।

वैज्ञानिकों ने इस परमाणु कृत सिद्धान्त की पुष्टि में प्रयोग भी किये। ग्रीप्सवल्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा.शुल्ज (भेषज गुण विज्ञान विभाग) ने यीस्ट सेलों (Yeast Cells) को मरक्युरी क्लोराइड के विभिन्न ताकत के घोल में डाल कर देखा। सबसे ज्यादा ताकत के घोल में ये यीस्ट सेल तुरन्त समाप्त हो गये, हल्की ताकत वाले घोल में ये सेल काफी देर तक जिन्दा रहे और भी हल्के घोल में इन सेलों की संख्या में वृद्धि रुक गई। जब इन यीस्ट सेलों को १:७० से ८० लाख आनुपात वालो घोल में रखा गया तो इन सेलों की संख्या में वृद्धि होने लगी। इससे यह विदित हुआ कि जहाँ परमाणु कृत दवाओं की सूक्ष्म मात्रा शरीर के तन्तुओं में क्रियाशीलता का विकास करती हैं, बड़ी मात्रायें उन्हीं तन्तुओं की कार्यशीलता को समाप्त कर देती हैं और कभी कभी तो मूल रोगों के निवारण के बजाये नये रोगों को पैदा कर देती हैं।

इसके अलावा यह भी देखा गया कि अति सूक्ष्म कृत औषधियाँ मुँह की श्लेष्मा झिल्ली (Mucous membrane) द्वारा ही सोख ली जाती हैं और इस प्रकार पेट में पहुँचने के पूर्व ही अपना कार्य करने लग जाती हैं। इस प्रकार बहुत गम्भीर परिस्थितियों, में रोगी को घन्टों के बजाये मिनटों में फायदा पहुँचाती हैं। इस बात का परीक्षण करने के लिये डाक्टर मेड मैन्डल ने निम्न लिखित प्रयोग किये-

उन्होंने ने डिजीटोलिस (परमाणुकृत) (Atomized Digitalis) में डुबाकर एक कांच की छड़ एक रोगी की जीभ में छुआई। कुछ ही सेकेण्डों में यंत्रों ने उसके हृदय पर असर की खबर दी। फिर उसने परमाणुकृत अफीम (Ionised Morphia) की एक बूँद एक रोगी की जीभ पर डाला। दो मिनट के बाद ही उसका रक्त परीक्षण किया गया और दवा का अंश रक्त में पाया गया। अतः हमारी हर्बो-मिनरल परमाणुकृत औषधियाँ बहुत

सूक्ष्म मात्रा में मिनटों में काम कर दिखाती हैं और कभी कभी तो चिकित्सक हैरान रह जाते हैं।

भावना (ENGRAFTING)

यह सिद्धान्त आयुर्वेद का ही है पर इसका कुछ हद तक यूनानी प्रणाली में भी प्रयोग किया जाता है। इसका अर्थ यह होता है विभिन्न धातुओं एवं खनिज लवणों को विभिन्न प्रकार की जड़ी बूटियों के रस में मर्दन करना या धातुओं व खनिज लवणों के घोलों को जड़ी बूटियों के घोलों व सारों में मिलाना। लेकिन दोनों विधियों में एक विशेष अन्तर है। जहां द्रव रूप में चीजों को मिलाने से रासायनिक परिवर्तन होते रहते हैं जिससे मूल चीजों की शक्ति कम होने की सम्भवना रहती है, पाउडर रूप में उन चीजों में यह रासायनिक परिवर्तन सम्भव नहीं होने पाता और मूल वस्तुओं की शक्ति में कमी नहीं आने पाती इसी गुण विशेष के कारण औषधियों को पाउडर रूप में भावना देने से वे शक्तिशाली होकर तुरन्त, शरीर में असर करती हैं और उनका प्रभाव स्थायी होता है।

आयुर्वेद के विद्वानों ने यह भी पाया है कि एक दवा के स्थूल अवस्था (Crude form) में जो गुण पाये जाते हैं उसके अणु स्वरूप में उसके विपरीत गुण पाये जाते हैं। यह सिद्धान्त होमियोपथी के “सिमिलिया सिमिलिबस क्यूरेन्टर” के सिद्धान्त से केवल नाम में ही भिन्न है बाकी एक रूपता है। यह सिद्धान्त एलोपथिक चिकित्सक भी मानते हैं। हालांकि होम्योपथी व ऐलोपथी वाले इस सिद्धान्त का वैज्ञानिक विवेचन भी कर लेते हैं, पर मूल रूप से तीनों प्रणालियाँ इस सिद्धान्त को स्वीकार करती हैं और उन्हें इससे एक ही तरह के परिणाम मिले हैं परन्तु वह परिणाम कितने अंश में मिले उसमें अन्तर था।

एलोपथी (ALLOPATHY)

एलोपथी के तमाम विद्वानों का मत है कि बड़ी खुराकें जहां मानव शरीर में विभिन्न बैक्टीरिया के दमन के लिये प्रतिरोधक शक्ति कम कर

देती हैं, सूक्ष्म खुराकें वहीं यह प्रतिरोधक शक्ति बढ़ा देती हैं, जिसके फलस्वरूप बैक्टीरिया मर जाते हैं और रोग पर काबू पा लिया जाता है। उनका यह भी मत है कि दवा की खुराकों से शरीर को कोई मतलब नहीं होता है, यह उस दवा के सूक्ष्म अणुओं (IONS) की संख्या पर निर्भर करता है कि दवा शरीर में कितनी व्याप्त हो पायी है। परमाणुकरण (Atomization) सूक्ष्मीकरण (Ionization) में मदद करता है।

समन्वय

डा. डब्लू कारो ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक “मूत्र एवं पौरुष ग्रंथि विकार” में लिखा है कि होमियोपथी तथा ऐलोपथी प्रणालियां एक दूसरे की पूरक हैं दोनों प्रणालियों को अपनी सीमायें मालूम होनी चाहिये और वे एक दूसरे के समन्वय से ही पूर्ण मानव कल्याण कर सकती हैं।

चिकित्सा विज्ञान में आध्यात्म का योग

हमसे किसी ने कहा था कि चिकित्सा विज्ञान के मामले में आध्यात्म जैसे विषय का जिक्र करना उचित नहीं है।

परन्तु हमारा मत है कि एक योग्य चिकित्सक को अपने रोगी के न केवल शरीर की हिफाजत करनी पड़ती है वरन् उसके मस्तिष्क का अध्ययन भी करना पड़ता है क्योंकि शरीर की क्रियाओं का संचालन मस्तिष्क ही करता है।

इसी लिए शरीर से ज्यादा मस्तिष्क की ओर ध्यान देना आवश्यक है। लेकिन मस्तिष्क का सीधा सम्बन्ध विचारों से और विचारों का सम्बन्ध आत्मा से होता है। इसी लिये शरीर मस्तिष्क और आत्मा का एक दूसरे से अभिन्न सम्बन्ध है और एक का स्वास्थ्य दूसरों पर निर्भर रहता है।

इसी सिद्धान्त को लेकर डिशेन की औषधियों का निर्माण किया गया है क्योंकि हम मानव को सम्पूर्ण इकाई मानते हैं और उसके शरीर, मस्तिष्क और आत्मा को उसके विभिन्न भाग। इसके अलग अलग स्वास्थ्य समन्वय

से ही पूरे मानव की इकाई का निर्माण सम्भव है। इसी सिद्धान्त के आधार पर हम किसी अङ्ग में विकार उत्पन्न होने पर केवल उस अंग को अस्वस्थ नहीं मानते वरन् इसे उसके शरीर मस्तिष्क और आत्मा के सम्बन्धों में असमन्वय के रूप में देखते हैं। इसी लिए इलाज के तीनों पक्षों का गहन अध्ययन नितांत आवश्यक है।

यदि हम दुनिया के तमाम अनुसंधान कर्ताओं द्वारा किए गए अविष्कारों का विश्लेषण करें, तो यही पायेंगे कि इन सबके पीछे मनुष्य का आत्मबल ही है जो जीवन में सभी खुशियों, दुखों, सफलताओं, असफलताओं, सुन्दर स्वास्थ्य या रोगों को उत्पन्न करने के लिये उत्तरदायी है।

इसलिए प्रसिद्ध सिद्धान्त है कि डाक्टर को रोगी का इलाज करना चाहिए रोग का नहीं। इससे साफ विदित है कि एक सफल चिकित्सक को इलाज करते समय रोगी की खान पान की आदतें, रहन सहन, आचार विचार इन सब का अध्ययन करना चाहिये। ये सभी गुण उसकी मानसिक स्थिति पर निर्भर करते हैं कि वह जीवन के बारे में क्या सोचता है। इस लिए जब तक उसकी, जीवन के प्रति धारणा सही नहीं है, उसके विचार और आदतें सही नहीं हो सकतीं।

मनोवैज्ञानिक चिकित्सा-मस्तिष्क चिकित्सा शास्त्र जो अप्रत्यक्ष रूप से शरीर की चिकित्सा करता है।

यह कहा जाता है कि स्नायु विकारों की सबसे उत्तम चिकित्सा है - रोगी का आध्यात्मिक उत्थान। अधुनिक चिकित्सक जिन्होंने केवल विज्ञान के बारे में सीखा है पर सारे जगत एवं सृष्टि, प्रकृति एवं विज्ञानों के जन्मदाता परम पिता परमात्मा के बारे में नहीं जाना है वे इसे मनोवैज्ञानिक चिकित्सा ही कहेंगे।

सच तो यह है कि मनुष्य की मानसिक स्थिति का, उसके रोगों में और खास कर स्नायु विकारों में, बड़ा योगदान होता है। मनोविज्ञान की शक्तियाँ अधिक से अधिक रोगी की मानसिक स्थिति में काल्पनिक

परिवर्तन ला सकती हैं जिससे रोगी की आस्था उस डाक्टर में बढ़ जाती है जिसके इलाज में रोगी रहता है। इस प्रकार मनोविज्ञान की अपनी एक सीमा है।

परन्तु रोगी का आध्यात्मिक विकास उसकी काल्पनिक शक्तियों को ही नहीं जगाता वरन् उसकी आत्मा में निहित ईश्वरी शक्ति को भी जगा देता है। इस आत्म बल के द्वारा ही वह चिकित्सक के सहयोग और औषधियों के सहारे शरीर में व्याप्त कष्टों को सह लेता है और अन्ततोगत्वा रोग से मुक्त हो जाता है इसलिये रोगी के आत्मबल का उसके जीवन में बड़ा महत्व है।

रोगों से बचाव एवं चिकित्सा के लिए कुछ महत्वपूर्ण बातें

प्रत्येक पढ़े लिखे व्यक्ति को निम्नलिखित बातें जानना जरूरी है:-

(अ) जीवन के दर्शन को किस प्रकार ग्रहण करें।

(ब) अपने स्वास्थ्य व अपने ऊपर आश्रित लोगों के स्वास्थ्य की किस प्रकार देखभाल करें।

जीवन के दर्शन से हमारा यह अभिप्राय है कि हम यह न भूलें कि हम इस संसार में अपनी ही इच्छा से नहीं आये हैं बल्कि उस परमात्मा की इच्छा से जीवित हैं और उसने हमें किसी उद्देश्य से इस संसार में भेजा है, जिसे हमें पूरा करना है। इसलिए हमारी खुशियां इस बात पर निर्भर करती हैं कि हमने उस परमात्मा द्वारा दिया हुआ कार्य पूरा किया है या नहीं। जब हम इस गूढ़ तथ्य को नहीं समझने पाते तो हम जीवन की दौड़ में अपने को इतना उलझा लेते हैं कि हमारा विवेक अच्छे और बुरे में फर्क नहीं करने पाता और इसका परिणाम यह होता है कि हम इस अमूल्य जीवन को न अपने ही लिए सार्थक बना पाते हैं न ही दूसरों के लिए। यह एक प्रकार का उद्देश्यहीन जीवन हो जाता है।

शिक्षित मनुष्य का कर्तव्य है कि वह कम से कम स्वास्थ्य के मूल सिद्धांतों के बारे में जानकारी रखे। वरना उस शिक्षित व्यक्ति और गंवार में क्या अन्तर रह जायेगा। दुर्भाग्यवश आज शिक्षित वर्ग में ऐसे व्यक्ति भी हैं जो अपने खराब स्वास्थ्य के स्वयं ही जिम्मेदार हैं।

इसलिये आइये हम सुन्दर स्वास्थ्य और चिकित्सा के मूल सिद्धान्तों पर विचार करें।

वास्तव में स्वास्थ्य का जीवन में क्या महत्व है इसे हम उसी वक्त जान पाते हैं जब हम इसे खो बैठते हैं। हम में से अधिकांश को बाद में अपनी भूलों के लिए काफी पछताना पड़ता है। अगर रोगी ही अपने खराब स्वास्थ्य का जिम्मेदार है तो उसे निराश होने की जरूरत नहीं है। वह खोये हुये स्वास्थ्य को पुनः प्राप्त कर सकता है। लेकिन इसके लिये उसे रोगों से बचाव के तरीके जानने होंगे ताकि वह अपनी भूलों को सुधार सके, साथ ही दूसरों को भी चेतावनी दे सके जिससे कि वे उन भूलों को न कर बैठें जिनके कारण आज वह अपना स्वास्थ्य खो बैठा है।

सच मानिये मनुष्य की सबसे बड़ी कमजोरी है - अनुशासन हीनता।

आधिकांश परेशानियों का मूल कारण है - हमारा अपनी इन्द्रियों का दास होना। स्वभावतः मनुष्य इन्द्रियों के वश में होता है। वैसे तो इन्द्रियाँ ईश्वर का अदभुत वरदान हैं पर जब हम उनके पूर्ण रूप से वशीभूत हो जाते हैं तो वे ही हमारी बससे बड़ी दुश्मन साबित होती हैं। इस लिये आज रोगों और दुखों का मूल कारण अनियंत्रित इन्द्रियाँ ही हैं। इस लिये आज सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने खान पान को नियंत्रित करें, उत्तेजना व चिन्ता न करें, स्वस्थ मनोरंजन को जीवन में स्थान दें, नियमित व्यायाम करें और अपने काम, मनोरंजन व निद्रा को आवश्यक रूप से सुयोजित करें। साथ ही प्ररिश्रम, परोपकार, निस्वार्थ भाव, सद् आचरण और सद् व्यवहार को जीवन में उचित स्थान दें। सच पूछिये तो ये प्रकृति के सही माने में नियम हैं जिनका, विज्ञान के बताये नियमों के साथ, पालन करने से मनुष्य सुन्दर स्वास्थ्य प्राप्त कर सकता है।

दुसरा महत्वपूर्ण नियम है अपने साधनों और अपनी सीमा के अन्दर जीवन यापन।

वैसे तो आज के समय में यह कहना शोभनीय नहीं हैं परन्तु चूँकि ज्यादातर लोग जीवन के इस तथ्य को भूल जाते हैं और परेशानियों में पड़ जाते हैं इस लिए हम यह आवश्यक समझते हैं कि जीवन के इस पहलू को भी याद दिलायें। अपने को बड़ा प्रदर्शित करने के बड़े भयंकर नैतिक परिणाम होते हैं। झूठी शान व दिखावे की भावना वाले दिमाग में झूठे व काल्पनिक विचार आते हैं और मनुष्य वैसे ही कार्य भी करने लगता है। इसलिये हमारे पूर्वजों ने कहा है कि 'ताते पांव पसारिये जेती चादर होय' जीवन के सुख का यही गूढ़ रहस्य है।

इन सब के साथ ईश्वर में हमारी आस्था परम आवश्यक है साथ ही हम अपने चिकित्सक में तथा दवाओं में भी आत्मविश्वास रखें।

जब हम बीमार होते हैं तब हमारा दिमाग स्थिर नहीं होता और यह स्वाभाविक है। हम इसीलिये एक डाक्टर छोड़ दूसरे डाक्टर के पास भागते रहते हैं और दवाओं के ढेर सारे नुस्के खाते जाते हैं। अन्त में इन सबका परिणाम बुरा ही होता है। इसलिये बीमारी की अवस्था में यह बहुत ही जरूरी है कि मनुष्य शान्त रहे और अपने डाक्टर के प्रति सम्पूर्ण आस्था रखकर उसके प्रति वफादार रहे जिसके हाथों में उसका जीवन समर्पित होता है। डाक्टर को चिकित्सा के लिये उचित अवसर और समय देना चाहिये। पुराने रोगों में सामान्यतया समय लग सकता है परन्तु परिणाम अच्छे और स्थायी होते हैं। पुराने रोगों का तुरन्त व-शीघ्र इलाज अक्सर भ्रमित होता है, रोगी धोखा खा सकता है।

वैज्ञानिक युग में रहने का अर्थ प्रकृति के नियमों की अवहेलना नहीं है।

यदि रोगी की चिकित्सा हमारी औषधियों से लिखे निर्देशानुसार हो रही है। तो यह आवश्यक है कि रोगी के शरीर की विशेषताओं एवं आदतों का रोग के साथ साथ पूरा अध्ययन किया जाये। साथ ही दवा निर्धारित

करते वक्त यह जरूर ख्याल रखा जाये कि रोगी की क्या चीजें, क्या विचार और आदतें बदली जायें कि दवा को पूर्ण काम करने का अवसर मिले। यह नहीं भूलना चाहिए कि औषधियां सिद्धान्त रूप से प्रकृति की सहायक होनी चाहिए और उनकी अपनी एक सीमा है। इस लिए प्रकृति के नियमों की अवहेलना नहीं करनी चाहिए और समय व परिस्थितियों के अनुसार जहां तक हो सके प्रकृति के नियमों का पालन कर, प्रकृति को स्वयं रोगी को ठीक करने का अवसर देना चाहिए।

आज हम विज्ञान के युग में जी रहे हैं लेकिन कभी कभी विज्ञान की आस्था में हम प्रकृति को भूलने लगते हैं जो सभी विज्ञानों की जननी है।

इसी कारण लोग यह सांचने लगते हैं कि टानिक, दवायें और इन्जेक्शन जब उनकी सेवा में हैं तो उनको अपने लिये स्वयं कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। यह बहुत बड़ी भूल है। अंधादुन्ध दवायें खाने से नये नये रोग पैदा होते हैं जो कभी कभी मूल रोगों से भी गम्भीर होते हैं। नतीजा बुरा ही होता है कि मूल रोग के साथ साथ नये रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इसलिए तेज दवाएं सावधानी से लेनी चाहिए यहां तक कि हानि रहित औषधियों जैसे डिशेन की औषधियों को भी आवश्यकता के बिना नहीं लेना चाहिये।

जीवनी शक्ति-रोग प्रतिरोधक

जीवनी शक्ति (VITALITY) एक ऐसा शब्द है जिसके बारे में गलत धारणयें अधिक हैं। एक चिकित्सक के लिये इसका अर्थ है कि 'मानव शरीर के तमाम कोषों की क्रियोयें ठीक से होना।' आम आदमी इसे 'ताकत' के रूप में समझता है और हर व्यक्ति इसे पाने के लिये तत्पर है।

लेकिन हमारा विचार है कि जीवनी शक्ति तीन प्रकार की होती है - शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक।

मानसिक जीवन शक्ति (Mental Vitality) प्राकृतिक रूप से दूसरी दोनों प्रकार की शक्तियों से ज्यादा महत्वपूर्ण है। शरीर के ऊपर मस्तिष्क का शासन होता है इसीलिये शारीरिक रूप से दुर्बल व्यक्ति भी मानसिक शक्ति के सहारे ज्यादा दिन तक जीवित रहता है। मानसिक रूप से बलवान व्यक्ति शारीरिक या मानसिक रूप से दुर्बल व्यक्ति की अपेक्षा रोगों पर जल्दी काबू पा लेता है। इसीलिये सदियों से प्रचलित कहावत बिलकुल सही है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क रहता है।

जहां तक आध्यत्मिक शक्ति का सवाल है जीवन में नित्य प्रति इसके चमत्कार देखने को मिलते हैं, आप सोचिये कि वे कौन से व्यक्ति हैं जिनके सामने हमारा स्वतः आदर भाव से नतमस्तक हो जाता है। क्या वे शारीरिक रूप से शक्तिशाली या खूबसूरत या धनी लोग हैं या बहुत बड़े विद्वान हैं। नहीं। ऐसे श्रद्धा के पात्र व्यक्ति वे हैं, जो सदाचरी हैं, चरित्रवान हैं और गलत आचरण से बचकर सदा सत्कर्म करते रहते हैं।

इसीलिये इस शक्ति (आध्यत्मिक) के लिये जरूरी है कि हम अपने हृदय को ईश्वर की ओर लगायें और जीवन में जो कुछ भी अच्छा या बुरा हो उसे ईश्वर की मर्जी एवं आशीर्वाद मानकर ग्रहण करें। आप इसे पराजयहीनता की संज्ञा दे सकते हैं लेकिन हमारा दृढ़ विश्वास है कि जब मनुष्य ईश्वर की आज्ञा का पालन करता है, उसकी बनायी सारी दूसरी चीजें मनुष्य की आज्ञा का पालन करती हैं। लेकिन जब मनुष्य ईश्वर के प्रति बगावत कर बैठता है तो मनुष्य की सारी वस्तुएं, यहां तक औषधियां भी मनुष्य से ही बगावत कर बैठती हैं।

जीवनी शक्ति का पुनःसंचार-उचित पोषण, पचे भोजन के तत्त्वों का व्यापतीकरण और अपचे भोजन का विसर्जन।

हमारे शरीर का स्वास्थ्य मूल रूप से इस बात पर निर्भर करता है कि हम जीवन में कितना संयम से काम लेते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि मानव जीवन सेवा के लिये है, न कि भौतिक सुखों के लिये।

अक्सर रोगी डाक्टरों के पास तमाम व्याधियों की शिकायत लेकर आते हैं और अपने उपचार के लिये सलाह लेते समय इस बात पर ज्यादा जोर देते हैं कि उनकी खोयी हुई ताकत फिर से वापस आ जाये। लेकिन वे भूल जाते हैं कि जीवनी शक्ति सुन्दर स्वास्थ्य का वरदान है और जब तक स्वास्थ्य के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर नहीं किया जाता, खोयी हुई ताकत फिर से वापस पाने का सवाल ही नहीं होता।

स्वास्थ्य के मूलभूत सिद्धान्तों (पोषण, पाचन और पचे हुए तत्त्वों का आत्मसात हो जाना) और आगे अध्याय 3 में दिये गये विवरण से आपको साफ पता चल जायेगा कि हमें स्वयं जीवनी शक्ति के पुनः संचार के लिए क्या करना है और विज्ञान हमारे लिए क्या करता है।

पोषण (Nutrition)

सही पोषण से तात्पर्य है सही ढंग से भोजन करना। सही ढंग से भोजन करने का मतलब यह नहीं है कि आपका भोजन बहुत ही पोषक पदार्थों से भरपूर हो। अच्छे भोजन से तात्पर्य यह है कि खाना प्राकृतिक तौर से रुचिकर एवं सुपाच्य हो। माँस एक व्यक्ति के लिए स्वादिष्ट हो सकता है लेकिन दूसरे व्यक्ति के लिए विष समान हो सकता है। आप देखेंगे कि मूर्ग मुसल्लम खाने वालों की अपेक्षा नमक रोटी खाने वाले ज्यादा हृष्ट पुष्ट होते हैं इस लिए भोजन हर एक की रुचि का हो, यह आवश्यक है।

विज्ञान की दृष्टि से पोषण का तात्पर्य यह है कि हम अपने भोजन को ज्यादा पोषक कैसे बना सकते हैं। पालिश किया हुआ सुन्दर दिखने वाला चावल और डबलरोटी पोषण की दृष्टि से बेकार होते हैं, ज्यादा घी मक्खन वाली वस्तुएँ भी आसनी से नहीं पचतीं। दूसरी ओर ये वस्तुएँ थोड़ी आमदनी वालों के लिए उपलब्ध नहीं होती हैं। ऐसी दशा में विज्ञान हमारी सहायता करता है। एक चाय के चम्मच बराबर अल्बो-संग दिन में दो बार लेने से पोषण सम्बन्धी कमियां दूर हो जाती हैं और शरीर स्वस्थ रहता है।

सुपाचन

भोजन का सुचारू रूप से पचना ही अच्छे स्वास्थ्य की कुंजी है। भोजन का सुचारू रूप से पचना इस बात पर निर्भर करता है कि आप क्या खाते हैं और कैसे खाते हैं। हम सही चीजें गलत ढंग से खा सकते हैं। और गलत चीजें सही ढंग से खा सकते हैं।

इस लिए भोजन को खूब चबा चबा कर खाना चाहिए और जब तक दाँतों द्वारा इसे तरल रूप न दे दिया जाये इसे गले से नहीं उतारना चाहिए। चबा चबा कर खाने से व्यक्ति जरूरत से ज्यादा खाने ही नहीं पाता। अस्वस्थ दाँत भी पाचन क्रिया को बिगाड़ देते हैं। अच्छे पाचन से दाँत स्वस्थ हैं और स्वस्थ दाँतों से पाचन ठीक रहता है। इस प्रकार दाँत व सुपाचन क्रियाएँ एक दूसरे पर निर्भर करती हैं।

पेट सम्बन्धी गडबड़ियाँ अक्सर भ्रामक होती हैं। ऐसे व्यक्ति जो खूब खाते हैं (और ज्यादा खा जाते हैं) और जो यह सोचते हैं कि उनका पाचन ठीक है, वे धोखे में रहते हैं और दूसरों की अपेक्षा पेट सम्बन्धी अधिक जटिल परेशानियाँ उठाते हैं। पाचन सम्बन्धी परेशानियों का कारण अधिक चाय, काफी और धूम्रपान भी होते हैं।

पचे हुये तत्त्वों का आत्मसात होना (Assimilation)

जब कोई व्यक्ति अच्छे भोजन व सुपाचन के बावजूद दुर्बल दिखाई पड़े तो समझ लेना चाहिए कि पचे हुये तत्व उसके शरीर में आत्म सात नहीं हो पा रहे हैं। इसके पीछे होने वाले कारणों का उल्लेख अध्याय 3 के अन्तर्गत किया गया है।

सामान्य समस्याएँ-स्नायु विकार और रक्तदोष

स्नायु विकार

स्वस्थ शरीर के पीछे स्नायु संस्थान का बड़ा हाथ होता है हमारी अति आधुनिक सभ्यता ने मनुष्य के मस्तिष्क और नाडियों पर जरूरत से

ज्यादा बोझ डाल दिया है। जीवन की कृत्रिमता की यही देन है और उसका परिणाम सामने है कि आज बच्चे भी भयभीत पैदा होते हैं। इसका एक ही इलाज है कि जीवन की आदतों को सँयमित किया जाये और उचित निद्रा और मस्तिष्क की शान्ति को सँयोजित रखा जाय। जहां तक मानसिक शान्ति की बात है यह तभी प्राप्त होती है जब हम जीवन को सही रूप से जीते हैं। जब हम केवल भौतिक आनन्द या झूठी शान और शोहरत या पैसे के लिये जीना शुरू कर देते हैं तो यही तृष्णाएँ एक दिन हमारी दुश्मन बन जाती हैं।

इसलिये जब हम यह सोचकर जीते हैं कि हमें ईश्वर ने सेवा के लिये इस संसार में भेजा है और हमें सेवा करके ही जीना है तो ईश्वर भी प्रसन्न होकर हमें आशीर्वाद देता है और पग-पग पर हमारी सहायता करता है। यही जीवन का गूढ़ रहस्य है जिसमें हमारी प्रकृति भी सहायता करती है। ऐसे समय में हमारी थकी हुई नाडियों को विज्ञान द्वारा इजाद की हुई सहायता की आवश्यकता होती है।

मानसिक विकार कभी तो स्वाभाविक होते हैं और कभी कृत्रिम जीवन के कारण। प्राकृतिक कारणों में बीमारी, मानसिक कार्य की अधिकता से तनाव, चिन्ताएँ, दुख और जीवन में होने वाले उतार और चढ़ाव, जिनसे मनुष्य नहीं बच सकता। अस्वाभाविक कारणों में प्रकृति के विरुद्ध किये गये व्यवहार, किसी को नाजायज़ सताना और जुल्म करना आते हैं। प्रकृति के नियमों की अवहेलना करने वाले को प्रकृति का दण्ड भोगना ही पड़ता है। कोई उससे बच नहीं सकता।

स्नायु रोगों के पीछे अपोषण, अपचन और कब्ज भी होता है और ऐसी दशा में जब 'गलत' को ठीक कर लिया जाता है, परेशानी से छुटकारा स्वतः ही मिल जाता है। दूसरी ओर स्नायु विकार हमारे पाचन संस्थान में गडबड़ी पैदा कर देते हैं जिससे पचे हुए भोजन तत्व शरीर में आत्म सात नहीं होने पाते ना ही अपचा भोजन का विसर्जन होने पाता है। इस प्रकार

स्नायु संस्थान और पाचनाक्रिया तथा मल विसर्जन क्रियायें एक दूसरे से सम्बन्धित हैं और चिकित्सक के लिये एक गम्भीर समस्या हैं। इससे यह विदित होता है कि सभी रोगों की चिकित्सा में स्नायु संस्थान पर ध्यान अवश्य देना चाहिए। यह आज के चिकित्सा जगत में नया विचार कहा जाता है हालांकि यह विचार बहुत पुराना है। देखिये ईसा से 500 वर्ष पूर्व सोक्रेट नामक दार्शनिक जब सैनिक सेवा से निवृत्त होकर आया तो उसने अपने ग्रीक देशवासियों को बताया कि असभ्य थरेशियन जाति के लोग सभ्य ग्रीक वासियों से कम से कम एक बात में आगे हैं, वे यह भली भांति जानते हैं कि 'मस्तिष्क के इलाज के बगैर शरीर का इलाज नहीं हो सकता।' इस गूढ़ तथ्य से अनिभिन्न होने के कारण ही हेल्लास के चिकित्सक कई रोगों का मूल कारण नहीं जानने पाते और ना ही उनकी चिकित्सा कर पाते हैं।

रक्त दोष

जैसा कि हमने देखा है कि कोई भी वस्तु रक्त को दूषित कर देती है और दूषित रक्त तमाम पेट की व्याधियों एवं स्नायु विकारों को जन्म देता है। "चिकित्सा" अध्याय के अंतर्गत हमने रक्त दोषों के कारणों पर विस्तार से प्रकाश डाला है जिनमें से दो मुख्य कारण निम्नलिखित हैं।

पुराने मलेरिया से रक्त विकार

दुर्भाग्यवश भारत में मलेरिया ने बहुत क्षति पहुंचायी है। साधारणतया आम व्यक्ति को यह नहीं मालूम है कि शरीर में मलेरिया का प्रभाव अप्रत्यक्ष रूप से वर्षों बाद तक रहता है, चाहे मलेरिया का शिकार कोई व्यक्ति २५ महीने या २५ दिन पूर्व हुआ हो पर हमेशा यह सम्भावना बनी रहती है कि यह गुप्त रूप से शरीर को नुकसान न पहुंचा रहा हो। पुराने बसे हे मलेरिया का गुप्त रूप से सबसे खास दुष्प्रभाव यह होता है कि जरा जरा सी बात पर रोगी का पाचन संस्थान बिगड़ जाता है। कुछ में तो बुखार आता है पर कुछ में बुखार भी नहीं रहता।

गर्मी सुजाक आदि गुप्त रोगों से रक्त विकार

जिनको जीवन में कभी भी गर्मी, उपदंश और सुजाक (Gonorrhoea & Syphilis) जैसे भयंकर रोग हुए हों और उन्होंने उसके विष को निकालने तक पूरा उपचार नहीं कराया हो, उनको अन्य रोगों की चिकित्सा में इसके विष के कारण होने वाली बाधाओं के लिये तैय्यार रहना चाहिये और उनका स्वास्थ्य कभी सही नहीं रह सकता।

चिकित्सा विज्ञान के विद्वानों के मतानुसार उपदंश विष (Venereal Poison) इन रोगों के ठीक हो जाने के वर्षों बाद तक शरीर के रक्त में विद्यमान रहता है। यह विष, फिर बाद में शरीर में होने वाली अन्य व्याधियों की चिकित्सा में, सही इलाज होने पर भी, दवा के प्रभाव को क्षीण कर देता है। इस लिये जिन लोगों को ये रोग दुर्भाग्यवश हो चुके हों और उन्होंने ने चिकित्सा द्वारा लक्षण समप्ति से यह समझ लिया हो कि वे पूर्ण रूप से ठीक हो गए हैं, तो यह उनकी बड़ी भूल है। उनको क्रमानुसार पूरा इलाज उपदंश विष के समाप्त होने तक लेते रहना चाहिए। इससे हमारा अभिप्राय लोगों को डराना या उनमें दहशत पैदा करना नहीं है।

हम केवल इस कटु सत्य को प्रकट कर उनको खोये हुए स्वास्थ्य को प्राप्त करने के वे साधन बताना चाहते हैं जो विज्ञान व अनुभव द्वारा उत्तम, सरल, भरोसे योग्य सर्वगुण सम्पन्न सिद्ध हो चुके हैं।

द्वितीय भाग

भेषज गुण धर्म संग्रह

(Materia-Medica)

डिशन की हर्बोमिनरल औषधियों की मात्रा सूक्ष्म है

विशिष्ट रूप से बताये गये रोगों व मात्राओं को छोड़ कर, सामान्य रूप से हमारी दवाओं की आम खुराक शिशुओं व बालकों के लिए 1/2 से 1 टिकिया तथा वयस्कों के लिए 1 से 2 टिकियां हैं। चिकित्सा नियमानुसार छोटी खुराकों से शुरुवात करनी चाहिए। शनैः शनैः आवश्यकतानुसार खुराकें बढ़ाते जाना चाहिये। लेकिन तेज बुखार पेट के दर्द ऐसे अवस्थाओं में जहां रोगी को तुरन्त आराम की जरूरत होती है। ज्यादा से ज्यादा मात्रा से शुरुवात करें।

औसतन दवा की खुराकों का अन्तर ४ घन्टे है

लेकिन जैसे जैसे रोगी की हालत सुधरती जाये, खुराकों के बीच का अन्तर बढ़ाते जाना चाहिए और खुराकों की मात्रा कम करते जायें। इस विधि से आप प्रकृति को रोग निवारण में अवसर देंगे।

अनुपान भेद से दवा का असर कम या ज्यादा होता है

गरम पानी (कुनकुने पानी) से दवा लेने से या दवा के बाद गरम पानी लेने से दवा शीघ्र फायदा करती है। शहद (कुछ बूँदों से चौथाई या आधा चम्मच) दवा के साथ देने का दूसरा सर्वोत्तम माध्यम है, खास कर छाती व फेफड़े सम्बन्धी विकारों में या जब रोगी को उत्तेजक प्रभाव की आवश्यकता हो।

दवा लेने का समय

रोग निवारक औषधियाँ खाली पेट या हलके नास्ते के बाद तथा खाना खाने के कम से कम एक घण्टा पूर्व या फिर खाना खाने के ३ घण्टे

पश्चात लेने से ज्यादा फायदा होता है। शरीर के विकास के हेतू ली जाने वाली दवायें, जैसे टॉनिक आदि, खाना खाने के बाद किसी तरल पदार्थ में घोल कर देनी चाहिए।

डिशन की औषधियों में खान पान परहेज नहीं है

सामान्य रूप से कोई खान पान परहेज नहीं होना चाहिये। जो रोगी की रुचि हो वही खाना चाहिये उसे बगैर पसन्द का भोजन जबरदस्ती नहीं देना चाहिये। ज्यादा तकलीफ में भोजन बहुत हल्का सुपाच्य तरल रूप में हो तो अच्छा है। लेकिन पेट की गड़बड़ियों में और खासकर पाचन सम्बन्धी रोगों में तो सही खान पान का इलाज में बड़ा महत्त्व होता है।

सम्मिश्रण

डिशन की सभी औषधियां आवश्यकता पड़ने पर एक दूसरे में मिलाई जा सकती हैं। रोगी की दशानुसार (केवल जहर-को अकेला ही देना चाहिये) इलाज की सफलता का रहस्य ही उचित दवाओं के चुनाव व समानुपातिक मिश्रण में है। रोगी की व्याधियों के लक्षण के अनुसार दो या अधिक दवायें उसी अनुपात में मिलायें।

निरन्तर खरल करके देने से डिशन की दवाओं का असर बढ़ जाता है

सिद्धान्त रूप से हमारी हर्बो मिनरल औषधियां खरल करके अणुरूप में बनायी जाती हैं पर उनको चिकित्सक अगर रोगी को देने से पूर्व यदि और खरल कर लें तो दवायें शीघ्र शरीर में व्याप्त होकर तुरन्त प्रभाव दिखाती हैं। यदि चाहें तो हमारी कोई भी दवा होमियोपथी सिद्धान्त के आधार पर, सुगर-आफ-मिल्क में मिलाकर खरल कर अधिक ताकतवर बनायी जा सकती हैं।

एक एलोपथिक डाक्टर ने, जिसको होमियोपेथि का ज्ञान था, हमें लिखा है कि उसने हमारा **अल्बो-संग व मेडी-टैब ३X** पोटेन्स में बनाकर प्रयोग करने पर ज्यादा प्रभावशाली पाया।

स्वेदन विधि (Fomentation) पर दो शब्द

स्वेदन कर्म वैसे तो पुरानी विधि है लेकिन इसके प्रभाव के बारे में दो राय नहीं हैं और कभी कभी जटिल व गम्भीर अवस्थाओं में हमारी ओषधियों द्वारा इलाज करते समय इसका प्रयोग आश्चर्यजनक परिणाम दिखाता है।

सूखी या गीली सिकाई की अपेक्षा भीगी हल्की नम सिकाई ज्यादा प्रभावशाली होती है। प्रयोग विधि निम्नलिखित है:-

एक ईंट के टुकड़े को आग में गर्म करें।

पानी निचोड़कर गीले नम कपड़े में टुकड़े को लपेटें।

फिर इस समूचे को सूखे पर्त किये हुये कपड़े में लपेटें।

इससे अंग पर सिकाई करें।

कपड़े की एक एक पर्त गर्मी के हलके होने के साथ साथ हटाते जायें।

यह प्रयोग विधि पेट के व माँसल अंगों के दर्द या पुरानी खांसी में लाभदायक है। गठिया वगैरह में गीले कपड़े में गर्म ईंट लपेटने के पहले नमक छिड़के या नमक के घोल में गीलाकर लपेटें।

बाह्य चिकित्सा के लिये डिशेन की मरहम वाली औषधियां

अधिकांश रोगों में बाहरी उपचार अन्दरूनी उपचार में सहायता प्रदान करता है। हालांकि जड़से छुटकारा पाने के लिये उपचार अन्दर से होना चाहिये, न कि बाहर से। लेकिन कभी कभी बाहरी उपचार तीव्र दर्द में, आकस्मिक सूजन में, गले या कान में जलन आदि में तत्काल आराम पहुंचाता है। सामान्यतया बाहरी साधनों का उपयोग आन्तरिक चिकित्सा के साथ साथ करना चाहिये ताकि रोगी को पूरा लाभ हो।

हर्बोसल्फ या **हीलिंग डस्ट** का मरहम बनाने के लिये एक हिस्सा पाउडर पाँच भाग तेल या वैसलीन में मिलाना चाहिये। या फिर सर्वोत्तम परिणामों के लिये तेल या वैसलीन की जगह **रिपेन्टो** (Ripanto) मलहम में बनाइये। जैसे जैसे फायदा हो मलहम की ताकत कम करते जायें। ऐसा करने के लिये तेल या वैसलीन या **रिपेन्टो** 10 हिस्सा तक लें।

हमारे **रुबजान** (Rubzon) और **चेसाल** (Chesol) अंगों की पीड़ा कम करने में सर्वोत्तम हैं। छाती में फेफड़े में बलगम ढीलाकर निकालने के लिये, गले में खारिश व टॉसिल बढ़ जाने में बाहरी मालिश करें। इसी प्रकार गठिया व वात-दर्द में जोड़ों में मालिश करें (आंख से बचाकर प्रयोग करें)।

डिशेन के इंजेक्शन हानिरहित व तुरन्त प्रभावकारी हैं।

डिशेन के इंजेक्शन के रूप में प्राप्त औषधियों को त्वचा या मांस के माध्यम से देने पर आश्चर्यजनक परिणाम निकलते हैं। ये हानिरहित व वेदनारहित हैं। शुरु में ये इंजेक्शन 24 घन्टे में एक बार देने चाहिए और जैसे जैसे फायदा हो, यह अवधि बढ़ा देनी चाहिए। ज्यादा जानकारी के लिए औषधियों के विशिष्ट विवरण के अन्तर्गत देखें।

डिशेन की हर्बोमिनरल औषधियाँ साधारण व जटिल दोनों रोगों में तुरन्त प्रभाव दिखलाती है। एक बार सही दवा निर्धारित करने के बाद उसकी एक खुराक ही रोगी की हालत में सुधार लाने व प्रकृति को उसे पूर्ण स्वस्थ करने में सहायक होती है। ये दवायें बतायी गयी खुराकों में बिल्कुल हानि रहित हैं।

दवाओं के मूल्य जहाँ तक इस महंगाई के युग में सम्भव हो सका है, कम से कम रखे गए हैं ताकि पिछले 90 वर्षों से भारत की निर्धन जनता की सेवा के निमित्त लिया गया व्रत पूरा हो सके।

अगर-को (AGAR-CO)

उत्तेजित स्नायु मंडल को शान्त कर मिर्गी, हिस्टीरिया व शिशुओं में ऐंठन से होने वाले दौरों के लिए।

विवरण

यह अगेरिकस, एथ्यूसा और लिलियम से बना रसायन योग है। अगेरिकस सूक्ष्म मात्राओं में, स्नायु मंडल की उत्तेजना को शान्त करता है और इससे आँतों में होने वाली ऐंठन कम हो जाती है। इस प्रकार शिशुओं में अपचन की ऐंठन (जिससे वे बार बार फटे हुए दही की उल्टी करते हैं) के तथा हिस्टीरिया के दौरों में राहत मिलती है। लिलियम स्त्रीयों के कमर के हिस्से के अंगों पर तेज प्रभाव डालता है जिससे गर्भाशय तथा अंडाशय में होनेवाली क्रियाओं (Pathological changes) के कारण उत्पन्न मिर्गी के दौर (Hysteria) समाप्त हो जाते हैं। एथ्यूसा घबराहट, चिड़चिड़ापन व सिरदर्द में लाभकारी है।

उपयोग

इन सबके मिश्रित फल से इसे, शिशुओं में अपचन ऐंठन के दौरों में तथा स्त्रीयों में खास कर, वैसे पुरुषों में भी, हिस्टीरिया, मिर्गी व स्नायु मंडल में तनाव के कारण होने वाली घबराहट व सिरदर्द में, प्रयुक्त किया जा सकता है। अधिक लाभ के लिए दिन में **विटसाँन** (Vitesson) व रात में **अगर-को** (Agar-Co) देना चाहिये।

मात्रा

शिशुओं व बालकों के लिए 1/4 टिकिया पीस कर दूध या शहद में दिन में 3 या 4 बार।

वयस्कों के लिए 1/2 टिकिया दिन में 3 बार खाने से आधा घण्टा पहले।

अहित प्रभाव कुछ नहीं।

पैकिंग

50 टिकियाओं की बोतल में उपलब्ध।

अल्बोकाल (ALBOCAL TABLETS)

एक उत्तम कैल्सियम परिपूरक मैग्नीशियम, जिंक तथा वाईटामिन डी3 सहित।

विवरण

यह मैग्नीशियम, जिंक तथा वाईटामिन डी3 सहित शुद्ध कैल्सियम कार्बोनेट है। नाड़ी संस्थान, हृदय तथा मांस पेशियों के सामान्य कर्म उचित रूप से चलते रहने के लिए कैल्सियम बहुत आवश्यक है। गर्भवती स्त्रियों द्वारा कैल्सियम और मैग्नीशियम का पर्याप्त मात्रा में नियमित सेवन नवजात शिशुओं की अस्थियों में घनत्व को बढ़ता है तथा गर्भावस्था में स्वतचाप की वृद्धि की संभावना को कम करता है।

उपयोग

गर्भावस्था, स्तन्यपानावस्था, अस्थिविकार, आर्तवनाश और बढ़ते बच्चों में इसका प्रयोग बहुत लाभकारी है।

मात्रा 1 टिकिया दिन में 2 बार।

अहित प्रभाव कुछ नहीं।

पैकिंग 10 टैबलेट की एक स्ट्रिप, ऐसी 3 स्ट्रिप के एक पैक में उपलब्ध।

अल्बो-सांग (ALBO-SANG)

पाउडर व टिकियाओं में उपलब्ध - टानिक।

विवरण

सदियों से आयुर्वेद में प्रयोग होने वाली जड़ी बूटियों एवं अन्य खनिज लवणों से बना रसायन योग है। इसे, साधारण भोजन के कारण शरीर में आवश्यक तत्वों की कमी को पूरा करने के लिए प्रयोग करने की

सिफारिश की जाती है। यह शरीर के कोषों को आवश्यक तत्व प्रदान करता है जिससे शरीर की चयापचय जीवनी क्रिया (Metabolism) तेज हो जाती है। खासकर यह कमजोर पाचन शक्ति वाले रोगियों के लिए लाभकारी है। इस प्रकार **अल्बो-सांग** वैज्ञानिक रीति से तैयार किया हुआ ऐसा पौष्टिक योग है जिसे हर उम्र व हर मौसम में शारीरिक दुर्बलता के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

उपयोग

इसके नित्य सेवन से दुर्बलता दूर होकर शरीर में नव जीवन का संचार होने लगाता है जिसे रोगी तुरन्त महसूस करता है।

निर्धनों को ठीक भोजन नहीं प्राप्त होने पाता जबकि धनी वर्ग कमजोर पाचन शक्ति होने से अपने भरपूर भोजन को पचा नहीं पाता। इस प्रकार उचित पोषण की समस्या दोनों वर्गों में है, जिससे शरीर को आवश्यक तत्व नहीं मिल पाते हैं। **अल्बो-साँग** इसी कमी को पूरा करता है, दैनिक आहार के साथ **अल्बो-साँग** का प्रयोग भोजन के गुणों की पूर्ति कर देता है। आयुर्वेद में अनेक जड़ी बूटियाँ-**अश्वगन्धा** आदि बुढ़ापे की कमजोरी, पुरुषों में पौरुष शक्ति का अभाव, मस्तिष्क व मांसपोशियो की थकान, स्त्रियों में स्तन दुग्ध की कमी को दूर करने के लिए प्रसिद्ध हैं।

इससे **अल्बो-साँग** एक उत्तम बलवर्धक खनिज द्रव्यों से भरपूर टानिक बन गया है जिससे लम्बी बीमारी के कारण दुर्बल रोगियों में, या अधिक परिश्रम के कारण शारीरिक व मानसिक रूप से थके लोगों को देने की विशेष रूप से सलाह दी जाती है।

उपयोग

कमजोर पाचन शक्ति वाले रोगियों के लिए। शारीरिक व मानसिक शक्ति के ह्रास में, पौरुष शक्ति की कमी में, स्मरण शक्ति की कमी में और रोग या श्रम के कारण समय से पहले वृद्धावस्था के लक्षणों में।

शिशुओं के पोषण में

जिन शिशुओं को माँ का दूध नहीं मिलने पाता या जिनको बोतल के दूध पर रखा जाता है उनके समुचित पोषण के लिए इसे ताजे गाय के दूध में दिया जा सकता है। यह उनकी पाचन क्रिया को ठीक करके पेट की क्रियाओं को सुव्यवस्थित करता है। जिससे उनका सामान्य स्वास्थ्य ठीक रहता है और उनके वजन में वृद्धि होती है।

बढ़ते हुये बच्चों के लिये

बढ़ती उम्र की खनिज लवणों की आवश्यकताओं को पूरा कर उनकी भूख बढ़ाता है। इस प्रकार शारीरिक व मानसिक शक्ति का विकास कर उनका वजन बढ़ाता है।

स्तनपान माताओं के लिये

गर्भवस्था व माँ बनने के बाद स्तनपान के दौरान बढ़ती हुई कैल्सियम, फास्फोरस व खनिज लवणों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। स्तनपान कराने वाली माँ के दुग्ध में पोषक तत्व बढ़ाता है।

मानसिक काम करने वालों के लिये

अत्याधिक श्रम व तनाव के कारण होने वाली शारीरिक व मानसिक शक्ति की कमी को पूरा करता है।

बड़े बूढ़ों के लिये

वृद्धावस्था में स्वास्थ्य बनाये रखता है।

बीमारी व बाद की दुर्बलता में

रोगी की भूख तथा उसके शरीर की पाचन एवं रोग निरोधक शक्ति को बढ़ाकर उसे सामान्य अवस्था में शीघ्र ले आता है।

रक्त की कमी में

रक्त की कमी के इलाज में एक सहायक टानिक के रूप में भूख बढ़ाकर शारीरिक दुर्बलता दूर करता है।

मात्रा व सेवन विधि

अल्बो-सांग पाउडर शिशुओं और बच्चों के लिये अधिक उपयोगी है जबकि वयस्क टिकिया के रूप में पसन्द करते हैं।

इसे चाय, काफी, दूध, दही, कस्टर्ड, फ्रूट क्रीम, फलों के रस या किसी तरल पदार्थ या पानी में घोलकर लिया जा सकता है।

नोट-मधुमेह से पीड़ित और वजन घटने वाले व्यक्ति, शक्कर रहित टिकिया ही सेवन करें।

- | | |
|-------------------------------|---|
| शिशुओं के लिये मात्रा | - चौथाई चम्मच दिन में 2 बार। |
| बच्चों के लिये मात्रा | - आधा चम्मच दिन में 2 बार। |
| वयस्कों के लिये मात्रा | - 1 चाय का चम्मच पाउडर या 2 टिकियाँ दिन में 2 बार खाना खाने के बाद। |
| आहित प्रभाव | - कुछ नहीं। |
| पैकिंग-पाउडर | - 200 ग्राम तथा 400 ग्राम के टिन में उपलब्ध। |
| टिकियाँ | - 300 टिकियाओं की बोतल में तथा 10 टिकियाओं के 50 ब्लिस्टर स्ट्रिप पैक में उपलब्ध। |

अल्बो विट पाउडर (ALBOVIT POWDER)

स्त्रियों के लिये एक उत्तम टानिक।

विवरण

स्त्रियों के स्वास्थ्य की सम्पूर्ण सुरक्षा हेतु एक महत्वपूर्ण परिपूरक टानिक के रूप में **अल्बो विट पाउडर** को प्रस्तुत करते हुए हमको अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। स्त्रियों के लिए गर्भावस्था में तथा सूतिका काल में नियमित सेवन योग्य टानिक एवं दुग्ध उत्पन्न करने वाली औषधि के रूप में यह अपने ढंग का एक प्रथम व विशेष प्रकार का योग है। इसके इस कार्य में इसके घट्टर द्रव्य - **शतावरी (Asparagus) सूखे फल (Dry Fruits) व केसर (Saffron)** सहायता प्रदान करते हैं। **शतावरी** के सेवन से दूध का स्राव प्रचुर मात्रा में होता है, स्तन ग्रन्थियों को पोषण प्राप्त होता है, गर्भपात नहीं होने पाता, पाचन क्रिया में सुधार आता है और यह शरीर में रसायन का कार्य करती है।

अल्बो विट पाउडर में **प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट** तथा **कैल्सियम** भी उचित अनुपात में होने की वजह से इसके सेवन से शरीर में तुरन्त ही शक्ति एवं ऊर्जा का संचार होने लगता है। यह आर्तवनाश तथा मानसिक तनाव में भी अत्यन्त उपयोगी है। यह पूर्णरूप से एक हर्बल योग है।

उपयोग

यह योग दूध उत्पन्न करता है अतः स्तान्यपान काल में उपयोगी है। स्त्रियों के लिए प्रोटीन परिपूरक के रूप में उत्तम टानिक है। मानसिक तनाव, आर्तवनाश एवं गर्भावस्था में अत्यन्त उपयोगी है।

मात्रा

2 या 3 चाय के चम्मच (10 से 15 ग्राम) **अल्बोविट पाउडर** को एक प्याली दूध या पानी में गोलकर दिन में दो बार सुबह व शाम खाना

खाने के बाद लेना चाहिये।

आहित प्रभाव - कुछ नहीं।

पैकिंग - 200 ग्राम के टिन में उपलब्ध है।

अमिग्लीया (AMYGLIA)

दर्द निवारक।

विवरण

हृदय की धमनी में तनाव व उसके कारण दिल के भाग में दर्द (Angina pectoris) के लिए। तथा बड़े हुए रक्त चाप (High blood pressure) व उसके कारण होने वाले सिर दर्द में फौरन आराम के लिए इसे प्रयोग में लाया जा सकता है।

जब सिर दर्द में **विटसान** से आराम न मिले तो इसे देना चाहिए। यह सिर में फैली रक्त वाहिनियों को फैलाकर सिर दर्द में तत्काल फायदा करती है। इसीलिये इसे आधा शीशी के दर्द (Migraine) में भी दिया जा सकता है। साथ ही दर्द के साथ मासिक धर्म (Dysmenorrhoea), श्वास (Asthma), काली खांसी (Whooping Cough) व शिशुओं में ऐठन के दौर पर पड़ने पर सहायक औषधि के रूप में इसे इस्तेमाल किया जा सकता है।

मिर्गि के दौर आते वक्त इसे पीसकर जीभ के नीचे दबा देने से दौरा रुक जाने में सहायता मिलती है।

मात्रा - 1/2 टिकिया दिन में 3 बार, 1/2 घंटा खाने से पहले खाली पेट।

आहित प्रभाव - कुछ नहीं।

पैकिंग - 50 टिकियाओं की बोतल में उपलब्ध।

आराटिन्म (AURATINUM)

स्त्रियों के जननांगों के विकारों के लिये।

विवरण

आराम, पल्सेटिल्ला व थूजा से बना यह योग स्त्रियों के अंडाशय एवं गर्भाशय सम्बन्धी विकारों में उपयोगी है। **आराम मुरियाटिकम** स्त्रियों के कमर के भाग के अंगों में बहुपयोगी है। यह बड़े हुए रक्तचाप को भी कम करता है।

पल्सेटिल्ला विशेष रूप से अस्थायी चित्त के रोगियों के लिए उपयोगी है। इसे मासिक धर्म की अनियमितताओं में तथा स्नायु दर्द में विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है। **थूजा** खासकर प्रदर की शिकायतों में तथा कम स्त्राव वाली मासिक धर्म की परेशानियों व अंडशाय व डिम्ब वाले अंगों की पीड़ा में एक विशेष दवा है।

इन तीनों दवाओं के संयुक्त प्रभाव के कारण इसका उपयोग स्त्रियों के विभिन्न गर्भशय सम्बन्धी रोग जैसे मासिक धर्म का बन्द हो जाना (Amenorrhoea) समय से आगे पीछे होना या कष्ट के साथ होने (Dysmenorrhoea) इत्यादि विकारों में किया जाता है। यह अंडाशय की सूजन को कम कर मासिक धर्म को स्वाभाविक रूप में ले आता है और नियमित कर देता है।

गर्भवती स्त्रियों में प्रसव के समय यदि पीड़ा न हो तो इसे निश्चित खुराकों में देने से प्रसव आसानी से हो जाता है। प्रथम प्रसव में छठे मास से नियमित देने से प्रसव के समय किसी प्रकार की जटिल समस्यायें नहीं होने पातीं इस प्रकार **आराटिन्म** द्वारा घबराहट प्रकृति वाली स्त्रियों में प्रसव स्वाभाविक रूप से होने में सहायता मिलती है।

इसके अतिरिक्त इसकी सिफारिश पुरुषों के अण्डकोषों (testicles) की वेदना व सूजन, रक्त चाप के बढ़ जाने पर उसे स्वाभाविक रूप में लाने

के लिए भी की जाती है। **अमिग्लीया** के साथ इसे देने से रक्त चाप के रोगी की उत्तेजना व बेचैनी में तत्काल लाभ होता है और सिर में चक्कर आना समाप्त हो जाता है।

मात्रा - 1 से 2 टिकियां दिन में 3 बार खाना खाने के आधे घण्टे पूर्व तथा सोते समय।

आहित प्रभाव - कुछ नहीं।

पैकिंग - 50 टिकियाओं की बोतल में उपलब्ध।

बायो-साल (BIO-SAL)

शिशुओं व बच्चों की व्याधियों के लिए।

विवरण

शिशुओं व छोटे बच्चों के दांत निकलते समय तथा पाचन सम्बन्धी विकारों में भरोसेमन्द उपचार।

उपयोग

बच्चों में भूख की कमी होना, अम्ल पित्त का बढ़ आना, पेट में दर्द, पाचन विकार, अफारा, पतले दस्त व बदहजमी में इसका प्रयोग किया जाता है।

बच्चों के दांत निकलते समय होने वाले विकारों जैसे अफारा, हरे हरे दस्त, बेजैनी, ऐंठन, दूध का फटे दही के रूप में उलट देना तथा पाचन सम्बन्धी विकारों में यह उनको तत्काल राहत पहुंचाता है तथा शारीरिक क्रियाओं को नियमित करता है।

बच्चों में 5 वर्ष की अवस्था तक नियमित रूप से सुबह शाम देने से उनकी भूख बढ़ती है, खाना पच जाता है तथा पतले दस्त नहीं होने पाते।

इसके अलावा बच्चों को बीमारी में व बाद की दुर्बलता की अवस्था में सहायक औषधि के रूप में देने से उन्हें खुलकर भूख लगती है और कब्ज नहीं रहने पाता।

मात्रा

नवजात शिशुओं के लिये - 1/4 चम्मच दिन में 2 बार।

1 से 6 माह के बच्चों के लिये - 1/2 चम्मच दिन में 2 बार।

6 माह से 1 वर्ष के बच्चों के लिये - 1 चम्मच दिन में 2 बार।

2 वर्ष के बच्चों के लिये - 1 से 2 चम्मच दिन में 2 बार।

आहित प्रभाव - कुछ नहीं।

पैकिंग - 100 मि.ली. की बोतल में उपलब्ध।

ब्रह्मडाइन (BRAHAMDINE)

गर्भाशय सम्बन्धी विकारों के लिये।

विवरण

गर्भाशय के विकारों के लिये सदियों से आयुर्वेद में प्रसिद्ध जड़ी बूटियों का यह सम्मिश्रण है। स्त्रियों के गर्भाशय के सभी विकारों में सामान्य रूप से रक्त व श्वेत प्रदर में विशेष रूप से इसका प्रयोग किया जा सकता है।

लोध-गर्भाशय की कोशिकाओं और तन्तुओं के तनाव को कम करके आराम देता है। मासिकधर्म में कठिनाई, अतिरजःस्राव एवं प्रदर की व्याधियों में रक्तस्राव रोधक औषधि एवं बलवर्धक के रूप में कार्य करता है। मासिकधर्म को सामान्य और नियमित करता है।

अशोक एक ऐसी रक्त स्राव रोधक औषधि है जो गर्भशय रोगजन्य बेचैनी को दूर करती है, मासिकधर्म को नियमित करती है, प्रदर और अनियमित मासिक धर्म की व्याधियों में प्रभावशाली है।

असगन्ध, बालतगर और स्वर्णक्षिरी बेचैनी दूर कर आराम प्रदान करते हैं। **असगन्ध** सामान्य कमजोरी में भी उपयोगी है। **बालतगर** बहुमूल्य-नाड़ी शक्तिवर्धक और ऐंठन को कम करने वाला है। **स्वर्णक्षिरी** के मिलाने से इसका असर और बढ़ जाता है।

शतवारी स्त्री के बाँझपन का इलाज करती है। स्त्री के जननेन्द्रियों की अनियमितताओं को दूर करती है। **विबुनम** का गर्भाशय की विभिन्न बीमारियों एवं कष्टार्तव में उपयोग किया जाता है। **उलटकम्बल** कई प्रकार के कष्टार्तव में उपयोगी है। **जेठीमध** सभी प्रकार के प्रदर की बीमारियों तथा गर्भाशय की अनियमितताओं में उपयोगी है।

उपयोग

उपरोक्त जड़ी बूटियों के सम्मिश्रित प्रभाव के कारण इसका प्रयोग सफेद व रक्त प्रदर के इलाज में तथा गर्भाशय सम्बन्धी विकारों में किया जा सकता है। यदि मासिक धर्म में अधिक रक्त स्राव होता हो तो इसे **चिनियमको** कि टिकिया के साथ दिया जाना चाहिए।

मात्रा - 1 से 2 टिकिया सुबह शाम।

आहित प्रभाव - कुछ नहीं।

पैकिंग - 10 टिकियाओं के 50 ब्लिस्टर स्ट्रिप पैक में उपलब्ध।

चेसोल (CHESOL)

बाह्य उपयोग के लिए - सूजन तथा दर्द निवारक तेल।

विवरण

इस तेल की उष्ण प्रदत्त (Exothermic) तेल के रूप में, सर्दी से फेफड़ों में जमे बलगम को ढीला कर निकालने में, तथा मांस पेशियों व जोड़ों के दर्द में सूजन तथा दर्द कम करने के लिए हलके हाथ से मालिश बहुत उपयोगी है। सर्दी के दिनों में बचाव के लिये छाती व पसलियों पर रात को हलकी मालिश करने से सर्दी नहीं लगने पाती।

मांस पेशियों के कृश हो जाने पर उनमें संचार व उत्तेजना लाने के लिए भी इसकी मालिश बहुत उपयोगी है।

गुमची - सूजन एवं दर्दों में उपयोगी है।

बच - पुरानी गठिया और उत्तेजना में लाभकारी है।

सोंठ - स्थानीय उत्तेजना उत्पन्न करने में उपयोगी है।

जमालगोट्टा - कास, गठिया, जोड़ों और शरीर के अन्य अंगों के दर्दों में उपयोगी है।

अजवायन - सूजन में उपयोगी है।

लाल मिर्च - शक्तिशाली उत्तेजक, प्रदाह कर और त्वचा को लाल करती है।

एलवा - सूजन युक्त दर्दों और नासुर की बीमारी के लिए उत्तम है।

लौंग का तेल - स्थानीय प्रदाह कारक एवं त्वचा पर लालीमा कारक।

नोट - त्वचा के नाजुक स्थानों पर लगाने तिल्ली के तेल में मिला कर हल्का करलें। आँख, नासिका द्वारों तथा ओठों पर न लगावें।

आहित प्रभाव - कुछ नहीं।

पैकिंग - 50 एवं 100 मिली लीटर की बोतल में उपलब्ध।

चिनियमको (CHINIUMCO)

रक्त स्राव को बन्द करने के लिए।

विवरण

दालचीनी - वातानुलोमक होने के अतिरिक्त कषाय रस वाली और भूख बढ़ाने वाली एक उत्तम औषधि है। गर्भाशय की मांसपेशियों को उत्तेजना देने वाली है। अतः गर्भाशय दोष के कारण उसका आकुञ्चन प्रसारण बराबर न हो रहा हो, प्रसव में समय अधिक लग रहा हो तो इसका उपयोग किया जाता है।

मेनफल – यह एक रेचक और प्रसावक तिक्त टॉनिक है।

हृदपत्री और रेवन्दचिनी उत्तम रक्तरोधक औषधियां हैं।

फिटकरी – यह रक्त रोधक है जो बावासीरी के रक्तस्त्राव एवं प्रदर की बीमारी में उपयोगी है।

कुटकी – यह रेचक और स्त्रियों के मासिकधर्म में रुकावट को दूर कर मासिक धर्म लाने वाली उत्तम औषधी है।

उपयोग

शरीर से रक्त स्त्राव को रोकने लिए चाहे स्त्राव नाक, मुख या पेचिश द्वारा हो रहा हो या बवासीरी या मासिक धर्म या गर्भाशय द्वारा हो रहा हो, स्त्रियों के गर्भाशय तथा कमर के हिस्से में स्थित जननांगों में दर्द की शिकायत हो तो इसका प्रयोग करें।

मात्रा – बच्चों के लिए – 1/4 से 1/2 टिकिया वयस्कों के लिए 1 से 2 टिकिया, दिन में 3 बार।

आहित प्रभाव – कुछ नहीं।

पैकिंग – 10 टिकियाओं के 50 ब्लिस्टर स्ट्रिप पैक में उपलब्ध।

डान्जिन (DANGINE)

काली खांसी के लिये।

विवरण

फिटकरी – यह एक ऐसी औषधी है जो ऐंठन को रोकती है, रोगानुरोधक और श्वसन-प्रणाली की पीड़ा को दूर करती है। **वसाका** एक प्रसिद्ध कफ बाहर निकालने वाली तथा पुरानी श्वासनली में होने वाली सूजन में उपयोगी औषधि है। यह कफ को पतला कर देती है। **नल** यह एक ऐंठन को रोकने वाली, कफ को बाहर निकालने वाली तथा व्याधी के

दौरे के समय श्वासनली की सूजन को घटाने में उत्तम औषधि है। **दूधी** खांसी का शमन करती है और विशेषकर छोटे शिशुओं के लिए प्रभावकारी है। **हुमा** दमा के दौरों की पीड़ा को नियंत्रित करती है। **जेठिमध** श्वास नालिका की उत्तेजना एवं शोथ में यह औषधि हल्के कफ निस्सारक के तौर पर और आराम के लिए उपयोगी है। **असगंध** नाड़ी मंडल पर शामक प्रभाव वाली, कषाय एवं बल प्रदान करने वाली औषधि है। **छोटाचान्द और बालतगर** मस्तिष्क पर सौम्य प्रभाव के लिए उपयोगी है।

उपयोग

हठीली खांसी खासकर काली खांसी में उपयोगी है।

मात्रा

शिशुओं के लिये चौथाई से आधी टिकिया पीसकर शहद या माँ के दूध में घोलकर 4-4 घन्टे से दें। बच्चों को आधी से 1 टिकिया शहद में दें। ज्यादा गम्भीर दशा में प्रत्येक 2 घन्टे में खुराकें दी जा सकती हैं।

खांसी में बच्चों की प्रतिरोधक शक्ति कम हो जाती है इसलिये **अल्बो सांग** दिन में 2 बार दूध के साथ देने से इलाज में मदद मिलती है।

आहित प्रभाव – कुछ नहीं।

पैकिंग – 10 टिकियाओं के 50 ब्लिस्टर स्ट्रिप पैक में उपलब्ध।

डेसिल (DECIL)

दर्द व ज्वर नाशक।

विवरण

एस्पिन, पैरासिटामाल व कैफीन से बने इस योग को सभी प्रकार के दर्द जैसे सर दर्द, दांत दर्द, बदन दर्द, बुखार, मांसपोशियों व जोड़ों के

दर्द में तथा मासिक धर्म के दर्द के लिये दिया जा सकता है। तीव्र ज्वर की दशा में और प्रतिशयाय में भी इसे प्रयोग करें।

एस्पिरिन मानी हुई दर्द नाशक एवं बुखार को कम करने की दवा है। यह मांस पेशियों के दर्द में विशेष उपयोगी है। **पैरासिटामाल** अब बुखार को कम करने के लिए एक विश्वसनीय दवा के रूप में प्रसिद्ध है। **कैफिन** केन्द्रिय स्नायु मंडल के तनाव को कम कर रोगी की बेचैनी समाप्त करता है और नींद लाता है।

मात्रा - बड़ों के लिए - 1 से 2 टिकिया प्रत्येक 4 घण्टे पर।

बच्चों के लिए - 1/2 से 1 टिकिया प्रत्येक 4 घण्टे पर।

शिशुओं के लिए - 1/4 से 1/2 टिकिया प्रत्येक 4 घण्टे पर।

चेतावनी - 12 वर्ष से कम आयु के बच्चों में चिकित्सक के परामर्श के बिना इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिये और इसे खाली पेट नहीं लिया जाना चाहिये।

पैकिंग - 10 टिकियां स्ट्रिप में तथा 500 टिकियाओं के पैक में उपलब्ध है।

डेस्मा (DESMA)

श्वास रोग के लिए।

विवरण

आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों से बने इस योग को वयस्कों में तीव्र कास तथा श्वास रोग के लिये प्रयुक्त किया जा सकता है।

हुमा - श्वासनली की मांस पेशियों की सूजन में आराम पहुंचाती है और श्वास रोग के दौरों के रोकथाम के लिए उपयोगी

है। इसका असर इसके क्षार-तत्त्व एवं एफड्रीन के कारण है।

वसाका - एक प्रसिद्ध कफ-निस्सारक औषधि है, जो श्वास नली की पीड़ा को दूर करने में उपयोगी है। यह कफ को भी पतला बनाती है।

नल - यह औषधि मांसपेशियों की ऐंठन को दूर करती है। कफ निस्सारक विशेषकर दौरों के समय श्वास नली की पीड़ा को कम करती है।

दुधी - जड़ से खांसी का शमन करती है श्वास नली की सूजन में आराम पहुंचाती है। विशेषकर शिशुओं की खांसी में प्रभाव कारी है।

सेनेगा - विख्यात कफ निस्सारक है और विशेषकर खांसी की जड़ को प्रेरित करता है। ताकि पूरा बलगम बाहर निकल जाए।

बालतगर - ऐंठनरोधी, उत्तेजक एवं निद्राकर है।

काकड़ासिंगी - खांसी, राजयक्ष्मा श्वास एवं श्वसन की तकलीफ की हालत में उपयोगी है।

कंटकारी - कास और श्वास में उपयोगी है।

उपयोग - दमे के दौरों को रोकने के लिये, दमा के इलाज में तुरन्त राहत के लिये, सर्दी, जुकाम श्वास संस्थान में बलगम जम जाने से खांसी के इलाज में उपयोगी।

मात्रा - बच्चों को 1/2 से 1 टिकिया दिन में 4 बार दें। वयस्कों के लिये 1 से 2 टिकिया पानी से दिन में 3 या 4 बार।

आहित प्रभाव - कुछ नहीं।

पैकिंग - 10 टिकिया की 50 ब्लिस्टर स्ट्रिप पैक में उपलब्ध।

डयासिन (DIASYN)

पतले दस्त, आंव व पेचिश के लिये टिकिया और सीरप में उपलब्ध।

विवरण

कुर्ची और बेल - दस्त और पेचिश की बीमारी के इलाज के लिए यह विख्यात औषधियां हैं।

दारहल्द - जीवाणु अतिसार, बेसिलरी प्रवाहिका एवं अमाशयिक व आन्त शोथ में, अभी हाल में खोज की गई प्रभावी औषधि है। ट्रोफोझाईट तथा इन्टामिबा हिस्टोलिटिका इन दोनों के विरुद्ध भी यह प्रभावकारी औषधि है ऐसा विश्वास है।

धाय - पेचिश, अतिसार एवं आंत की शिकायतों में इसका उपयोग किया जाता है।

अल्सटोनिया - पुरानी पेचिश एवं अतिसार में इसका उपयोग किया जाता है।

जीरा - पाचक है।

अजवायन - अतिसार एवं ऐंठन के लिए एवं आंत की शिकायतों में इसका उपयोग किया जाता है।

बालहरडे - पेचिश व अतिसार में इस औषधि का उपयोग किया जाता है।

उपयोग - आंव तथा खूनी पेचिश (Amoebic & Bacillary Dysentery), पतले दस्त (Diarrhoea), आंतों में शोथ आदि में इसे दें।

मात्रा - बड़ों को 1 से 2 टिकिया प्रत्येक 4 घंटे पर, बच्चों को 1/2 से 1 टिकिया प्रत्येक 4 घंटे पर।

सीरप - 1/2 चाय का चम्मचा दिन में 3 बार - 5 सप्ताह से 6 मास के छोटे बच्चों को, 1/2 चाय का चम्मच प्रत्येक 6 घंटे पर 6 मास से 6 वर्ष के बच्चों को और 1 चाय का चम्मच दिन में 3 बार 6 वर्ष की आयु से ऊपर वाले बच्चों को।

आहित प्रभाव - कुछ नहीं।

पैकिंग - 10x10 टिकिया स्ट्रिप में तथा ऐसी 50 ब्लिस्टर स्ट्रिप एक पेक में उपलब्ध, तथा 300 टिकिया बोटल में, 60 मि.ली. सीरप बोटल में उपलब्ध।

एन्ट्रोप्स (ENTROPS)

कान, नाक व गले के इलाज में बाह्य प्रयोग के लिये।

विवरण

कीटाणुनाशक, दर्दनाशक तथा सूजन को कम करने वाली औषधियों (Phenol, Camphor & Eucalyptus) के इस योग को मुख, गले, नाक व कान में एक बहुपयोगी लोशन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

पायोरिया व मसूड़ों की सूजन व दर्द में प्रातः मँजन करने से पहले और रात में सोते समय इसे लगायें। दस मिनट तक कुल्ला न करें। पायोरिया की शुरुआत में रोग समाप्त हो जायेगा। गम्भीर दशा में पायोरिया फैलने से रुक जायेगा और मसूड़ों का पिच पिचापन, सूजन तथा खून व मवाद का आना रुक जायेगा। दांतों के दर्द के कारण मुख की सूजन में बाह्य प्रयोग करें।

गले में टांसिल व श्वास द्वार तथा कंठग्रंथि की सूजन में इसे रूई के फाये से अन्दर लगावें।

नाक में बदगोशत (Nasal Polypus) या नासिका के अन्दर हड्डियों के बढ़ जाने पर (Enlargement of Adenoids) या श्लेषात्मक झिल्ली की सूजन के कारण (Sinusitis) नाक बन्द हो जाने पर इसे ड्रापर से 4 बूँद दिन में 3 बार डाला जा सकता है।

उभरते हुये फोड़े में इसके भीगे रुई के फाये को रखने से फोड़ा या तो बैठ जायेगा या फूट कर बह जायेगा।

सावधानी – इसे आंखों में प्रयोग न करें। इसमें पानी या तेल न मिलायें। इसे ठन्डी जगह में रखे व इस्तेमाल करने से पूर्व प्रत्येक बार शीशी को अच्छी तरह से हिलायें।

पैकिंग – 50 मि.ली. की बोतल तथा 100 मि.ली. की बोतल में उपलब्ध।

फेरिमिन्ट्स (FERIMINETS)

कार्बोनिल आइरन, वाईटामिन, जिंक तथा सेलिनियम कैप्सूल।

विवरण

सूक्ष्म पुष्टिकारक के रूप में सामूहिक तौर पर निर्दिष्ट वाईटामिन तथा खनिज गर्भवती स्त्रियों तथा गर्भवस्थ बालक के स्वास्थ्य पर उत्तम प्रभाव डालते हैं। आइरन के साथ जिंक को मिलाने से यह हीमोग्लोबिन को बढ़ाता है क्योंकि रक्त के लाल कणों की उत्पत्ति की प्रक्रिया को नियमित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले इन्सूलिन जैसे वृद्धि कारक तत्व (IGF)¹ पर जिंक अपना प्रभाव डालता है।

उपयोग

आइरन की कमी से उत्पन्न पाण्डु से बचाव एवं उसकी चिकित्सा के लिए तथा आइरन के परिपूरक के रूप में गर्भावस्था एवं स्तन्यपान के समय में उपयोगी है।

आहित प्रभाव

मिचली, वमन, मलबद्धता, अतिसार तथा मल कृष्णा वर्ण का होजाना।

मात्रा – 1 कैप्सूल प्रतिदिन अथवा चिकित्सक के परामर्शानुसार।

पैकिंग – 15 कैप्सूल की स्ट्रिप। ऐसी 2 स्ट्रिप के पैक में उपलब्ध।

सावधानी – चिकित्सक के परामर्शानुसार और उसकी देखरेख में लें।

फेरस फ्यूमरेट टिक्रिया (FERROUS FUMARATE I.P.)

लौह की कमी से होने वाली रक्त की कमी (Anaemia) के इलाज के लिये।

विवरण

प्रत्येक टिक्रिया में 200 मिलीग्राम फेरस फ्यूमरेट होता है जो कि 65 मिलीग्राम लौह धातु के बराबर लौह शरीर को प्रदान करता है।

जीवन की क्रियाओं में खून का हास होता रहता है जैसे स्त्रियों में मासिक धर्म होना, बवासीर या हुकवर्म हो जाना या भोजन में लौह की उचित मात्रा की कमी होने से खून में हेमोग्लोबिन का स्तर गिरने लगता है जिससे रक्त की कमी तथा दुर्बलता आ जाती है। वैसे भी शिशुओं, बढ़ते हुये बच्चों को ज्यादा लौह की आवश्यकता होती है। गर्भावस्था में भी उचित मात्रा में लौह न मिलने से शरीर में दुर्बलता, खून की कमी आ जाती है जो घातक हो सकती है। इसीलिये इसे सामान्य रूप से हर एक को भोजन के साथ दिया जा सकता है।

मात्रा – 1 से 3 टिक्रिया प्रतिदिन खाने के बाद या चिकित्सक के निर्देशानुसार लें। बच्चों को आधी से 1 टिक्रिया खाना खाने के बाद दें।

सूचना – आमाशय में घाव (Peptic Ulcer) वाले रोगी इसे न लें।

पैकिंग - 50 और 500 टिकियाओं के पैक में उपलब्ध।

गेस्ट्रोमोन (GASTROMONE)

अफारा, अजीर्ण के लिये।

विवरण

रेवन्द चीनी और बालहरडे - का उपयोग सूक्ष्म मात्रा में ग्राही, तिक्त तत्त्वों, के रूप में तथा अतिसार में किया जाता है।

सोंफ - अफारा रोग में आराम पहुंचाती है।

आंवला - आंतों की गति को नियमित रखने में उपयोगी है।

चित्रक - बदहजमी, बावसीर तथा अन्य पेट की गड़बड़ियों में उपयोगी है।

कटुकी - भूख के कम होने, अम्लीपत्त तथा पित्तदोषग्रस्त बदहजमी में उपयोगी है।

तालीस पत्र - पाचक, मलबद्धता कारक तथा आमाशय की खराबी में उपयोगी है।

पपई - बदहजमी में, अमाशय रस में कमी और आंत की जलन में उपयोगी है।

बालतगर - अमाशय की बीमारी अथवा उदरशूल में उपयोगी है।

हल्दी - सुगन्धि, पाचक तथा कृमि नाशक है।

असगंध - एक टॉनिक है

जंगली इलायची, चिरायता, धनिया, भांगरा, अजवायन, पिपली, सोंठ और जीरा - अच्छा हाजमा करने, पचन करने तथा पेट की गड़बड़ियों को दूर करने में उपयोगी हैं।

उपयोग - अग्निमान्ध, अफारा, मानसिक कारणों से अजीर्ण, यकृत विकारों में उपयोगी है। यह अपने दोनों प्रकार के प्रभाव के कारण अम्लपित्त में तथा पित्त की कमी में भी उपयोगी है।

मात्रा - बड़ो को 1 से 2 टिकियाँ खाना खाने के 15 मिनट पहले या बाद में।

- बच्चो को 1/4 से 1/2 टिकिया खाने से पहले या बाद में।

पैकिंग - 100 टिकियाओं की बोतल में उपलब्ध।

जी जी सिरप (GI GI SYRUP)

विभिन्न त्वक विकारों के लिए विशेष गुणकारी जड़ी बूटियों से तैयार की हुई एक अत्युत्तम औषधि।

घटक - प्रति 5 मि.ली. शर्बत में -

सारिवा	-	210 मि.ग्रा.
पुनर्नवा	-	150 मि.ग्रा.
हरिद्र	-	40 मि.ग्रा.
आंवला	-	20 मि.ग्रा.
बहेड़ा	-	20 मि.ग्रा.
हरड़	-	20 मि.ग्रा.
शरपुंखा	-	30 मि.ग्रा.
कालमेव	-	50 मि.ग्रा.
भांगरा	-	30 मि.ग्रा.
एलुआ	-	60 मि.ग्रा.
नीम	-	70 मि.ग्रा.

गुलबेल	-	90 मि.ग्रा.
गुलाब	-	50 मि.ग्रा.

विवरण

- सारिवा** - मधुर, स्निग्ध, वर्ण्य, रक्तविकार हर, अग्निमान्ध, ज्वर, दुर्गन्ध नाशक, शोथहर एवं यकृत के लिए बल्य है।
- पुनर्नवा** - मूत्रल है, शोथहर तथा यकृत के लिए टानिक है।
- हरिद्रा** - यह एक सामान्य घरेलु दवा होते हुए भी बहुत ही गुणकारी है। रक्त शोधक है, कण्डूघ्न और शोथहर है।
- त्रिफला** - कब्ज को दूर कर शरीरगत पानी को बाहर निकालने में उपयोगी, पाचक, उत्तम रसायन, रक्तशोधक तथा यकृत की सूजन में भी लाभकारी।
- शरपुंखा** - रक्तविकार तथा शोथ में उपयोगी है। मूत्रल एवं मल का निस्सरण करता है। यह यकृत को विषतत्त्वों से बचाता है।
- कालमेघ** - यकृत विकारों में लाभकर है, ज्वरघ्न एवं कृमिघ्न है।
- भांगरा** - यह पित्तरेचक है और प्लीहावृद्धि में गुणकारी है।
- एलुआ** - यकृत को उत्तेजित करता है और सक्रिय बनाता है। सारक है, कृमिघ्न एवं बच्चों के लिए हितकर है।
- नीम** - त्वक विकारों में बहुत ही लाभकारी, कृमिघ्न, शोथहर और वेदरा हर भी है।
- गुलबेल** - रसायन, शरीर की रोगप्रतिकार क्षमता वर्धक, यकृत के लिए बलदायक है और कटुपौष्टिक है।
- गुलाब** - पित्तशामक, वर्ण्य एवं त्वग्दोषहर है, विबन्ध में उपयोगी है और वेदना शामक है।

उपयोग - मुहासे, चकत्ते आदि त्वक विकारों में अत्यन्त गुणकारी है। रक्तशुद्ध कर सौंदर्य बढ़ाने में उपयोगी है।

मात्रा - 2 या 3 चाय के चम्मच दिन में दो बार। बच्चों में 1 चाय का चम्मच दिन में दो बार अथवा चिकित्सक के परामशानुसार।

अहित प्रभाव - कुछ नहीं।

पैकिंग - 100 मि.ली.

ग्रान्डिको (GRANDI-CO)

हृदय की शक्ति के लिये।

विवरण

अर्जुन, अश्वगन्धा, और पुनर्नवा हृदय के लिए बल्य और मूत्रल हैं।

खुरासानी अजवायन - हल्की बेचैनी को दूर करने के लिए लाभकारी तथा हृदय उत्तेजक है।

हन्यत्री - हृदय को बलवान बनाने के लिए उपयोगी है।

सोंठ - वातहर तथा उत्तेजक है।

मात्रा - 1 से 2 टिकियाँ दिन में 3 बार 1 हृदय के कारण दमे के रोगियों (Cardiac Asthma) में दिल की बढ़ी हुई धड़कन को शान्त करने के लिये 1-1 घण्टे से दे सकते हैं।

पैकिंग - 100 टिकियाओं की बोतल में उपलब्ध।

हीलिंग डस्ट (HEALING DUST)

घाव का सड़ना रोकने वाला पौडर।

विवरण

घावों तथा ब्रणों में केवल बाहरी प्रयोग के लिए उपयुक्त है।

लक्षण

हीलिंगडस्ट एक कीटाणुनाशक छिड़कने की बुकनी (पाऊडर) है। यह **एडोफार्म** (Iodoform) **फिटकिरी** (Alum) **बोरिक एसिड** (Boric Acid) तथा **हल्दी** (Turmeric) का एक मिश्रण (बुकनी) है। जब इसे घाव पर लगाते हैं तो **एडोफार्म** खुल कर अपना काम करने लगता है और घाव पर क्षोभ उत्पन्न नहीं करता अपितु उसमें फैलने वाले कीटाणुओं की उत्पत्ति को रोक देता है। घाव को साफ और सूखा रखता है तथा उसमें रिसने की प्रवृत्ति को भी रोकता है। इसके फफूंदी नाशक तथा बेक्टीरिया कीटाणु नाशक द्रव्यों के कारण कर्णम्राव में सत्वर प्रभाव पड़ता है और शीघ्र गति से आराम मिलता है। **हीलिंगडस्ट** को प्रधानता देते हुए न्यू टैलकम पाऊडरों में मिला कर भी उत्तम फल प्राप्त किया जा सकता है। इसे नाजुक त्वचा पर भी निस्संकोच प्रयोग कर सकते हैं। क्योंकि इससे कोई संतापकारी गुण पैदा नहीं होते।

प्रयोग- ब्रण, फोड़े या क्षत पर भी निरापद इसका प्रयोग किया जा सकता है। पुराने कर्ण म्राव में यदि कान से लगातार पीब निकलता हो तो रूई के फाहे (Swab) से उसे साफ करें तथा कान को **हीलिंग डस्ट** से हल्का सा भर दें और कान में रूई लगा दें। दो-एक दिन के बाद कान को साफ कर सकते हैं। अगर चंगा न हो तो इसी तरह प्रयोग करें। प्रायः तीसरी बार भरने की आवश्यकता नहीं होगी।

पैकिंग- 10 ग्राम और 110 ग्राम पाउडर की बोतल में उपलब्ध।

हेमोप्लेक्स (HEMOPLEX)

कीटाणुनाशक एवं प्रतिरोधक टिकियां।

विवरण

चिरायता - आमशय के लिये गुणकारी और ज्वरनाशक है।

अनन्तमूल - रक्तशोधन के लिए उपयोगी है।

असगन्ध - बलवर्धक एवं पाचनशक्ति वर्धक है।

स्वर्णक्षीरी, आकडा और गन्धक - पुरानी चमड़ी की बीमारियों में उपयोगी हैं।

भारतीय जड़ी बूटीयों के इस सम्मिश्रण की सूजन और विषाक्त पीड़ा की अवस्था में सिफारिश की जाती है। विशेषकर पुराने रोगों और पुराने रक्त दोष में उपयोगी है, जैसे- घाव, फोड़े, सड़न, जीर्ण दमा तथा गलगन्धी शोथ तथा उसके कारण होने वाले ज्वर में उपयोगी है।

मात्रा - बड़ों को 1 से 2 टिकिया दिन में 3 बार। बच्चों (5 वर्ष से ऊपर) को चोथाई से आधी टिकिया दिन में 3 बार। आवश्यकता होने पर खुराक बढ़ाई जा सकती है और समय का अन्तर कम किया जा सकता है।

पैकिंग - 100 टिकियाओं की बोतल में उपलब्ध।

हरबीटार्स (HERBITARS)

यकृत सम्बन्धी विकारों के लिये टिकियाँ व सीरप।

विवरण

चिरायता और मंजिष्ठा-भूख बढ़ाते हैं और विषाक्त तत्त्वों से शरीर को छुटकारा दिलाते हैं।

सनाय और सौंफ– पित्त विकार में प्रभावकारी और यकृत के कार्य को सुधारते हैं।

भांगरा – यकृत और प्लीहा की वृद्धि में इसका उपयोग लाभकारी होता है। नजला, पीलिया में यकृत की कोशाओं के सामान्य कार्य एवं सम्पूर्णता बनाये रखने में इसका उपयोग किया जाता है।

इसका उपयोग यकृत के कामला आदि विकारों में भी किया जाता है।

नागकेशर – इसका उपयोग ग्राही के रूप में और पेट की पीड़ा में किया जाता है।

कायफल – ग्राही तथा सुगन्धि है।

बाल हरडे – पेट में गैस, उदरशूल, और प्लीहा एवं यकृत के फैलने पर यह उपयोगी है।

धनिया – सुगन्धि पाचक तथा उदरशूल हर है।

गुग्गुल – आंत के रोगाणु नाशन के लिए, आन्त्रदाह तथा वात शमन के लिए, और अपचन में उपयोग किया जाता है।

हल्दी, सोंठ, अजवायन, आँवला, पिपल और जीरा सुगन्धि द्रव्य हैं, पाचक तथा उत्तेजक हैं। अपचन, अफारा, अग्निमान्द्य, मलबद्धता, कामला, पित्ताशय विकार, यकृत विकार आदि में इन का उपयोग किया जाता है।

इनका संयुक्त प्रभाव लीवर के कार्य को दुरुस्त कर रोगी की सम्पूर्ण तन्दुरस्ती को सुधारता है। इस लिए पीलिया के बाद, यकृत में सूजन या उसके बढ़ जाने पर सहायक औषधि के रूप में इसका उपयोग किया जा सकता है।

मलेरिया, पीलिया जैसे घातक रोगों की चिकित्सा के बाद तथा एलोपथिक दवायें जैसे एन्टीबायोटिक, सल्फा ड्रग्स, गर्भ निरोधक टिकियाँ, मधुमेह व टी.बी. के इलाज में प्रयुक्त होने वाली औषधियों आदि से तथा अधिक गरिष्ठ व तेल मसाले वाले भोजन से यकृत शिथिल पड़ जाता है। ऐसी दशा में यकृत के कार्य को सामान्य करने के लिए **हरबीटार्स** का 3 सप्ताह का कोर्स रोगी को नया जीवन प्रदान करता है। भूख में सुधार होता है, खाया हुआ भोजन तथा टानिक इत्यादि शरीर में पूरी तरह व्याप्त होकर रोगी की शारीरिक दशा सुधार देते हैं और उसका जीवन फिर से सामान्य हो जाता है।

कामला के इलाज में इसे हमारी **कायनोटोमाईन** के साथ दें। इलाज में समय कम लगेगा। अजीर्ण में इसे **मेगनाइन** के साथ दें। पित्त प्रकोप, मिचली और वमन में **विटसान** के साथ दें। यकृत की खराबी आंव में इसे **डयासिन** के साथ दें। बच्चों के लिये मीठे शरबत के रूप में तथा बड़ों के लिये टिकियाओं में उपलब्ध है।

मात्रा – बच्चों को 1 से 2 चाय के चम्मच भर सीरप दिन में 3 बार।

बड़ों को – प्रथम सप्ताह में 2 या 3 टिकियाँ दिन में 2 या 3 बार भोजन से पहले, दुसरे और तीसरे सप्ताह में 1 टिकिया दिन में 2 या 3 बार खाने से पहले, ज्यादा जल से लें।

आहित प्रभाव – कुछ नहीं।

पेकिंग – 50 x 10 टिकिया ब्लीस्टर स्ट्रिप में और 250 टिकियाँ बोतल में तथा 100 मि.ली. शरबत बोतल में उपलब्ध।

हर्बो-सल्फ (HERBO-SULPH)

खाज खुजली के लिए कीटाणु नाशक टिकियाँ।

विवरण

हरड़ा और बाल हरडे – ग्राही, टॉनिक, रक्त शोधक और मूत्र की बीमारियों में उपयोगी हैं।

- चिरायता** - आमामशय विकार और ज्वर में उपयोगी तथा बलवर्धक है।
- हल्दी** - चमड़ी की बीमारियों में खाने और लगाने दोनों में उपयोगी है।
- आक** - चमड़ी के अनेक रोगों में उपयोगी है।
- गन्धक** - चमड़ी की पुरानी बीमारियों में इसका उपयोग किया जाता है।

खाज खुजली में इसकी टिकिया को पीस कर पाउडर के रूप में घी, तेल, वैसलीन या हमारे रिपन्टो मलहम में मिलाकर (1 भाग पाउडर - 5 भाग वैसलीन या रिपन्टो) ऐसे अंगों में गर्म पानी से धोकर सुखने पर लगायें। तत्काल फायदा होगा।

मात्रा - 1 से 2 टिकियाँ दिन में 3 बार जल से।

आहित प्रभाव - कुछ नहीं।

पैकिंग - 50 x 10 टिकियाँ ब्लिस्टर स्ट्रिप पैक में, तथा 300 टिकियाओं की बोतल में उपलब्ध।

अयोबिन (IOBINE)

बार बार होने वाले जुकाम में तथा अलर्जी आदि रोगों में उपयोगी टिकियाँ।

विवरण

- मेहंदी** - एक ग्राही औषधि है, जिस को कष्ट दायक चमड़ी की बीमारियों में उपयोग किया जाता है।
- आक** - ऍंठन को रोकने वाला, कफ निस्सारक और एक बलवर्धक औषधि है।
- नीम** - कृमिनाशक, रोगाणुरोधक, ग्राही और बलवर्धक औषधि है।

- चिरायता** - बलवर्धक, आमामशयिक विकार और ज्वर नाशक औषधि है।
- गन्धक** - चमड़ी और श्वसन श्लेषमा झिल्ली पर प्रभावकारी औषधि है।
- ब्राह्मी** - चमड़ी की बीमारियों, फोड़ों के लिए तथा बलवर्धक के रूप में उपयोगी है।
- अनन्तमूल** - वैकल्पिक, बलवर्धक, चमड़ी की बीमारियों और फोड़ों के इलाज में उपयोगी है।
- उपयोग** - बार बार होने वाले जुकाम नजला के विरुद्ध शरीर में प्रतिरोधक शक्ति उत्पन्न करने के लिए, ग्रन्थियों की सूजन में और चर्म रोगों तथा गर्मी, सुजाक और शीतपित्त (Allergy) आदि रोगों में उपयोगी है।
- मात्रा** - बड़ों के लिए - 1 टिकिया दिन में 3 बार।
- बच्चों को 1/2 टिकिया दिन में 3 बार।
- आहित प्रभाव** - कुछ नहीं।
- पैकिंग** - 10x10 टिकियाँ स्ट्रिप में तथा 300 टिकियाओं की बोतल में उपलब्ध है।

काफ्लिन (KOFLYN)

खाँसी के लिए टिकियाँ।

विवरण

- वासक (आडूसा)** - एक कफ निस्सारक जो घने और जिद्दी बलगम को पतला कर देता है। जिससे कि वह आसानी से शरीर के बाहर निकल सके।
- दूधी** - श्वासनली की पीड़ा में केन्द्रीय श्वसन तंत्र पर असर पड़ने के कारण इसके उपयोग से आराम मिलता है।

- जेठिमध (मुलहटी)** - हल्की कफ निस्सारक और शान्ति प्रदान करने वाली औषधि है।
- नल** - कफ निस्सारक और श्वास नल्ली की सूजन को कम करने में उपयोगी है।
- हूमा** - दमे के दौर को नियंत्रित करने के लिए उपयोगी है।
- कायफल** - पुरानी खांसी, दमा, और श्वास नली की सूजन तथा फेफड़ों के विकारों में उपयोगी औषधि है।
- कबाबचीनी** - कफ निस्सारक और संजीवनी का कार्य करते हैं।
- और सेनेगा**
- बालहरडे** - खांसी और दमा में उपयोग किया जाता है।
- स्वर्णाक्षिरी** - यह एक कफ निस्सारक एवं बेचैनी दूर करने में उपयोगी है।
- पिपल** - सर्दी खांसी और दमा में उपयोगी है।
- काकडा सिंगी** - कफ निस्सारक, दमारोधक, श्वसन क्रिया में पीड़ा की हालत में उपयोगी है।
- उपयोग** - उपरोक्त आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों से बनी हुई यह औषधि तीव्र, पुरानी और किसी भी कारण से उत्पन्न खांसी को शांत करने और ऐंठन को दूर करने के लिए उपयोगी है।
- मात्रा** - बड़ों को 1 से 2 टिकिया दिन में 3 बार।
बच्चों को 1/4 से 1/2 टिकियाँ पीसकर शहद में दिन में 3 बार।
- आहित प्रभाव** - कुछ नहीं।

पैकिंग - 50x10 टिकियाँ ब्लिस्टर स्ट्रिप में तथा 300 टिकियाओं की बोतल में उपलब्ध।

काप्लिन सीरप

अयुर्वेद शास्त्रा में खांसी के लिये वर्णित महत्वपूर्ण गुणों से युक्त दुधि, मुलहटी, अरुसा और हुमा आदि द्रव्यों से निर्मित एक स्वादिष्ट सीरप है। श्वास कोश के नालिकाओं में जमा बलगम आदि विष पदार्थ को बाहर निकालने में गुण कारि है। छाति में वजन जैसी पीड़ा और उच्छ्वास निश्वास में बाधायेँ दूर करने में मदद करती है। बच्चे बड़े और वृद्ध जब खांसी के शिकार होते हैं तब इसे देने से तुरन्त आराम मिलता है और अरुचि, वमन आदि विकार भी दूर हो जाते हैं।

यह विषम ज्वर, न्युमोनिया, इनफ्लुयन्जा, दमा (श्वास), और क्षय आदि व्याधियों में होने वाली श्वास की कठिनाईया में जल्दी आराम दिलाने में एक प्रभावशाली औषधि है। यह त्रिदोषज कास और श्वास में प्रभावशाली है।

- मात्रा**
- (1) बड़ों को 2 चम्मच, (10 मि.लि.) 4 बार (4 से 6 घंटे के अंतर से)।
 - (2) 5 वर्ष से 12 वर्ष आयु तक 1 चम्मच 3 बार।
 - (3) 1 से 5 वर्ष आयु तक 1/2 चम्मच 3 बार।
 - (4) शिशुओं को 1/4 चम्मच 3 बार।

पैकिंग - 100 मि.ली. की बोतल में उपलब्ध।

आहित प्रभाव - कुछ नहीं।

कायनोटोमाईन (KYNOTOMINE)

यकृत के रोग, विशेषकर कामला के इलाज में।

विवरण

रेवन्द चीनी – मृदुविरेचक और ग्राही भी है तिक्त है तथा अतिसार में उपयोगी है।

गन्धक – मृदु विरेचक तथा पित्त वर्धक है।

बाल हरड़े – यकृत के फैलने पर इसका उपयोग किया जाता है।

कटुकी – विरेचक और दुसरे घटक द्रव्यों की क्रिया में वृद्धि करती है।

पुनर्नवा – मूत्रवर्धक तथा, शोथ एवं जलोदर में उपयोगी है।

भृंगराज – यकृत विकारों में उपयोग किया जाता है। यह पित्तवर्धक है और यकृत के लिए बलवर्धक है। नलिकाओं का प्रक्षालन कर स्वस्थ पित्त की वृद्धि करता है।

मखल (इन्द्रायण) – कृमि, कब्ज और कामला में उपयोगी है।

पपरा (बनककड़ी) – इस औषधि के प्रयोग से निष्क्रिय यकृत, पित्त रस का प्रचुर मात्रा में स्राव करता है। निश्चित रूप से यह औषधि यकृततेजक है और पित्तदोष युक्त ज्वर में इसका उपयोग किया जाता है। यकृत पर इसकी क्रिया कैलोमल के समान होती है।

मंजिष्ठा – कामला रोग में इसका उपयोग किया जाता है। **बछ,** **आंवला,** **लौंग,** **जायफल,** **अजवायन,** **पिप्पली,** **जीरा,** **सौंफ,** **दालचीनी,** **हल्दी** और **सौंठ** आदि का वात दूर

करने, प्रेरणादायक, सुगन्धि एवं पाचक के रूप में उपयोग किया जाता है।

उपयोग – आयुर्वेद में उल्लेखनीय उपरोक्त जड़ी बूटियों द्वारा निर्मित यह योग यकृत की सूजन के कारण उत्पन्न होने वाले कामला या पीलिया (Jaundice) रोग में विशेष रूप से लाभकारी है। शीघ्र एवं स्थाई परिणामों के लिए इसे एक टिकिया या एक चम्मच **हरबीटोर्स** तथा 1/2 से 1 टिकिया **तुराइको** के साथ दें।

मात्रा – बड़ों के लिए 1 से 2 टिकियाँ दिन में 3 बार, बच्चों के लिये आधी टिकिया दिन में 3 बार या 1 से 2 चाय के चम्मच शरबत दिन में 2 या 3 बार।

आहित प्रभाव – कुछ नहीं।

पैकिंग – 50 x 10 टिकियां ब्लिस्टर स्ट्रिप पैक में तथा 250 टिकियाँ बोतल में तथा 100 मि.ली. सिरप बोतल में उपलब्ध।

लिवाक्टिन - जी (LIVACTIN-G)

सक्रिया जीवन के लिए एक उत्तम योग।

विवरण

सामान्य दुर्बलता और वृद्धावस्था जन्य विकारों के लिए यह एक उत्तम योग है। इसके मुख्य घटक द्रव्य अश्वगन्धा, ब्राह्मी, मण्डूकपर्णी तथा शिलाजीत हैं।

अश्वगन्धा – आयुर्वेद में मस्तिष्क की दुर्बलता को तथा सामान्य शारीरिक कमजोरी को दूर करने के लिये, शारीरिक पुष्टि व बलवर्धन के लिए तथा एक रसायन द्रव्य के रूप में अश्वगन्धा मूल का बहुत प्रयोग होता है।

ब्राह्मी – इसका प्रयोग आयुर्वेद में 3000 वर्ष से भी अधिक काल से चला आ रहा है। यह स्मरणशक्तिवृद्धि तथा मस्तिष्क दौर्बल्य नाशन के लिए अत्यन्त असरकारक जडीबुटी के रूप में मानी जाती है।

मण्डूकपर्णी – आयुर्वेद में दिमागी कमजोरी को दूर करने, स्मरण शक्ति को बढ़ाने, एकाग्रता की कमी, मानसिक तनाव तथा चिन्ता को दूर करने के लिए इसका बहुत उपयोग होता है।

शुद्ध शिलाजीत – रसायन है, पौरुष को बढ़ाता है अतः वाजीकरण के लिए भी उपयोगी है। मानसिक तनाव को दूर करता है। वृद्धावस्था जन्म विकारों तथा सामान्य दुर्बलता में लाभकारी है। पौष्टिक, बल्य और रक्तवर्धक है।

उपयोग – रसायन है। असमय में वृद्धावस्था के लक्षणों को, दिनभर के क्रिया कलापों को न कर पाना तथा दौर्बल्य आदि को रोकता है। पौष्टिक है और मानसिक तनाव को दूर करता है। वृद्धावस्था जन्म विकारों तथा दिमाग की कमजोरी, स्मरण शक्ति की कमी, अनिद्रा, थकावट तथा पौरुषत्व में कमी इत्यादि में अति उपयोगी है तथा नाड़ी संस्थान के लिए भी लाभकारी है। बल, वर्ण एवं स्फूर्ति वर्धक है।

मात्रा – 1 से 2 कैप्सूल नाश्ते के बाद और दोपहर के खाने के बाद।

आहित प्रभाव – कुछ नहीं।

पैकिंग – 10 कैप्सूल की एक ब्लिस्टर स्ट्रिप और ऐसी 3 स्ट्रिप एक पैक में उपलब्ध।

मेगनाइन (MAGNINE)

अम्लत्व के बढ़ जाने पर और उसके कारण होने वाली व्याधियों में।

विवरण

अम्लत्व को समाप्त करने के लिए सिद्धान्तरूप से क्षार (Alkali) ही प्रयुक्त होते आये हैं परन्तु आधुनिक चिकित्सा जगत में ऐसे क्षारों का ही

प्रयोग किया जाने लगा है जो पुराने क्षारों के अपेक्षा ज्यादा सुरक्षित व टिकाऊ असर वाले हैं और उनके द्वारा गैस (कार्बनडाइ आक्साइड) ज्यादा न बने जो कि रोगी के लिये परेशानी ही पैदा करती है।

इन्हीं मूल सिद्धान्तों को लेकर **मेगनाइन** का फार्मूला निर्धारित किया गया है। मैगनीशियम ट्राइसिलिकेट और एल्यूमीनियम हाइड्रोआक्साइड जेल एक आदर्श क्षार हैं जिनका असर ज्यादा टिकाऊ और सुरक्षित है। ये पाचन संस्थान में व्याप्त भी नहीं होते जिससे संस्थान व शरीर को कोई हानि नहीं होने पाती।

ये दोनों क्षार अधिक अम्ल को समाप्त कर आमशय में होने वाली जलन से रोगी को तुरन्त राहत देते हैं।

इस में विद्यमान बेलाडोना सिक्कम के द्वारा आँतों की मुलायम माँसपेशियों में गतिशीलता कम होती है जिससे रोगी को गैस अफारा और ऐंठन में आराम मिलता है। इसीलिए इसे आमशय व पक्वाशय में होने वाले घावों के इलाज में प्रयोग किया जा सकता है।

मात्रा – खाना खाने से पूर्व या आधे घन्टे बाद 2 टिकिया चूसें या मुँह में चबाकर ताजा पानी पी लें। बच्चों के लिये 1 टिकिया ही काफी है।

आहित प्रभाव – कुछ नहीं।

पैकिंग – 50 x 10 टिकिया ब्लिस्टर स्ट्रिप में तथा 500 टिकियाओं के टिन में उपलब्ध।

मेडीटैब (MEDITAB)

पुरानी खांसी व टी.बी. के बलगम के लिये।

विवरण

वसाका, नल और दूधी – कफ निस्सारण एवं थूक को तरल बनाने के लिए

उपयोग किया जाता है (देखें KOFLYN तीव्र खांसी के लिए)।

लशुन - कफ निस्सारक, रोगाणुरोधक स्वेद और मूत्र वर्धक हैं। पुरानी श्वासनली की सूजन और फेफड़ों की खराबी में इसका उपयोग किया जाता है।

कपर्दिका भस्म - इसका पुरानी फेफड़ों की बीमारी जैसे राजयक्ष्मा में सामान्य बल वर्धक के रूप में उपयोग किया जाता है।

उपयोग - कपर्दिका भस्म तथा लहसुन के साथ अट्रूसा, नल और दूधी नामक जड़ी बूटियों से तैय्यार यह योग पुरानी खांसी और टी.बी. के रोगियों के इलाज में प्रयोग के लिए उत्तम है। इसीलिये दमा व राजयक्ष्मा (टी.बी.) के रोगियों के लिए यह विशेष रूप से उपयुक्त है।

मात्रा - 1 से 2 टिकियां दूध के साथ या पीसकर शहद में दिन में 2 या 3 बार।

आहित प्रभाव- कुछ नहीं।

पैकिंग - 20 टिकियाओं की बोतल में उपलब्ध।

टूथ पाउडर (MEDICATED TOOTH POWDER)

(डीशेन का दांत मंजन)

पायोरिया, मसूढ़ो की सूजन और उनसे मवाद व खून निकलने पर उपयोगी।

विवरण

हरितकी - दांतों की सफाई के लिए बारीक चूर्ण बनाकर उपयोग किया जाता है। दांतों से रक्त स्राव तथा मसूढ़ों में फोड़े होने पर इसका उपयोग किया जाता है।

विडंग - दांतों के दर्द और मूंह में छाले पड़ने पर उपयोग किया जाता है।

कनना एरण्ड-मसूढ़ों को मजबूती देने के लिए इसका उपयोग किया जाता है।

वेम्बका - दांतों के दर्द, गंदी बदबू और मसूढ़ों की बीमारी को दूर करता है।

अजवायन - रोगाणुरोधक, वेदना शामक और जीवाणुरोधक है।

फिटकरी - स्पंजी, मसूढ़ों से रक्त बहना, दांतों के हिलने और मुंह के फोड़े होने पर इसका उपयोग किया जाता है।

इस मंजन को दांतों व मसूढ़ों की सभी तकलीफों में प्रयोग करें, अंगुली से पहले मंजन करें फिर ब्रुश का प्रयोग करें। 20-25 मिनट, तक कुल्ला न करें। चाहे तो रात को मंजन करने के बाद सुबह कुल्ली करें।

इसके निरन्तर प्रयोग से फूले हुए मसूड़े सख्त हो जाते हैं। पायोरिया के पूरी तरह ठीक हो जाने का दावा तो नहीं किया जा सकता परन्तु इसका एनट्राप्स के साथ निरन्तर प्रयोग, मसूढ़ों से मवाद व खून का आना बन्द कर देता है। साथ ही पेट साफ रखें जिसके लिए खाने के बाद **साल फोस** तथा सोते वक्त **स्योलैक्स** लेना चाहिये क्योंकि पेट की खराबी से ही दाँत व मसूढ़ें अस्वस्थ होते हैं और जब तक पेट दुरस्त नहीं किया जाता, सम्पूर्ण लाभ सम्भव नहीं है।

पैकिंग : 50 ग्राम के प्लस्टिक जार में उपलब्ध है।

मर्सिना (MERSINA)

मधुमेह के लिये।

विवरण

इसके सभी तत्त्व मधुमेह की बीमारी में अधेड़ उम्र के मरीजों के इलाज के लिए प्रभावी हैं। इन जड़ी बूटी की औषधियों में विष प्रभाव की

कोई शिकायत नहीं आई है। विशेष दवाईयां देने पर भी इस दवाई को साथ में देने पर अच्छा कार्य करती है। अन्य मुख्य मधुमेह रोधक औषधी अथवा इन्सूलिन के लेने पर **मर्सिना** का एक सहायक औषधी के रूप में उपयोग किया जा सकता है। ऐसे समय रक्त शर्करा के स्तर के अनुरूप **मर्सिना** की खुराक लेनी चाहिए।

गुड़मार, करैला, तरवर, आँवला, नीम और गुलज्व (गिलोय) आदि आयुर्वेद में उल्लेखनीय जड़ी बूटियों से निर्मित इस योग का मधुमेह में एक सुरक्षित व उत्तं प्रभावकारी औषधि के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। यह औषधि रोगियों के रक्त में शक्कर के अनुपात में गिरावट लाकर कार्बोहाईड्रेट पचाने की शक्ति उत्पन्न करती है। इस में यकृत को ठीक करने की क्षमता है जिस से रोगी की सामान्य दशा में सुधार आता है।

उपयोग उपयुक्त और समानान्तर परिस्थिति के अनुकूल इन्सुलिन के साथ भी यह जीवणुरोधक मुख्य नियत औषधि है जो किस्म 2 मधुमेह के कुछ रोगियों के लिए अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार के मरीजों के लिए प्रबन्धक योजना के अनुसार **मर्सिना** को प्रारम्भ में देना अथवा अवधि को बढ़ा दिया जा सकता है या इन्सुलिन की आवश्यकता को रोक दिया जा सकता है।

खुराक - सामान्य खुराक 1 से 2 क्यापसूल दिन में तीन बार, भोजन के आधा घंटा पहले। इस खुराक को पथ्य, व्यायाम और समानान्तर परिस्थिति के अनुसार समायोजित किया जा सकता है।

सावधानी - इसका उपयोग बच्चों के मधुमेह किटोसिस (Ketosis) और आकस्मिक मधुमेह के रोगियों में नहीं करना चाहिये। गर्भावस्था एवं स्तन्यपान काल में भी इसका प्रयोग नहीं करना चाहिये।

टिप्पणी - इस बात की सिफारिश की जाती है कि इलाज के वक्त रोगी के रक्त में और पेशाब में शर्करा की मात्रा की बराबर जांच होती रहनी चाहिये ताकि इलाज पर नियंत्रण रहे।

आहित प्रभाव- कुछ नहीं।

पैकिंग - 5 x 10 क्यापसूल की ब्लिस्टर स्ट्रिप में उपलब्ध।

नेवास (NEVOSS)

प्रकृति के विरुद्ध आचरण के कारण उत्पन्न स्नायुदुर्बलता के लिए।

विवरण

आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों से बने इस रसायन को मानसिक हास व दुर्बलता को दूर करने के लिए प्रयोग करने की सिफारिश की जाती है। इसमें विद्यमान औषधियां केन्द्रीय स्नायु मंडल के लम्बर वर्टीब्रा (मेरुदंड का भाग) के हिस्से में स्थित काम नियंत्रण केन्द्र पर असर करती हैं, और इस प्रकार उसे शक्ति प्रदान कर उससे सम्बन्धित विकारों एवं दुर्बलता में फायदा पहुंचाती हैं। इसलिए अधिक कामवासना महसूस होने पर इसे इस्तेमाल किया जा सकता है। यह उत्तेजित काम नियंत्रण केन्द्र को शान्त कर मनुष्य को स्वभाविक बना देता है। नव युवकों में रात को होने वाले स्वप्न दोष तथा बच्चों में बिस्तर पर अनजाने पेशाब कर देना पर विशेष रूप से यह गुणकारी है। बार-बार पेशाब जाने वाले रोगियों के लिए भी इसे इस्तेमाल किया जा सकता है। ये सभी रोग स्नायु दुर्बलता के कारण उत्पन्न होते हैं। पुरुषों में सहवास के समय वीर्य स्तम्भन में मदद करता है जो कि स्नायु शिथिलता के कारण शीघ्र स्खलित हो जाता है।

खुरासनी अजवायन - निद्राजनक है। इसका बेचैनी दूर करने, अन्तर्दियों और, मूत्र-प्रणाली की ऐंठन या संकोचन के लिए उपयोग किया जाता है।

गोखरु - कामशक्ति को बढ़ाने के लिए उपयोग किया जाता है, वृष्य है तथा अनजाने में शुक्रपात, मूत्र में अधिक फास्फेट आना और बार बार मूत्र त्याग के लिये जाने वाले रोगियों में भी लाभ करता है।

जेठिमध (ग्लीसीरहिजा) - इसका बलवर्धक के रूप में तथा शीतलता एवं ताप हरण के लिए उपयोग किया जाता है।

असगंध - बेचैनी दूर करने वाला और बलवर्धक है।

जायफल - सुगन्धित और प्रेरणा दायक है।

मात्रा - बच्चों को 1/4 से 1/2 टिकिया प्रत्येक 4 घण्टे के अंतर पर तथा बड़ों को 1 से 2 टिकियाँ दूध के साथ प्रत्येक 3 से 4 घण्टे के अंतर से।

अहित प्रभाव - कुछ नहीं।

पैकिंग - 100 टिकियाओं की बोतल में उपलब्ध।

ओलोसिन (OLOSYN)

स्नायु विकारों में बाह्य प्रयोग के लिये तेल।

विवरण

भारतीय जड़ी-बूटियों से बनाया हुआ तेल है। शरीर पर रगड़ने से मांसपेशियों और स्नायु के दर्द की पीड़ा दूर करता है और अन्य चर्म रोगों के इलाज में इसका उपयोग किया जाता है। यह स्नायु की व्याकुलता पर नियंत्रण करता है और बेचैनी को दूर करता है।

आंवला - इसमें प्रचुर मात्रा में उपस्थित टॉनिन तथा वनस्पति तैल बालों को मजबूत और लम्बा करते हैं।

ब्राह्मी - स्थानीय उत्तेजक औषधि है। चर्म रोग, फोडा, फुन्सी, खुजली आदि में उपयोगी है।

भांगरा - इसमें तैल में घुलनशील रंग होता है, गंजापन एवं चर्म रोगों में उपयोगी है।

नीम - जुओं को मारने और खोपड़ी पर हुए फोडे फुन्सीयों को कम करने के लिए उपयोगी है।

मेथी बीज - बीज टंडा होता है। शीतलता प्रदान करने और बालों को झड़ने से रोकता है। और बालों को बढ़ाता है।

धत्तूरा - जुओं को रोकने तथा त्वचा के रोगों में उपयोग किया जाता है।

गजगा - इसमें वनस्पति तेल होता है जिसका पक्षाघात एवं स्नायु के विकारों में उपयोग किया जाता है।

प्रयोग विधि

शरीर की मालिश के लिए कोई भी वनस्पति तेल के साथ 1 अनुपात 5 या 10 मिलाकर स्नान करने के पूर्व मालिश करें। बालों के तेल के रूप में उपयोग करना हो तो सोने से आधे घंटे पहले उंगलियों से खोपड़ी पर अच्छी तरह से इस तेल से मालिश करें। गहरी नींद आयेगी सर का दर्द और बेचैनी भी दूर हो जाते हैं। नाड़ियों को शक्तिप्रदान करने के कारण फालिज मारे हुए अंगों पर निरन्तर मालिश से लाभ होता है।

बालों को बढ़ाने में शक्तिवर्धक का कार्य करता है। बालों के झड़ने पर भी इसका उपयोग किया जाता है।

ओलोसिन का मिरगी की बीमारी, वातोन्माद एवं स्नायु के दुर्बलता में उपयोग किया जाता है। यदि कान के परदे का छिद्र न होतो दिन में एक बार दो बूंद कान में डालें और सिर पर भी इसका इस्तेमाल करें।

पैकिंग - 100 एवं 50 मि.ली. की बोतल में उपलब्ध।

रासजेन्ट (RASGENT)

आंखों की जलन के लिये।

विवरण

इस से आंखों को ठंडक पहुंचती है सूजन और पीड़ा से नेत्रों को आराम मिलता है और आंखों के उठ आने (Conjunctivitis) में शुद्ध पानी में घोल कर डालने से तुरन्त राहत मिलती हैं।

प्रयोगविधि

1 से 2 ग्रेन (15 से 30 मि.ग्रा.) पाउडर को एक चाय के चम्मच भर उबाले हुए पानी में घोलकर लोशन बना लें और दिन में 2-3 बार 2-2 बूंद आँख में डालें। यदि तकलीफ एक ही आँख में हो तो दवा दोनों आंखों में डालें ताकि दुसरी सही आँख में तकलीफ न होने पाये।

इसके अलावा पाउडर को मुख द्वार सूक्ष्म मात्रा (60 से 100 मि.ग्रा.) देने से यौवन पीड़िका, फोड़े फुन्सी व सूजन में आराम मिलता है। फोड़े को बैठाने में दिन में केवल एक बार दें। मवाद भरे फोड़ों को फोड़ने के लिए दिन में 3-4 बार दें।

पैकिंग - 10 ग्राम तथा 110 ग्राम पाउडर बोतल में उपलब्ध।

रेमोरिन (REMORIN)

गठिया व जोड़ों के दर्द के लिए इन्जेक्शन।

विवरण

रेमोरिन एक शीघ्र फायदा पहुंचाने वाली सुरक्षित, गुणकारी और दर्दनाशक आयुर्वेदिक औषधियों का मिश्रण है। **चिरायता, धतूरा, सर्पगन्धा**

तथा **कुरची** का सम्मिश्रण होने के कारण **रेमोरिन** की सिफारिश गठिया, (Rheumatism) व शरीर के अन्य दर्द जैसे बात रोग, कमर का दर्द, जोड़ों का दर्द, गृध्रसी (Lumbago, Arthritis & Sciatica) तथा तीव्र शारीरिक पीड़ा, स्नायु दर्द (Neuralgia) और आवेगों को रोकने में की जाती है।

इन्ही गुणों के कारण यह शारीरिक व मानसिक कमजोरी तथा थकान में भी लाभकारी है।

मात्रा - 1 मि.ली. प्रत्येक 24 घण्टे में माँसपेशियों में इन्जेक्शन द्वारा।

अहित प्रभाव - कुछ नहीं।

पैकिंग - 1 मि.ली. के 10 एम्पूल के डब्बे में प्राप्त।

रेमोरिन कैप्सूल (REMORIN)

गठिया-रोधक कैप्सूल।

विवरण

आयुर्वेदिक दवाइयों के इस मिश्रण का गठिया, वातव्याधियों और संधिवात की सूजन में उपयोग किया जाता है।

जोड़ों की सूजन को घटाता है, दर्द से छुटकारा दिलाता है एवं मांस पेशियों के संकुचन को नियंत्रित करता है। चर्बी विकारों को कम करता है।

गुग्गुलु - रेमोरिन का जो एक मुख्य अंग है हाईपोलिपिडेमिक हाईपो कालेस्टेरामिक कार्य में सहायता करता है।

उपयोग

आमवात, गठिया, संधिवात, कमर या मेरुदण्ड का दर्द, गुध्रसी, स्नायु-दौर्बल्य आदि समस्त वात व्याधियों में तथा तत्जन्य शूल एवं शोथ में उपयोगी है।

रेमोरिन का अतिरिक्त लाभ यह है कि मोटे रोगियों के सिरम कॉलेस्ट्रॉल स्तर को घटाकर सामान्य करता है।

मात्रा - (प्रौढ़ व्यक्तियों में)

प्रारम्भ में 2 कैप्सूल दिन में तीन बार पहले 15 दिनों के लिए इसके बाद में एक कैप्सूल दिन में 3 बार तीन माह तक। कमजोर अथवा दुबले रोगियों के लिए खुराक कम कर सकते हैं।

प्रति संकेत - गर्भावस्था तथा अतिसार में एवं स्तनपान के समय इस दवा का उपयोग नहीं करना चाहिए।

पैकिंग - 30 कैप्सूल का एक पैक जिसमें तीन ब्लिस्टर स्ट्रिप होते हैं। एक स्ट्रिप में 10 कैप्सूल होते हैं।

रेमोरिन (तेल) (REMORIN OIL)

गाठिया-रोधक तैल।

घटक :100 मि.लि. तेल में:

गुग्गुल	-	5 ग्राम
असगंध	-	5 ग्राम
निर्गुण्डी	-	5 ग्राम
रास्ना	-	5 ग्राम
हल्दी	-	2 ग्राम
सहिजन	-	5 ग्राम
धतुर	-	3 ग्राम
सोंठ	-	3 ग्राम
एरण्ड	-	4 ग्राम

आक	-	3 ग्राम
कर्पूर	-	5 ग्राम
पुदीना अर्क	-	5 ग्राम
गन्धपुरा तैल	-	6 मि.ली.
गन्ध बिरोजा तैल	-	4 मि.ली.
वनस्पति तैल	-	यथावश्यक

विवरण

गुग्गुल - यह वायु के कारण शरीर के किसी भी भाग में होने वाले दर्द के लिए बहुत ही प्रसिद्ध दवा है। इससे शोथ व सभी तरह के जोड़ों के दर्द कम होते हैं।

असगंध - वेदनाहर, शोथहर एवं रसायन है।

निर्गुण्डी - यह तीव्र वेदना शामक है और सूजन को कम करती है।

रास्ना - आमवात, व संधिशोथ हर है। गृध्रसी के दर्द को भी कम करती है।

एरण्ड - आमवातज शोथ और वात हर है। कटि वेदना में भी उपयोगी है।

सोंठ, कर्पूर, पुदीना, गन्धपुर तैल, गन्धाबिरोजा तेल आदि - नाड़ी उत्तेजक व रक्त प्रसारण को अधिक कर तुरन्त वात शामक हैं।

उपयोग - सभा तरह के जोड़ों के दर्द तथा गृध्रसी रोग में गुणकारी।

प्रयोग विधि- इस तेल को थोड़ी मात्रा में लेकर दर्द वाले स्थान या जोड़ों पर लगाकर सेकें। तुरन्त लाभ होता है। तेल की मालिश न करें।

इसके साथ-साथ रेमोरिन कैप्सूल भी इस्तेमाल करें, संपूर्ण एवं तुरन्त लाभ मिलेगा।

पैकिंग - 50 मि.लि. बोतल में.

100 मि.लि. बोतल में.

रिपन्टो (RIPANTO)

जलने व चर्म रोगों के लिये मलहम।

विवरण

बिना किसी रासायनिक पदार्थ से बने इस कुदरती तेल तत्त्वों से और मधुमक्खी के छत्ते के मोम से बना अपने किस्म का अनोखा मलहम है जिसे जलने में प्रयोग करने से त्वचा पर किसी प्रकार का दाग नहीं पड़ता। त्वचा के झुलसने पर फौरन लगाने से पफोला नहीं पड़ता। त्वचा को मुलायम करने के विशेष गुण के कारण इसे कड़ी तथा फटी त्वचा में, दाढ़ी बनाने के बाद, हाथों में (जिनको हाथ साबुन या अन्य रासायनिक द्रव्यों में रखना पड़ता है, जिससे त्वचा शुष्क पड़ जाती है) क्रीम के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। धोखे से आँखों या ऐसे ही नाजुक अंगों में लग जाने पर नुकसान नहीं करता।

घावों की ड्रेसिंग में, कट जाने व चोट लग जाने में सर्वोत्तम है।

प्राकृतिक तैलों की कमी के कारण हुई खुजली व एक्जिज़्मा में भी इसे लगाया जा सकता है। बवासीर के मस्सों में लगाने से मस्से मुलायम होकर सिकुड़ जाते हैं। और रोगी को राहत मिलती है। जलन को शान्त करने में किसी भी अंग में लगाया जा सकता है।

पैकिंग - 15 ग्राम की ट्यूब पैकिंग में उपलब्ध।

रब्ज़ान (RUBZON)

सिरदर्द व सर्दी जुकाम में बाम रूप में प्रयोग के लिए।

विवरण

रब्ज़ान बाह्य प्रयोग के लिए सुप्रसिद्ध औषधियों से बना सूजन एवं दर्द निवारक लेप है। इस मलहम का प्रभाव दीर्घकालीन होता है। त्वचा में तुरन्त प्रवेश हो जाने से इसमें विद्यमान पुदिना कपूर, निलगिरी तेल, गंधबिरोजा तेल फौरन असर दिखाते हैं और विशिष्ट अंगों पर दर्द व सूजन को कम कर शीतलता प्रदान करते हैं। गंधपुरा तेल होने के कारण यह गठिया, मोच आदि में भी लाभकारी है। यह अपने असर से रक्त वाहिनियों को फैलाकर रक्त के प्रसार को तेज कर देता है जिससे अंगों की पीड़ा में तुरन्त राहत मिलती है। सर्दी लग जाने पर, जुकाम में नाक व छाती में बलगम जम जाने पर लगाने से निलगिरी व गंधीबरोजा तेल श्वास नलिकाओं को खोल देते हैं और रोगी को सांस लेने में आराम महसूस होता है। ये दोनों तेल बलगम बनना भी रोकते हैं। समिश्रित प्रभाव से फेफड़ों की श्लेषात्मक झिल्ली की सूजन व जलन कम होकर रोगी की बेचैनी दूर होजाती है।

विशेष गम्भीर दशाओं में गर्म पानी में थोड़ा **रब्ज़ान** डालकर उसका भपार लें (भाप को श्वास के साथ खींचें)

सरदर्द में विशेष लाभकारी है।

पैकिंग - 15 ग्राम की ट्यूब में उपलब्ध।

साक्टोमिन्स (SACTOMINS)

शारीरिक बल स्वास्थ्य एवं स्फूर्ति के लिए।

घटक द्रव्य प्रति 100 ग्राम में:-

रागी - 45 ग्राम

चना	-	8 ग्राम
असगंध	-	11 ग्राम
शतावरी	-	8 ग्राम
आंवला	-	7 ग्राम
मेथि	-	5 ग्राम
हल्दी	-	4 ग्राम
विदारि कन्द		4 ग्राम
गोरगम		5 ग्राम
मुलेठी		6 ग्राम

रागी - यह एक पौष्टिक आहार ही नहीं बल्की इसमें आवश्यक अमिनोएसिड्स, कैल्सियम, फासफोरस, लोह आदि खनिज अधिक मात्रा में उपलब्ध हैं। रागी पचने में गुरु है। इसमें मौजूद कार्बोहाइड्रेट्स देर से पचते हैं और शरीर में चूसन होते हैं। इसके अलावा सेल्लुलोस और फैबर तत्व मलबद्धता को दूर करने में सहायक होते हैं।

चना - इसमें अमिनोएसिड्स, प्रोटीन, मिनेरल्स तथा अन्य पौष्टिक तत्व आदि उपस्थित हैं। इसके अलावा चर्बी को कम करते हुए मधुमेह में लाभकारी है।

असगंध - शोध कार्य के बाद यह साबित हुआ है कि असगंध शोथ हर एवं-एन्टिबयोटिक गुण वाला है। इसे दुध के साथ प्रयोग करने से धातुओं का पोषण कर शारीरिक भार बढ़ता है। साथ ही यह शारीरिक बल, रोग निरोधक शक्ति को बढ़ा कर मानसिक तनाव को कम करता है और नाडी मण्डल को शक्ति देता है।

शतावरी - बल्य, वृष्य और रसायन होने से - शरीर में रोगनिरोधक शक्ति को बढ़ाती है एवं मानसिक तनाव को कम कर आयु की वृद्धि करती है।

इसमें मिनरल एवं रसायन तत्व प्रचुर मात्रा में होने से मधुमेह में लाभकर है।

आंवला - इसमें विटामिन 'सी' भरपूर होता है अतः बल्य एवं रसायन है। इसका सुराविलयन सत्त्व एन्टी-वैरल और पौष्टिक है।

मेथी - बीज बल्य है, स्निग्ध है और रक्त शर्करा को कम कर मधुमेह के रोगियों में शारीरिक भार को भी कम करता है।

हल्दी - मधुमेह में आंवले के चूर्ण के साथ खाने का रिवाज है और यह एक प्रसिद्ध घरेलू औषध है। यह कृमिध्न, शोथ हर और नेत्र रोग हर है। इसका नेत्र में आश्चोतन करने से आंखों में ठंडक मालूम होती है।

विदारिकन्द - यह पौष्टिक, बल्य एवं नाड़ी दौर्बल्य दूर करने में प्रसिद्ध व प्रचलित औषधि है।

गौरगम - यद्यपि यह औषध का कार्य न करते हुए भी मधुमेह में बहुत ही सहायकारी है। यह मलबद्धता को दूर करने के अलावा चर्बी को कम करता है।

मुलेठी - मधुर, शीतल, व्रणरोपक, शोथ हर है और इससे एसिडिटी (छाति में जलन) भी कम होती है।

मात्रा - 2-3 चाय के चम्मच दिन में 2 बार पानी या दूध के साथ लें।

उपयोग - मधुमेह में सहायक औषध के रूप में उपयोगी है।

अहित प्रभाव - कुछ नहीं।

पैकिंग - 200 ग्राम डब्बे में।

साल फ़ास (SALPHOS)

पेट सम्बन्धी अपचन विकारों के लिए तथा भूख की कमी को दूर करने के लिए।

विवरण

- रेवन्दचीनी** – कम खुराकों में अतिसार के इलाज में इस औषधि का उपयोग किया जाता है।
- बालहरडे** – आमामाशयिक भूख बढ़ाने तथा आंत को नियमित करने के लिए इसका उपयोग किया जाता है।
- जीरा** – वात को कम करने तथा भूख बढ़ाने के लिए इसका उपयोग किया जाता है।
- सोंठ** – वात को कम करने में तथा पीड़ा को दूर करने में लाभकारी है।
- चित्रक** – विशेषकर पेट के दर्द और बेहतर हाज़मे के लिए उपयोग किया जाता है।
- सौंफ** – अपचन होकर पेट में गैस पैदा होजाने पर यह गुणकारी है।
- आंवला** – आंत की गति को नियमित करता है।
- तालीसपत्र** – वात दूर करने वाला तथा भूख बढ़ाने वाला और शक्तिर्धक है।
- पपई** – आमामाशय रस की कमी, बदहजमी में तथा आंत के क्षोभ में इसका उपयोग किया जाता है।
- कुटकी** – भूख की कमी, बदहजमी में इसका उपयोग किया जाता है।

हल्दी – सुगन्धित, वात को दूर करने और कृमिनाशक के रूप में इसका उपयोग किया जाता है।

जंगली इलायची, चिरायता, धनिया, भांगरा, अजवायन, पिप्पली

हाज़मे के लिए वात दूर करने तथा भूख बढ़ाने में उपयोगी हैं। इनका सम्मिश्रण वात हर, भूख, पित्त वर्धक और पाचन शक्ति को बढ़ाता है।

सुप्रसिद्ध देशी जड़ी बूटियों से निर्मित यह औषधि पेट के सभी विकारों के लिए राम बाण है। खास कर भूख के न लगने पर, पेट दर्द, अफारा व खाने का समुचित रूप से न पचना। फँसी हुई वायु के कारण होने वाली तकलीफों में इसको गर्म पानी में देने से मिनटों में राहत मिलती है।

जठराग्नि को उत्तेजित कर भूख बढ़ाती है पाचन ग्रन्थियों को शक्ति प्रदान कर पाचक रसों के द्वारा हजम करने में सहायता करती है। जिन लोगों को खाने के तुरन्त बाद दस्त महसूस होता है उनके लिए यह विशेष औषधि है।

नियमित सेवन से कब्ज नहीं रहता।

पित्त के प्रकोप में, अजीर्ण, पतले दस्तों में या पुराने कब्ज को दूर करने में इसे सहायक औषधि के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

प्रयोग विधि – भूख न लगने पर खाने के पूर्व दें तथा अपचन की शिकायत होने पर खाने के बाद दें। आवश्यकतानुसार दवा निर्धारित कर लें।

मात्रा – बच्चों के लिए 1/2 से 1 टिकिया पानी के साथ दिन में 2 बार वयस्कों के लिए 1-2 टिकियाँ दिन में 2 बार। शिशुओं के लिए **बायो** – साल दें।

अहित प्रभाव – कुछ नहीं।

पैकिंग – स्ट्रिप वाली 10x10 टिकियाँ एक पैक में, 300 टिकियाओं की शीशी में उपलब्ध।

सेंज़ाईन (SENZINE)

स्नायु दुर्बलता के लिये।

विवरण

आयुर्वेदिक औषधियों का यह मिश्रण नाड़ी संस्थान की कमजोरी को दूर करता है और उसको शान्त करता है, चिन्ता एवं तनाव को कम करता है। यौन शक्ति को पुनः बनाये रखने में सहायता करता है।

सोंठ - वात दूर होकर, तन्दुरूस्ती का अनुभव होता है।

असगन्ध - सी.एन.एस को शांति प्रदान करता है।

लहसुन - रोगाणुरोधक, मूत्रवर्धक और पसीना लाने में गुणकारी है।

स्वर्णाक्षिरी - कम खुराकों से सी.एन.एस को प्रेरणा प्रदान करता है।

गोखरू - बार-बार पेशाब आने के समय जलन, क्षोभ तथा मूत्र की परेशानियों को कम करता है और यौन शक्ति को बढ़ाता है।

बच - प्रेरणादायक, तथा नाड़ी संस्थान को शान्ति प्रदान करता है।

जेठिमध - शक्तिवर्धक और शान्ति प्रदान करता है।

जायफल - प्रेरणादायक और वात को दूर करता है।

छोटाचन्द - शान्ति देने वाली तथा हिपनोटिक है।

बालतगर - प्रेरणा दायक तथा नाड़ी संस्थान को चैतन्य प्रदान करने वाली औषधि है।

जीरा - वात हरने वाला प्रेरणादायक, और सुगन्धि है।

उपयोग

स्नायु दुर्बलता के कारण उत्पन्न नपुसंकता (Impotency) या काम

शक्ति की कमी में इसकी सिफारिश की जाती है। यह उत्तेजक नहीं है वरन काम नियन्त्रण केन्द्र को शक्तिशाली बनाकर पौरुष शक्ति का संचय करता है और खोयी हुई काम शक्ति वापस पुनः आ जाती है।

इसमें विद्यमान औषधियाँ केन्द्रीय नाड़ी संस्थान को शक्तिशाली बनाती हैं और पौरुष ग्रन्थियों को स्वभाविक रूप से उत्तेजित करती हैं, जिससे पुरुष में स्वाभाविक कामोत्तेजना होने लगती है।

इसे स्नायु दुर्बलता में भी इस्तेमाल करने की सिफारिश की जाती है। थके हुये मानसिक रोगी के लिये ताजगी प्रदान करती है।

मात्रा - स्नायु दुर्बलता के लिये खाने के 1 घन्टा पूर्व 1-2 टिकियाँ दिन में 2 बार। पौरुष के लिये 1-2 टिकियाँ दिन में 3 बार खाने के बाद।

अहित प्रभाव - कुछ नहीं।

पैकिंग - 100 टिकियाओं की बोतल में उपलब्ध।

स्किनमेंट (SKINMENT)

फंगस (Fungus) व बैक्टीरिया से उत्पन्न चर्म रोग में बाह्य प्रयोग के लिये मलहम।

विवरण

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में प्रमाणित रसायनों से निर्मित इस मलहम की किसी भी प्रकार के चर्म रोगों में और खासकर बैक्टीरिया व फंगस से उत्पन्न चर्म रोगों के लिये सिफारिश की जाती है।

इसमें विद्यमान औषधियाँ इसके अनूठे फार्मूले के कारण त्वचा की निचली सतह तक भेद जाती हैं और वहां छिपे कीटाणुओं को समाप्त कर देती हैं। इसी कारण जिस त्वचा के भाग का स्किनमेन्ट से इलाज किया

जाता है उस भाग में दुबारा अगले गर्मी या बरसात में चर्म रोग नहीं होने पाता। यही इसकी विशेषता है।

उपयोग

इसकी विशेष रूप से दाद, खाज, खारीश, स्केबीज, सौरियासिस (Psoriasis) आदि चर्म रोगों में सिफारिश की जाती है।

चर्म विकारों से ग्रसित स्थानों को गर्म पानी से धोकर व सुखकर **स्किनमेंट** धीरे धीरे 2-3 बार 3 रोज तक लगायें। यदि त्वचा फटी या खुष्क होतो इसमें **रिपन्टो** मिला लें। कुछ दिनों में पुरानी रोग ग्रसित खाल काली पड़कर निकल जायेगी।

नाजुक भागों में किसी तेल में मिलाकर लोशन जैसा बनाकर हल्के हल्के लगायें जब तक दवा त्वाचा में न विलीन हो जाये। ऐसा करने से कपड़ों में दाग नहीं पड़ने पायेगा।

पैकिंग : 15 ग्राम की टुयूब में उपलब्ध।

स्पोलैक्स (SPOLAX)

पुराने कब्ज के लिए।

विवरण

प्राकृतिक तत्त्वों से निर्मित यह जुलाब मीठे स्वादिष्ट दानों के रूप में अपने किस्म का अलग ही योग है। जिसे भारत की जल वायु, खान पान व लोगों की आदतों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। इसमें मुख्य तत्त्व इसबगोल है जिसे मीठे स्वादिष्ट दानों का रूप दिया गया है जिससे रोगी सरलता से ले सके। साथ में थोड़ा सा सनाय, सौंफ, जीरा का मिश्रण है ताकि रेचक के साथ साथ पेट की वायु को भी संयोजित कर मल को स्वाभाविक रूप से निकाल सके।

आंतों में इसबगोल पानी को चूस कर फूल जाता है और आंतों की दीवारों को चिकनाहट प्रदान कर, उनमें स्पंदन भी पैदा करता है जिससे बिना जोर लगाये फसा हुआ मल आंतों से फिसल कर बाहर आ जाता है। यह एक स्वाभाविक क्रिया के समान होता है जिसमें रोगी को एक या दो से ज्यादा बार पाखाना नहीं जाना पड़ता। यह बात दूसरे जुलाबों में नहीं होती है। इससे रोगी कमजोरी नहीं महसूस करने पाता।

साथ ही साथ सौंफ और जीरे से पेट की वायु निकलती रहती है और इन गुणों के कारण ही स्पोलैक्स को सभी प्रकार के रोगियों में कब्ज दूर करने के लिए एक आदर्श औषधि के रूप में सारे चिकित्सक वर्षों से प्रयोग करते आ रहे हैं।

उपयोग

विशेष रूप से कमजोर या वृद्ध लोगों के लिए यह अधिक उपयुक्त है। गर्भवती स्त्रियों तथा तेज रक्त चाप के रोगियों में भी, जहाँ कब्ज से हर हालत में बचाया जाना चाहिये, इसे एक आदर्श औषधि के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

बावसीर के रोगी कब्ज के शिकार रहते हैं, उनके लिये यह सर्वथा उपयुक्त है। न रहेगा कब्ज, न रहेगी बवासीर।

चूँकि इसबगोल व सौंफ का उपयोग वर्षों से पुरानी पेचिश व आँव (Amoebiasis & Colitis) के रोगी करते चले आ रहे हैं, अतः **स्पोलैक्स** उनके लिए भी वरदान स्वरूप है। उनको इसकी छोटी खुराकें थोड़े जल से सुबह शाम दें।

पेचिश व दस्तों के इलाज के बाद रोगी के मल विसर्जन क्रिया को स्वाभाविक बनाने तथा नियमित करने के लिये यह सर्वोत्तम औषधि है।

गद्दी या कुर्सी पर सारा दिन बैठने वाले लोग या शारीरिक श्रम न करने वाले, कब्ज का नियमित शिकार हो जाते हैं। उनके लिए यह सर्वथा

उपयुक्त हैं और यह उनको इसका आदी नहीं बनाती। इसे कभी भी ले सकते हैं फिर आवश्यकतानुसार कभी भी छोड़ सकते हैं।

मात्रा - उत्तम परिमाणों के लिए शुरू में इसको 2 से 3 चाय चम्मच भर रात में सोते वक्य या खाना खाने से 2 घंटा पूर्व एक ग्लास पानी से लें। शनैः शनैः 2 चाय के चम्मच पर आ जावें। कम से कम एक सप्ताह नियमित रूप से प्रयोग करें। समुचित मात्रा उप्र के अनुसार कम कर लें, जैसे बच्चों (5 वर्ष से अधिक) को 1 चाय का चम्मच भर पानी से दें।

आहित प्रभाव - कुछ नहीं।

पैकिंग - 75 ग्राम तथा 200 ग्राम के एच डी पोलिथीन जार में उपलब्ध।

स्पोलैक्स-ई पाउडर (SPOLAX-E POWDER)

जीर्ण मल विबंध के लिए उबलने वाला पाऊडर रेशों का परिपूरक, मृदुविरचक, अग्निवर्धक एवं पाचक। इस में शकर नहीं होने के कारण मधुमेह के रोगियों के लिए लाभकारी।

विवरण

इसबगोल आंतों में पानी को चूसकर फूल जाता है, आंतों की दीवारों को चिकनाहट प्रदान कर उन में स्पन्दन उत्पन्न करता है, जिसके कारण बिना जोर लगाये फंसा हुआ मल आंतों से फिसल कर आसानी से बाहर आ जाता है। यह एक स्वभाविक क्रिया के समान होता है और रोगी को एक या दो से अधिक बार मल त्याग की आवश्यकता नहीं पड़ती। इस में रोगों को पैदा करने वाले जीवाणुओं को और अन्य विषैले तत्वों को सोखलेने का गुण होता है। सौंफ और जीरा सुगन्धित एवं पाचन क्रिया को सुधारनेवाले द्रव्य हैं।

उपयोग

बारम्बार होने वाले कब्ज में, बिस्तर पर पड़े रोगियों में, वृद्धवस्था में और बच्चों में होनेवाली कब्जियत में गुणकारी है। बवासीर के रोगियों के

लिए भी यह बहुत उपयुक्त है। यह किसी भी प्रकार से हानिकारक नहीं होने से गर्भवती स्त्रियों को भी कब्ज होने पर दे सकते हैं।

हृद्रोग एवं मधुमेह से पीड़ित रोगियों के लिए भी यह लाभकारी है। उनके रक्त में कोलेस्ट्रॉल के स्तर को यह कम करने में सहायक होता है।

मात्रा - (बड़ों के लिए) 1 से 3 चाय के चम्मच इस पाऊडर को एक साफ खाली गिलास में डालकर उस में पानी डालकर हिलाकर तुरन्त पीलें, फिर एक गिलास पानी ऊपर से पीलें।

पैकिंग - 125 ग्राम पैक में उपलब्ध।

तुराइको (TURAI CO)

मूत्रवह संस्थान की गड़बड़ियों के लिये।

विवरण

कबाबचीनी - मूत्र जीवणु रोधक है। इसका सूजाक, मूत्र द्वार की शोथ आदि मूत्रवह संस्थान के रोगों में उपयोग किया जाता है। गुर्दे एवं मूत्राशय से पत्थरी बाहर निकालने के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है।

पुनर्नवा - मूत्रवर्धक है तथा हृदय एवं गुर्दे के रक्त संकुलता के कारण नसों की सूजन में तथा जलोदर में इसका उपयोग किया जाता है।

गोखुरू - पेशाब के बार-बार आने में पीड़ा तथा मूत्र-नली की सूजन व जलन में इसका उपयोग किया जाता है, तथा बूंद बूंद पेशाब आने पर बहुत उपयोगी है।

नागकेसर - अमाशय की व्याधियों में इस औषधि का उपयोग किया जाता है। पेशाब की निष्कासन क्रिया को तेज करता है।

इनके मिश्रित गुणों के कारण **तुराइको** का पेशाब सम्बन्धी सभी शिकायतों में, जैसे पथरी या संक्रामक रोग के कारण गुर्दे में दर्द तथा जलन होना तथा पेशाब का न साफ उतरना आदि में, एक विश्वसनीय और सुरक्षित औषधि के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। गुर्दों तथा प्लीहा के लिए एक उत्तेजक का कार्य करती है जिस से पित्त का निर्माण यकृत में तेजी से होने लगता है। गुर्दों को शक्ति प्रदान कर उनके कार्य में क्षमता ले आती है। जिस से पेशाब खुलकर आता है।

मात्रा - बड़ों के लिये 1 से 2 टिकियाँ ज्यादा मात्रा में पानी के साथ, दिन में 3 बार। बच्चों के लिये उम्र के हिसाब से मात्रा कम कर लें।

आहित प्रभाव - कुछ नहीं।

पैकिंग - 50 x 10 टिकियाओं के ब्लिस्टर स्ट्रिप पैक में तथा 300 टिकियाओं की बोतल में उपलब्ध।

विटसान (VITESSON)

अनिद्रा व बैचेनी में नींद लाने के लिये टिकियाँ।

विवरण

विशुद्ध आयुर्वेदिक एवं पूर्ण सुरक्षित तत्वों से बनी यह औषधि नींद लाने के लिए, बिना आदी बनाये, दीर्घकाल तक इस्तेमाल की जा सकती है।

असगन्ध - सी.एन.एस (केन्द्रीय नाड़ी संस्थान) की बैचेनी दूर करने वाला तथा शक्तिवर्धक एवं कामोत्तेजक है। यह हल्का मूत्रावर्धक है।

छोटाचन्द्र - अति तनाव, शारीरिक व मानसिक (सैकोसोमेटिक) अनियमितताओं एवं नाड़ी वह संस्थान के तनाव में उपयोग किया जाता है।

बालतगर - अनिद्रा रोग एवं, चिड़ चिड़ापन, मिरगी, वातोन्माद में उपयोग किया जाता है।

खुरसानी अजवाइन - वात दूर करने वाली, बैचेनी दूर करनेवाली, ऐंठन रोकने वाली और निद्राजनक के रूप में इसका उपयोग किया जाता है।

अपरोक्त गुणों के कारण इसे, मानसिक विकार तथा स्नायुमंडल के तनाव में तथा इनसे उत्पन्न सभी विकारों में जैसे नींद नहीं आना, घबराहट, बैचेनी, बढ़े हुये रक्तचाप, मांस पेशियों व जोड़ों में दर्द और स्नायु पीड़ा से उत्पन्न सिरदर्द आदि में एक सुरक्षित एवं विश्वसनीय औषधि के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

विशेष - इसे जहां तक हो सके दिन में ही लेना चाहिए।

मात्रा - बच्चों को 1/4 से 1/2 टिकिया दिन में 3 बार।

बड़ों को 1 से 2 टिकियाँ दिन में 3 बार।

अहित प्रभाव - कुछ नहीं।

पैकिंग - 50 x 10 टिकियाओं के ब्लिस्टर स्ट्रिप पैक में तथा 300 टिकियाओं वाली बोतल में उपलब्ध।

जहर-को (ZEHER-CO)

विषैले कीड़ों के विष को समाप्त करने के लिये तथा टी.बी. से संक्रामित विकारों के लिये।

विवरण

ट्युबरकुलिनम तथा लैचसिस से तैयार इस औषधि को बिच्छू या अन्य विषैले कीड़े मकोड़ों के काट लेने पर शरीर में उनके विष के प्रभाव को समाप्त करने के लिये, खिलाने की सिफरिश की जाती है। इसके खाने मात्र से ही दर्द जलन व विष का असर दूर हो जाता है।

साथ ही पुराने नासूर या टी.बी. से संक्रमित शल्य चिकित्सा योग्य फोड़े घाव आदि इसके निरन्तर सेवन से सूख जाते हैं और कालान्तर में भर आते हैं।

कुछ चिकित्सकों ने इसे कण्ठमाला के इलाज में सफलता पूर्वक इस्तेमाल किया है और ऐसे ही अन्य आशाहीन रोगों में इसके प्रयोग से अश्चर्यजनक परिणाम देखे गये हैं।

उपरोक्त उपयोगों के अलावा यदि कोई अन्य लक्षण जो सूर्य के उदय से बढ़े और सूर्यास्त से समाप्त हो जाये तो उसके लिये यह विशेष औषधि है।

मात्रा - बड़ों के लिये 1 टिकिया 4-4 घंटे से या दिन में 2 या 3 बार आवश्यकतानुसार, बच्चों के लिये 1/4 या 1/2 टिकिया दिन में 2 या 3 बार।

नोट - इसे हमारी किसी अन्य औषधि के साथ न मिलायें।

आहित प्रभाव - कुछ नहीं।

पैकिंग - 30 टिकियाओं की बोतल में उपलब्ध।

तृतीय भाग

परिशिष्ट (Addendum)

इस भाग में विभिन्न रोगों के इलाज के विषय में वर्णन किया गया है। दवायें, चिकित्सा या रोगों से बचाव के लिये प्रयोग की जा सकती है। रोगों की सही पहचान से चिकित्सा सरल हो जाती है।

रोगी की उम्र, लिंग (Sex) शरीर की बनावट तथा वजन और रोग की अवधि आदि का पूरा ध्यान रखकर चिकित्सक को दवा का चुनाव और मात्रा निर्धारित करनी चाहिये। साथ ही चिकित्सक को दवाओं के संयुक्त प्रभाव एवं दोषों का भी ज्ञान होना चाहिए। इसलिये रोगी को हिदायत कर देना चाहिये कि यदी चिकित्सा के दौरान जरा सी भी जटिलता या परेशानी उत्पन्न हो तो वह अपने चिकित्सक की तुरन्त सलाह लें। औषधियों को देने की विधि के बारे में पूरी जानकारी के लिये भाग 2 के अन्तर्गत सामान्य निर्देश में देखें।

इस परिशिष्ट में हम यह बताना चाहते हैं कि हमारा प्रयास ज्ञान को अधिक से अधिक सरल बनाना है, ताकि लोग भली भाँति समझ सकें और उसका फायदा उठा सकें या कहीं विज्ञान की जटिलताओं में पाठक उलझ कर ज्ञान से वंचित न रह जायें। यही मानवता की सच्ची सेवा है। जब आप किसी रोग विशेष के लिये दवा निर्धारित करें तो रोगी के खान पान और पाचन सम्बन्धी बातों का अवश्य ध्यान रखें।

इस भाग में हम चिकित्सा के शरीर सम्बन्धी सूत्रों के बारे में बतायेंगे, साथ ही रोगों का वर्गीकरण किया गया है। इन दोनों के अध्ययन से ही आपको हमारी हर्बोमिनरल औषधियों के सिद्धांतों के बारे में पता चल सकेगा जिनके आधार पर ये मानव शरीर पर अपना कार्य रोगों के इलाज में करती हैं।

हमारा **अल्बो-सांग**, फासफोरस, कैल्शियम और मैगनीशियम लवणों से भरपूर है। इसलिये इसे शरीर में इन तत्वों की कमी को पूरा करने में एक दवा के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। यह आवश्यक है कि हर रोगी के लिये भोजन या पथ्य निर्धारित करते समय उसकी पाचन क्षमता और व्यक्तिगत आवश्यकता का ध्यान रखा जाय।

पथ्य और भोजन (DIET)

शारीरिक जरूरत से ज्यादा भोजन करना तथा शारीरिक श्रम से रहित आराम का जीवन आज के आधुनिक जीवन के दो दोष हैं। सामान्य स्वास्थ्य के लिये खान पान की आदतों पर संयम होना परमावश्यक है। यह बात प्रत्येक रोगी पर लागू होती है। साथ ही प्रत्येक व्यक्ति कुछ न कुछ व्यायाम अवश्य करे। इससे मनुष्य की पाचन क्रिया ठीक रहती है और स्वास्थ्य ठीक रहता है। व्यायाम से हमारा अभिप्राय हल्के व्यायामों-जैसे टहलना, साँसों का तेजी से लेना व निकालना आदि से है, जो रोगी की मांसपेशियों में रक्त संचार सुचारु रूप से बनाये रखे। तेज व्यायाम रोगी के लिये निषिद्ध है। इसलिये रोगी के लिये खान पान निर्धारित करते समय रोगी के मोटापे, रक्तचाप और मधुमेह का अवश्य ध्यान रखें।

मोटापा (OBESITY)

ऐसे रोगी को नमक सीमित मात्रा में देना चाहिये और चिकनाई वाले पदार्थ जैसे घी, मक्खन आदि कम से कम देना चाहिये। नियमित व्यायाम जैसे सुबह टहलना काफी लाभकारी होता है। रोगी को ठंडे पानी से ही, जहां तक सम्भव हो, स्नान करना चाहिये। रसदार फलों का सेवन भी सहायक होता है। घी, मक्खन का सेवन कम से कम करना चाहिये क्योंकि ये पदार्थ रक्त में कोलेस्ट्रॉल को बढ़ा देते हैं, जो धमनियों में जमकर उनका लचीलापन समाप्त कर देता है और उसे हृदय रोग होने का डर बना रहता है।

रक्तचाप

बढ़े हुए रक्तचाप वाले रोगी को भोजन में नमक का प्रयोग बिलकुल नहीं करना चाहिए। चाय, काफी, अल्कोहल का प्रयोग निषिद्ध है। रस वाले फल या उनका रस का प्रयोग लाभकारी होता है। यदि ऐसे रोगी खाते वक्त पानी बिलकुल न पियें और खाने के कम से कम आधा घंटे बाद पानी पिये तो रक्तचाप काफी हद तक नियन्त्रित हो जाता है। खासकर जलोदर, गुर्दे या हृदय के रोगी भोजन में नमक बिलकुल न लें तो उनके हित में अच्छा होगा।

मधुमेह (DIABETES)

मधुमेह से पीड़ित रोगी को बिलकुल सीमित मात्रा में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और चिकनाई लेनी चाहिये। प्रोटीन की मात्रा आधे से एक ग्राम प्रति किलोग्राम शरीर के वजन से निर्धारित करना चाहिये कार्बोहाइड्रेट कुल 200 से 300 ग्राम लेना चाहिये और 2,100 से 2,400 कैलोरी शक्ति के लिये चिकनाई की मात्रा प्रतिदिन के भोजन में निर्धारित करें। यदि रोगी मोटापे से ग्रसित हो तो घी, तेल, मक्खन और नमक का प्रयोग बिलकुल नहीं करना चाहिये।

पक्वाशय में घाव (PEPTIC-ULCER)

ऐसे रोगियों में दूध, क्रीम या हाइड्रोप्रोटीन जैसे खाद्य पदार्थ पक्वाशय और आमशय के घावों को भरने में मदद करते हैं और दर्द में राहत देते हैं। दूध भोजन के रूप में प्राकृतिक क्षार है। जो रोगी के पेट में अधिक अम्ल को समाप्त कर देता है। यह अम्ल ही इन घावों का मूल कारण है। साथ ही इसमें प्रोटीन व चिकनाई समुचित मात्रा में होते हैं इसलिये इसे रोगी को दिन में कई बार देना चाहिये। ऐसे रोगियों को अल्कोहल का किसी भी रूप में प्रयोग कदापि नहीं करना चाहिये। इनको धूम्रपान, चटपटे पदार्थ जैसे, मिर्ची, अचार और आम्लीय चीजें बिलकुल नहीं लेना चाहिये।

ऐसे रोगी चाहें तो दिन में केवल एक बार चाय या काफी ले सकते हैं परन्तु उसमें दूध की मात्रा ज्यादा होनी चाहिये।

मद्यपान

अल्कोहल की थोड़ी मात्रा पानी में भोजन के पहले लेने से भूख खुलकर लगती है जिससे अपोषण की दशा में विशेष लाभ होता है। इसी प्रकार वृद्धावस्था में सोने के पहले थोड़ी मात्रा में लेने से मनुष्य को पूरा विश्राम मिलता है। गाढ़ी नींद आती है। ठंडी जलवायु से वापस आने पर इसे उचित मात्रा में लेने से स्वास्थ्य लाभ होता है पर मनुष्य को इसके सेवन के बाद पूरा विश्राम करना चाहिये। अल्कोहल, प्रोटीन और चिकनाई के पचने में मदद करता है। इसमें शक्तिदायक गुण हैं, लेकिन इसका गलत इस्तेमाल उतना ही घातक हो सकता है। इसके सेवन के बाद उचित भोजन न लेने से यकृत को नुकसान पहुंचता है और पाचन क्रिया गड़बड़ हो जाती है। निरन्तर प्रयोग से मनुष्य आदि हो जाता है जो उसके लिये बड़ा हानिकारक है। वैसे तो लोग इसे शारीरिक थकान व चिन्ता को मिटाने के उद्देश्य से लेते हैं पर धीरे धीरे इसके आदि हो जाते हैं। इसके अन्य दुष्परिणाम स्वरूप रोगी के बहुमूल्य अंग जैसे हृदय, गुर्दे, यकृत क्षीण हो जाते हैं और जटिल समस्यायें पैदा हो जाती है।

धूम्रपान (SMOKING)

यद्यपि तम्बाकू में विद्यमान निकोटिन एक उत्तेजक के रूप में काम करता है और इसी लिए धूम्रपान करने वालों को क्षण भर के लिए ताजगी और आराम महसूस होता है परन्तु अन्ततोगत्वा यह घातक है। धूम्रपान करने वाले श्वास संस्थान के रोगों, जैसे छाती की सूजन (Bronchitis), फेफड़ों की सूजन के साथ दमा (Bronchial Asthma) और टी.बी. तथा हृदय रोग जैसे हृदय की धमनियों में रक्त का जम जाना (Coronary thrombosis) और दिमाग की धमनियों का फट जाना (Cerebral haemorrhage), पक्वाशय में घाव (Peptic Ulcer) आँखों की कमजोरी तथा पैर में गैंगरीन का बन जाना इत्यादि भयंकर रोगों के जल्द शिकार होते हैं।

पान के साथ तम्बाकू का चबाना

तम्बाकू में विद्यमान निकोटिन जीभ की श्लेष्मात्मक झिल्ली में फैली महीन रक्त नालिकाओं में, सीधे ही सोख ली जाती है जिससे निकोटीन से होने वाले दुष्प्रभाव और गम्भीर परिणाम जैसे आमाशय में घाव, जीभ व मसूड़ों में फोड़े और अन्त में कैंसर हो सकता है।

चाय और काफी का सेवन

चाय में 3 एलकेलॉयड क्रमशः कैफीन, थियोफाइलीन और थियोब्रोमीन होते हैं। कैफीन वैसे तो केन्द्रीय स्नायु मंडल को उत्तेजित करती है जिससे मनुष्य में कुछ घण्टे ताजगी रहती है और सिरदर्द में लाभ होता है। एक कप चाय में लगभग 150 मिली ग्राम कैफीन होती है। दूसरे दोनों तत्त्व थियोफाइलीन और थियोब्रोमीन का कोई खास फायदा नहीं है ये हृदय को उत्तेजना देते हैं और पेशाब साफ लाते हैं।

चाय का अत्याधिक सेवन

चाय में विद्यमान कैफीन विशुद्ध कैफीन से ज्यादा हानिकारक नहीं होती हैं। विशुद्ध कैफीन से हमारा मतलब एपीसी की टिकिया या अन्य दर्दनाशक दवाओं में विद्यमान कैफीन से है चाय में टैनिन नामक तत्त्व होता है जो प्रोटीन के पचने में विरोध उत्पन्न करता है उससे पाचन क्रिया गड़बड़ा जाती है। इस दोष को चाय में अधिक दूध और क्रीम डाल कर पीने से समाप्त किया जा सकता है। वैसे तो चाय 12 वर्ष तक के बच्चों को नहीं देनी चाहिये क्योंकि यह उनके नाजूक स्नायु मंडल को उत्तेजित कर देती है। यह आमाशय के घावों, बढ़े हुए रक्त चाप और पेचिश (संक्रामक) में निषिद्ध है।

काफी में भी कैफीन होती है और इसका असर भी चाय जैसा होता है काफी में टैनिन नहीं होता बल्कि इसमें उड़नशील तैल (Volatile oils)

होते हैं जो इसमें खुशबू पैदा करते हैं और भूख बढ़ाते हैं। यही इसमें और चाय में अन्तर है लेकिन इसके गुण तथा अवगुण दोनों चाय के ही समान हैं। जैसे तो चाय और काफी में शक्कर का प्रयोग स्वादिष्ट बनाने के लिए किया जाता है पर यह आवश्यक नहीं है, सामान्य व्यक्तियों में तथा बढ़े हुए रक्त चाप वाले रोगियों में दिन में एक या दो कप चाय या काफी नुकसान नहीं करती।

पाचन क्रिया

साल-फास पेट की सभी गड़बड़ियों के लिए बड़ी लाभकारी औषधि है। जिन लोगों की पाचन क्रिया कमजोर है उनके लिए **गैस्ट्रोमोन** विशेष दवा है। कभी कभी पाचन सम्बन्धी विकार अधिक अम्ल विकार के साथ होते हैं। ऐसे रोगियों के लिए सुबह शाम खाने के आधे घण्टे बाद **मैगनाइन** बड़ी लाभकारी है। अफारा, पेटदर्द या शूल दर्द का सीधा सम्बन्ध पेट की पाचन क्रियाओं से होता है। इस लिये सिद्धान्त रूप से ये तकलीफें खाना खाने के बाद तथा रात में होती हैं और इन्हीं दवाओं से (अकेले या सम्मिश्रित प्रयोग से) इलाज किया जा सकता है।

व्याप्तीकरण (ASSIMILATION)

जब कोई व्यक्ति ठीक से भोजन करे और उसका पाचन भी सही हो फिर भी यदि वह कमजोर और दुर्बल दिखाई पड़े तो समझ लेना चाहिए कि उसके शरीर में पचा हुआ भोजन नहीं लग रहा है दूसरे शब्दों में व्याप्तीकरण सही नहीं हो रहा है। ऐसी दशाओं में जो भी कारण हो उनका पता लगा कर इलाज करना चाहिये। हमारे **अल्बो-संग** और **गैस्ट्रोमोन** ऐसी दशाओं में काफी उपयोगी साबित हुए हैं।

असहनशीलता (ALLERGY)

कभी कभी सामान्य प्रयोग में आने वाली औषधियों या खाद्य पदार्थ

कुछ लोग नहीं सहन करने पाते हैं। ऐसी दशा में **गैस्ट्रोमोन** विशेष सहायक होती है।

शनै शनै सहनशील क्रिया (GRADUAL DESENSITIZATION PROCESS)

ऐसी औषधियां या खाद्य पदार्थ जो रोगी को सहन न होते हों उनको शुरू में सूक्ष्म मात्राओं में देना चाहिये और धीरे धीरे उनकी मात्रा शरीर की क्षमता के अनुसार बढ़ाते जायें। ऐसा करने से जो पदार्थ या दवायें किसी के लिये असहनीय (Allergic) हैं वे उसकी माफिक होने लगेंगी और शरीर उनको पूर्णरूप से स्वीकार करने योग्य हो जायेगा।

मलविसर्जन (ELIMINATION)

मलविसर्जन से हमारा अभिप्राय है कि कब्ज न होना। शरीर द्वारा अस्वीकृत भोज्य पदार्थ शरीर से मल के रूप में निष्कासित होते रहना चाहिये। वृद्ध एवं जीर्ण शरीर वाले व्यक्तियों में, नाजुक तबियत के लोगों में, गर्भवती स्त्रियों में, स्तनपान कराने वाली माताओं में कब्ज का इलाज बहुत ही सावधानी से करना चाहिये। मलविसर्जन की क्रिया को नियमित करने से मलनिष्कासन में बड़ी सहयता मिलती है। बार बार जुलाब या तेज दस्तावर चीजों के निरन्तर प्रयोग से आंतों में क्षीणता या खुशकी उत्पन्न हो जाती है और बाद में अनेक गम्भीर समस्यायें या अपोषण की शिकायत हो जाने का डर रहता है। **स्पोलैक्स**, **स्पोलैक्स-ई**, **अल्बोसांग** और **गैस्ट्रोमोन** को सही तरीके से प्रयोग करके बिना किसी हानिकारक प्रभावों के कब्ज को दूर किया जा सकता है। इन औषधियों से पोषणक्रिया में कोई हस्तक्षेप या गलत प्रभाव नहीं पड़ता। इसके अलावा **स्पोलैक्स** बवासीर में भी उपयोगी है। बच्चों और युवकों में कब्ज की और पाचन की शिकायत मूलतः असमय व लापरवही से होती है ऐसी दशाओं में **टैक्सीन** ज्यादा उपयोगी साबित होती हैं।

स्नायुविकार (NERVOUS-DISTURBANCES)

हमारे शरीर की सभी क्रियाओं का संचालन और नियंत्रण स्नायुमंडल द्वारा होता है। सभी दूसरे संस्थान जैसे श्वास संस्थान, हृदय क्रिया आँख और श्रवण इन्द्रियाँ और पेट में पाचन क्रियाएँ इसके पूर्ण नियंत्रण से चलते हैं। स्नायुमंडल से निकली विशेष नाड़ियाँ हृदय, पेट, अंतों व ज्ञानेन्द्रियों से जुड़ी होती हैं और इस स्नायु मंडल के किसी भी प्रकार की क्षति या कमजोरी या तनाव से इन अंगों के संचालन में बाधा पड़ती है, जिससे ये अपना सामान्य कार्य नहीं करने पाते। इसी प्रकार पाचन सम्बन्धी विकारों से स्नायु मंडल को उचित पोषण नहीं मिलने पाता और यह बुरी तरह प्रभावित हो जाता है। भावनात्मक आवेग, कब्ज या तनाव सीधे ही स्नायुमंडल पर बुरा असर डालते हैं।

कब्ज को साल-फास या स्पेलैक्स द्वारा दूर किया जा सकता है। मानसिक आवेगों को विटैसॉन द्वारा ठीक किया जा सकता है। कब्ज और मानसिक उत्तेजना में दूध और फलों का रस का सेवन या हल्के भोजन से बड़ी सहायता मिलती है।

मनोवैज्ञानिक उलझनों पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। वैसे तो सिद्धान्त रूप से अल्बोसांग और विटैसॉन का सेवन ऐसी दशाओं में लाभकारी होता है। साधारणतया अल्बोसांग के साथ विटैसॉन की एक या दो छोटी खुराकें खाना खाने के बीच में ही काफी हैं लेकिन जब विटैसॉन की ज्यादा मात्रा (जैसे 1 या 2 टिकिया) लेनी हों तो तरल खाद्य पदार्थ या फलों के रस से दें तो बेहतर होगा।

सन्निपात (DELIRIUM)

अमूमन ज्वर की दशा में यह आम बात है। इसलिये बीमारी के मूल कारण को ठीक कर देने से सन्निपात स्वतः ही ठीक हो जाता है। ऐसी सभी दशाओं में विटैसॉन देना चाहिए। बच्चों में इसे चिनियमको के साथ दें, तो उत्तम रहेगा।

एंठन के दौर (CONVULSIONS)

इनको विटैसॉन से ठीक किया जा सकता है लेकिन इसकी विशेष औषधि अगरको है जो शीघ्र इन दौरों पर काबू पा लेती है। ऐसे रोगियों को उचित नींद आना अति आवश्यक है।

अनिद्रा (INSOMNIA OR SLEEPLESSNESS)

इसका मूल कारण पाचन सम्बन्धी विकार चिन्तायें या भावनात्मक आवेग हैं। कभी कभी अधिक चाय, काफी या धूम्रपान भी अनिद्रा का कारण होते हैं। इसके अलावा तीव्र वेदना में भी नींद नहीं आती।

इसके अलावा जब रोगी नींद नहीं आने की शिकायत करें तो बड़े हुये रक्तचाप को भी ध्यान में रखना चाहिये। इसलिये सही अर्थ में अनिद्रा का सही इलाज मूल कारण के निदान से ही सम्भव है। अतएव मूल कारण का अध्ययन इलाज शुरू करने से पहले जरूरी है। तेज नींद की दवायें या नशीली औषधियों का सेवन, जब तक बहुत जरूरी न हो, कदापि नहीं करना चाहिये क्योंकि अंत में औषधियाँ मनुष्य को आदी बना देती हैं और घातक साबित होती हैं।

विटैसॉन (VITESSON)

सिर में तीव्र वेदना और नींद न आने में विटैसॉन विशेष रूप से उपयोगी है। इसकी एक ही खुराक से रोगी की मानसिक थकान व तनाव दूर होकर, ताजगी का अनुभव होता है। सोते समय एक खुराक से गहरी नींद आ जाती है और सुबह रोगी तरो ताजा हो जाता है।

सिर में तीव्र वेदना और अंगों में बाह्य पीड़ा (NEURALGIA & SUPERFICIAL PAINS)

जैसे दांत में, जोड़ों में, सिर में, वेदना हो तो डेसिल काफी राहत पहुंचाती है। साथ ही नींद न आने पर इसे विटैसॉन के साथ दिया जाना

चाहिये। **नोट:** डेसिल से पेट में जलन पैदा हो सकती है इस लिए पेट की तकलीफ यदि इन दर्दों के साथ हो तो **डेसिल** न दें।

मानसिक थकावट (NEURASTHANIA)

पहिचान और लक्षण

जब लम्बी बीमारी या किसी कारणवश शरीर से रक्त निकल जाता है या किसी विषाणु द्वारा शरीर में जहर वात हो जाता है या शरीर पर ज्यादा श्रम का बोझ पड़ता है तो शरीर तथा मस्तिष्क दोनों में बेहद थकान होने लगती है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के अनुसार ऐसी स्थिति में छिपा हुआ मानसिक बोझ भी रोगी में होता है। रोगी ऐसे लक्षणों को बताता है जिनके पीछे शारीरिक कारण समझ में नहीं आते। अधिकांशतया ऐसे में रोगी का स्वास्थ्य गिरता जाता है। जरा से श्रम से शरीर और दिमाग दोनों थक जाते हैं। बड़ी जल्दी पेट गड़बड़ हो जाता है और अंत में रोगी दुर्बलता और अपोषण का शिकार बन जाता है।

ऐसी अवस्था में रोग के मूल कारणों का निदान और चिकित्सा आवश्यक है। सबसे पहले रोगी के लिये वातावरण में परिवर्तन जरूरी होता है फिर टानिक, औषधियों तथा उचित खान पान द्वारा उसके स्वास्थ्य को ठीक करना चाहिये। ऐसी स्थितियों में दूध के साथ दिन में दो बार **अल्बोसांग** देने से आशातीत फायदा होता है। खाने के बाद **गैस्ट्रोमोन** की 2 टिकियाँ और सोते वक्त **विटसान** की 1 टिकिया देने से आराम मिलता है। अगर रोगी की भूख न खुली हो तो खाने से आधा घण्टे पूर्व 1 टिकिया **सालफ़ोस** देने से फायदा होगा। अगर कब्ज हो तो **स्योलैक्स** दे सकते हैं। संयुक्त प्रभाव से आश्चर्यजनक परिणाम मिलेंगे।

मिरगी (HYSTERIA)

पहिचान व लक्षण

यह वह बीमारी है जिसमें रोगी मानसिक आवेगों से बुरी तरह पीड़ित होता है और उसकी आत्मा में अन्दर ही अन्दर घुटन, लक्षणों के रूप में प्रकट होने लगती है। हॉलांकि इन लक्षणों के पीछे किसी बीमारी का सम्बन्ध नहीं स्थापित होने पाता।

ऐसे में रोगी मनो वैज्ञानिक रूप से परिपक्व नहीं होता और इस लिए कभी कभी वह बुनियादी छोटी छोटी बातों को लेकर अपने मानसिक रूप को झकझोर डालता है। ऐसे रोगी संवेदनशील होने के कारण, सहानुभूति और मनो वैज्ञानिक तरीकों से जल्दी ठीक किये जा सकते हैं जिससे उनकी मानसिक उलझन काफी समाप्त हो जाती है। भोजन, कार्य, निद्रा और मनोरंजन को नियमित करके उसके स्वास्थ्य में सुधार लाया जा सकता है। इलाज के लिए रोगी को खाने से पहले **अगरको** और खाने के बाद **अल्बो-सांग** दिन में 2 बार दें। सोते वक्त **विटसान** दें।

मूर्छा (EPILEPSY)

पहिचान व लक्षण

यह बीमारी अधिकतर बचपन से शुरू होती है। पर किसी को किसी भी उम्र में हो सकती है। यह कई प्रकार की होती है जैसे पेटिमल और ग्रैन्डमल किस्म की। दीर्घ कालीन दौरों में मूर्छा आने के पहले रोगी को एक विशेष प्रकार की चेतावनी जैसी महसूस हो जाती है। रोगी ऐंठने लगता है और यकायक खड़े या बैठे गिर पड़ता है। प्रायः ऐसे में चोट लग जाती है या वह घायल तक हो जाता है। मांसपेशियाँ तन जाती हैं, मुट्ठी बँध जाती हैं। चेहरा जो अभी तक पीला था, साँस के साथ साथ नीला या स्याह पड़ जाता है। कुछ क्षणों बाद मांसपेशियाँ झटके के साथ हिलती हैं, आँखों की पूतलियाँ घूमने लगती हैं, दाँत व जबड़े बँध जाते हैं ऐसे में जीभ कई जगह

से कट जाती है। ऐसे में कभी कभी रोगी का पाखाना व पेशाब तक निकल जाता है। धीरे धीरे रोगी अर्ध बेहोशी की अवस्था में आ जाता है। हाथ पैरों की ऐंठन समाप्त हो जाती है और रोगी कुछ घण्टों के लिये सो जाता है। जागने पर उसका दिमाग अव्यवस्थित दशा में बना रहता है उसे कुछ भी याद नहीं रहता कि क्या हुआ था।

मूर्छा का इलाज तभी सम्भव है जब रोगी चिकित्सक को पूर्ण सहयोग प्रदान करे। ऐसे रोगियों को ऐंठन निवारक और शामक जैसी विशिष्ट औषधियों की आवश्यकता होती है। उसके खान पान और आदतों की ओर ध्यान देना आवश्यक है। **अगर को** तथा **विटसाँन** मिलाकर खाली पेट दिन में ३ बार कम से कम 2 या 3 वर्षों तक नियम से देने से लाभ होगा। 3 वर्षों बाद रोगी की दवा धीरे धीरे कम करके इलाज समाप्त कर देना चाहिए। शरीर की प्रतिरोधक शक्ति को बनाये रखने के लिए **अल्बोसाँग** दें। यदि मूर्छा के साथ रोगी का रक्त चाप बढ़ा हुआ है और हृदय में दर्द रहता हो तो **अमीगलिया** दें। रोगी का आग के पास तथा पानी के स्थान जैसे कूएँ या तलाब या नदी में अकेले नहीं जाना चाहिए। दौरे की पूर्व चेतावनी के समय यदि सम्भव हो सके, तो दौरे के समय रोगी के मुँह में लकड़ी की कोई बड़ी चीज डाल दें ताकि रोगी जीभ न काटने पावे और यथा सम्भव यह प्रयत्न करना चाहिए कि रोगी को चोट आदि ना लगने पाये।

रक्त परिवर्तन (BLOOD-CHANGES)

रक्ताल्पता (ANAEMIA)

पहिचान और लक्षण

त्वचा, आँठ, पलकों का निचला हिस्सा पीला होना, कमजोरी, सुस्ती, थकान, दिल की धड़कन ज्यादा महसूस होना कभी कभी सांस फूलने लगे, भूख का न लगना, खाना न पचना आदि ये लक्षण शरीर में खून

की कमी को दर्शाते हैं। रक्ताल्पता या खून की कमी कई किस्म की होती है। अपोषण के कारण यह हो सकती है। शरीर में परजीवी (Parasitic) कीटाणु के प्रवेश हो जाने या शरीर से रक्त निकल जाने से भी यह हो जाती है। इल लिये सही इलाज के लिए वास्तविक कारण का पता लगाना आवश्यक है।

वेदना और पीड़ा

शरीर की तमाम व्याधियों या गड़बड़ियों के कारण उत्पन्न वेदना या दर्द और पीड़ा ही रोगी को डॉक्टर के पास फौरन जाने को मजबूर करती है। चिकित्सक को सफलता दर्द के निदान व कारण को जानने और तुरन्त उपचार देने में ही होती है। लेकिन कुछ रोगियों में पीड़ा को तुरन्त दबा देने से रोग के मूल कारण को पहचानने में परेशानी हाती है। रोग के असली कारणों पर परदा पड़ जाता है। जैसे पेरीटोनाइटिस (Peritonitis) के कारण होने वाला दर्द। पीड़ा भी हल्की, मध्यम और तेज होती है। पीड़ा की तीव्रता अंग विशेष की स्थिति पर निर्भर करती है जैसे अपेन्डीसाइटिस या सूजन का दर्द असहनीय होता है। इस लिए दर्द के कारणों पर विचार करना जरूरी है और कारणानुसार शल्य चिकित्सा या एन्टीबायोटिक्स का सहारा लेना चाहिए। जाहां एपेन्डीसाइटिस जैसे वेदना में तुरन्त आपरेशन करना हितकर होगा, वही सूजन के कारण होने वाली वेदना जैसे सिर दर्द, जोड़ों या गठिया का दर्द आदि में औषधि खिलाने से लाभ होगा।

जोड़ों की सूजन (Acute Inflammation of Joints)

ऐसे में जोड़ों में सूजन आ जाने से जोड़ अकड़ जाते हैं। चलना, फिरना, उठना, बैठना मुशिकल हो जाता है। ऐसे रोगियों के उपचार में मूल कारमों का पता लगाना जरूरी है - जैसे टान्सिलों में मवाद पड़ जाना, साइनूसेस आदि तो नहीं हैं। इनके विष के दुष्परिणामों के कारण जोड़ों में सूजन और दर्द हो जाने की सम्भावना होती है। ऐसी दशाओं में इन मूल कारणों के इलाज के लिये भी दवा देना चाहिए। **रेमोरिन** का इंजेक्शन 24

घण्टों में एक बार बड़ा लाभकारी रहता है। दर्द के कम हो जाने पर उस समय तक **डेसिल** देते रहें, जब तक रोगी को बिलकुल आराम न हो जाये। साथ ही जोड़ों को नर्म ऊनी कपड़ों से ढक कर रखें। यदि दर्द असहनीय हो तो **चेसाल** या **रबजान** की मालिश बड़ी लाभकारी होती है। सूजन के कम होते ही जोड़ खुल जायेंगे। साथ ही साथ पाचन क्रिया सही और पेट की सफाई होना जरूरी है। जब तक ज्वर रहे, रोगी को तरल खाद्य पदार्थ, दूध या फलों के रस पर ही रखना चाहिए।

मानसिक वेदना में **विटसाँन** को दर्द की औषधियों के साथ देना चाहिए।

अन्य दर्द की स्थितियाँ

इस श्रेणी में सिर दर्द, कान का दर्द, दांत का दर्द, कष्ट के साथ मासिक धर्म, नाक बन्द हो जाने से नजला, आपरेशन के बाद का दर्द और मांस पेशियों में दर्द आदि आते हैं। कई बीमारियों की शुरुआत में जैसे सर्दी लग जाने पर भी सिर दर्द रह रह कर होता रहता है। दूसरे अन्य कारणों में, खून की कमी, कब्ज का होना, आँख में जोर पड़ना, बेचैनी, घबराहट, आधा शीशी का दर्द, तेज रक्त चाप, गूदे सम्बन्धी रोग, दाँत, कान, नाक और गले के रोग आते हैं।

रोग के मूल कारण का इलाज जरूरी है। वैसे तो सिर दर्द की दवाओं में **डेसिल** द्वारा तुरन्त राहत रोगी को दी जा सकती है। माथे पर **रबजान** की मालिश भी राहत देती है। सोते वक्त **विटसान** सहायक होती है।

पेट और आंतों में दर्द

पचा हुआ भोजन तरल या अर्ध तरल रूप में छोटी आंतों में ही सोख लिया जाता है। इसी प्रकार सभी दवायें अधिकांशतया छोटी आंतों द्वारा ही सोखकर शरीर में पहुंचती हैं। यह क्रिया पानी द्वारा तेजी से सम्पन्न होती है।

वैसे तो भूख स्वभाविक रूप से महसूस होना एक अच्छी बात है लेकिन कुछ मधुमेह (Diabetes mellitus) के रोगियों में भूख तो ज्यादा लगती है पर यह झूठी भूख होती है क्यों कि रोगी जितना खाता है वह उसके शरीर में व्याप्त नहीं होता। यदि ऐसे रोगी को यकृत की खराबी या पेट में अपचन की शिकायत हो या पेट में कीड़े हों तो भी वह झूठी भूख का शिकार हो जाता है।

भूख लगना और पाचन होना अलग अलग चीजें हैं। समुचित पाचन का अर्थ है, भोजन में विद्यमान कार्बोहाइड्रेट, चर्बी, प्रोटीन, विटामिन और खनिज लवणों का उचित रूप से शरीर में व्याप्त होना। हाँलाकि स्वाभाविक भूख से पाचन में मदद मिलती है इसीलिए पेट और आँतों में होनेवाले विकार, भूख के न लगने तथा पाचन क्रिया ठीक से न होने से सम्बन्धित होते हैं। हर एक को यह मालूम होना चाहिए कि बिना चबाये खाने को जल्दी जल्दी निगल जाना तथा क्षमता से ज्यादा खा जाना, दोनो ही पाचन क्रिया में बाधक हैं। खाते वक्त चिन्तायें और नींद का न आना भी पाचन क्रिया में गतिरोध उत्पन्न करते हैं।

इस लिए संयम का जीवन जैसे समय पर भोजन करना और उचित व्यायाम आदि ही पाचन क्रिया को सही रखते हैं।

पेट और अन्तड़ियों के विकार पाचन क्रिया से शुरु होते हैं, जो कि मुह में भोजन के चबाने से शुरु होकर पेट और आंतों तक चलती है। पाचन क्रिया वह क्रिया है जिसके द्वारा हमारा भोजन शरीर के रक्त में व्याप्त होने लायक बनता है और कोष तन्तुओं में पहुंच कर शक्ति प्रदान करता है। इसमें भोजन पहले दाँतों द्वारा छोटे छोटे टुकड़ों में किया जाता है जिससे इस पर दूसरे पाचक रस काम कर सकें मुँह में लार ग्रन्थियों (Salivary Glands) द्वारा लार (Saliva) बनाया जाता है जो भोजन में मिलकर उसे पाचन योग्य बना देता है। साथ ही लार भोजन के स्टार्च को पचा देता है। इसी लिए जब भोजन चबा कर नहीं खाया जाता तो भोजन का पाचन

मुश्किल हो जाता है और यही काम जो लार करता है, पेट को करना पड़ता है। अब आप यह समझ गए होंगे कि हम भोजन को चबाने के लिए क्यों जोर देते आये हैं।

पेट में अर्धपचा भोजन कई रासायनिक क्रियाओं से होकर गुजरता है और पाचक रसों द्वारा इसके प्रोटीन तत्वों पर जो कार्य होता है। उससे वह साधारण योग्य तत्वों में बदल जाता है। जब आमाशय में स्थित भोजन एक निश्चित अम्लत्व की दशा में पहुंच जाता है तब यह पक्वाशय (Duodenum) से होता हुआ छोटी आंत में पहुंच जाता है। यहाँ पित्त रस व पैंक्रियास से निकले पाचक रस तथा आँत में विद्यमान पाचक रस भोजन को पचाते हैं और अंत में पचा हुआ भोज्य पदार्थ छोटी आँत के कोषों द्वारा सोख लिया जाता है। यहाँ से रक्त के माध्यम से ये तत्व यकृत में पहुंचते हैं जहाँ शरीर में व्याप्त होने से पूर्व इन पर कुछ जीवनी क्रियायें होती हैं। भूख की कमी, कब्ज तथा गैस एकत्रित होने के साथ भूख न लगने की शिकायत में **हरबीटार्स** की सिफारिश की जाती है।

अजीर्ण (DYSPEPSIA)

ऐसी दशा में खाना खाने के आधा घण्टा बाद **गैस्ट्रोमोन** देने कि सिफारिश की जाती है। इसे पानि से दें। यदि अजीर्ण के साथ भूख न लगना या खाना न पचने की शिकायत भी हो तो आवश्यकतानुसार **स्पौलैक्स** या **साल फ्रास** भी दें। कमजोर रोगियों के लिये **अल्बो-सांग** शक्ति देने के लिए काफी सहायक सिद्ध होता है। शारीरिक श्रम न करने वाले व्यक्तियों के लिए इन दशाओं में खाने से पहले टहलना लाभकारी होगा।

अफारा (FLATULENCE)

आम तौर पर अफारा की शिकायत पेट में खाना न पचना कब्ज या जरूरत से ज्यादा खाने से उत्पन्न होती है। कभी कभी वायु के निगल जाने से भी यह पैदा हो जाती है। रोग के मूल कारण को ठीक कर देने से निदान

हो जाता है। नियमानुसार एक टिकिया **साल फ्रास** खाने के आधे घण्टे पूर्व और खाने के पश्चात **गैस्ट्रोमोन** की एक टिकिया अफारा उत्पन्न नहीं होने देगी। खाते समय पानी का सेवन बिलकुल न करें।

पक्वाशय में घाव (PEPTIC-ULCERS)

इसके अन्तर्गत आमाशय व पक्वाशय में घाव आते हैं। इस रोग में पेट के अगले भाग में या पक्वाशय के भाग में रह रह कर दर्द होता है। दर्द की जगह मूलायम पड़ जाती है। आमाशय में घाव की दशा में खाना खाने के तुरन्त बाद दर्द होने लगता है क्यों कि खाना जलन पैदा करता है और यही दर्द के रूप में महसूस होता है। पक्वाशय में घाव की दशा में खाना खाने के आधा घण्टे के बाद पेट में दर्द पैदा होता है क्योंकि खाना पक्वाशय में करीब आधा घण्टे बाद आमाशय से पहुंचता है। यही दोनों दशाओं में पहिचान व अन्तर है लेकिन दोनों दशाओं के पिछे मूल कारण अधिक अम्ल का पैदा होना ही है। इस लिए **मैगनीन** जैसी दवायें इलाज में प्रयुक्त की जानी चाहिये। **मैगनीन** को चार घण्टे के अन्तर पर देना उपयुक्त होगा। **गैस्ट्रोमोन** को भी खाना खाने के 1 घण्टे पूर्व या खाने के 2 घण्टे पश्चात दें। ऐसे रोगियों को मद्यपान तथा धुम्रपान बिलकुल नहीं करना चाहिये।

उनको सादा खाना खाने की सलाह दी जाती है। मिर्च मसाला या अचार जैसी चीजें बिलकुल नहीं लेनी चाहिये। खाना भली प्रकार चबाकर खाना चाहिए साथ ही ऐसे रोगियों को खाने से पूर्व दूध तथा खाने के एक या आधे घण्टे बाद खूब पानी पीना चाहिए। इलाज भी कम से कम 6 माह तक करना चाहिये।

गम्भीर दशाओं में रोगी को दर्द काफी होता है और कभी कभी उल्टी होने से यह शान्त हो जाता है। यदि चिकित्सा से सन्तोषजनक परिणाम न मिले तो किसी अच्छे शल्य चिकित्सक द्वारा आपरेशन करा लेना उत्तम होगा।

आमाशय में सूजन (GASTRITIS)

गलत भोजन के कारण आजकल यह आम शिकायत हो गयी है। इसमें रोगी को उल्टी और पेट में दर्द होता है और प्यास बहुत लगती है। अगर आमाशय की सूजन आँतो तक फैल जाये तो इसे गैस्ट्रोएन्ट्राइटिस (Gastroenteritis) कहते हैं। इसमें रोगी को पतले दस्त बार बार आते हैं बहुत प्यास लगती है। कभी कभी रोगी की मृत्यु तक हो जाती है। इस लिए ऐसे रोगियों की चिकित्सा काफी सावधानी से करनी चाहिये। बर्फ चुसने से अल्टी पर काबू पाया जा सकता है। दस्तों के साथ पेट दर्द में निम्नलिखित चिकित्सा अपनार्यें।

रोगी का खाना कुछ समय के लिए बिलकुल रोक दें। केवल पानी और अन्य तरल पदार्थ पर रोगी को रखें। चार चार घण्टे पर **मेगनीन** व **डयासिन** की 1-1 टिकिया दस्तों को रोकने के लिए दें। जब रोगी को राहत मिल जाये तो 4-4 घण्टे पर **अल्बो-सांग** के साथ हल्के सुपाच्य भोज्य पदार्थ दें।

पेचिश व पतले दस्त (DIARRHOEA)

इसमें रोगी को सामान्य से ज्यादा पतले दस्त बार बार आते हैं। इसके पीछे मूल कारण अनेक हो सकते हैं जैसे अपचन, संक्रामक किटाणुओं का (Amoebic or bacillary) शरीर में प्रवेश हो जाना आदि। जो भी हो, मूल कारण का पता लगा कर इलाज उसी प्रकार करना चाहिए। **डयासिन** दोनों प्रकार की संक्रामक पेचिश (Amoebic & Bacillary) में समान रूप से लाभकारी है।

अमीबिक पेचिश (AMOEBIC DYSENTRY)

इस में बार बार पतले दस्त होते हैं। पेट में तीव्र ऐंठन के साथ दस्त में म्युकस व खून आता है।

बैसिलरी पेचिश (BACILLARY DYSENTERY)

इस में दस्त पानी समान होते हैं और शरीर में पानी की कमी (Dehydration) के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं।

ताजे दस्तों के पैथोलॉजिकल जांच से ही दोनों प्रकार की पेचिश में पहचान की जा सकती है।

चिकित्सा के लिए 4-4 घण्टे पर **डयासिन** दें। रोगी को बिस्तर पर पूरा आराम करना चाहिए और केवल तरल पदार्थ ही दें। हो सके तो साबूदाना दूध में उबाल कर दें। रोगी की स्वच्छता पर विशेष ध्यान देना चाहिये और उबाला हुआ पानी अधिक से अधिक देना चाहिए। स्वच्छता से हमारा अभिप्राय यह है कि मल मूत्र त्याग करने की जगह स्वच्छ हो, खाने की वस्तुएँ मक्खियों तथा धूल से बचायी जायें, बिस्तर व सोने की जगह स्वच्छ हो आदि।

डयासिन की टिकिया कम से कम 3 दिन तक देते रहें साथ में **डयासिन** का इंजेक्शन दिनमें 1 बार दें। गर्मियों में होने वाली पेचिश में **गेसट्रोमोन** तथा **चिनियमको** को मिलाकर नींबू के पानी से देना अधिक श्रेष्ठ होगा। पेचिश ठीक होने के बाद **सालफ्रास** की छोटि खुराकें भूख को वापस लाने व पाचन शक्ति को पुनः संचारित करने में काफी सहायक होती है।

अपेन्डीसाइटिस (APPENDICITIS)

यह एक ऐसी गम्भीर दशा होती है जिसमें शल्य चिकित्सा की तुरन्त आवश्यकता होती है। शुरु की अवस्था में एन्टीबायोटिक औषधियों से चिकित्सा की जा सकती है पर बेहतर यही रहता है कि किसी सर्जन की सहायता ली जावे। रोगी को एनिमा और जूलाब या रेचक (Purgatives) बिलकुल नही देना चाहिये।

संग्रहणी (SPRUE)

जब शरीर में भोजन तत्त्व व्याप्त नहीं होने पाते तब असंतुलन से यह विकार हो जाता है। इसके प्रमुख लक्षण हैं पतले दस्त, शारीरिक दुर्बलता और बराबर वजन का गिरते जाना। रोगी का मल पीला बहुत मात्रा में, चिकना और बदबूदार होता है। इसे कई स्तरों में ठीक किया जा सकता है (1) खान पान चिकित्सा (2) शरीर के जलाभाव (Dehydration) को संतुलित करना (3) रोगोपरान्त दुर्बलता को ठीक करना।

गेस्ट्रोमोन की एक टिकिया दिन में 2 बार और अल्बो-सांग व विटसाँन खाने से पूर्व दिन में 2 बार देने की सिफारिश की जाती है। ज्यादा श्रेष्ठ होगा कि रोगी को केवल दूध तथा फलों पर ही रखा जाये। कार्बोहाइड्रेट व चिकनाई वाले पदार्थ बिलकुल निषिद्ध हैं।

आँतों की वेदना (शूल) (INTESTINAL COLIC)

आँतों की ऐंठन के कारण यह वेदना (शूल) होती है। यह आँतों में मल की रुकावट (कब्ज के कारण) या गैस के इकट्ठा हो जाने से होती है। यह वेदना आम तौर से पेट के निचले भाग में होती है और दबाने से राहत मिलती है। कभी कभी इस वेदना के साथ साथ पतले दस्त या कब्ज की शिकायत भी होती है। ऐसे रोगी को साफ व शान्त वातावरण में रखना चाहिये। खाना बिलकुल नहीं देना चाहिये। यदि आँतों में सूजन ज्यादा हो तो अस्पताल में रोगी को रखे। वैसे गर्म पानी की बोतल या रबड़ की थैली से वेदना की जगह पर सिकाई करने से गैस निकलने में सहायता मिलती है। साल-फास अफारा को कम करती है साथ ही कब्ज को भी दूर करती है। पतले दस्तों में डयासिन या स्पोलैक्स दें।

कृमि (WORMS)

आंतों में पाये जाने वाले कृमियों में केचुआ, सुई की नोक वाले कृमि, धागे की शक्ल वाले कृमि और हुकवर्म ज्यादातर पाये जाते हैं। कृमि वाले

रोगी में या तो झूठी भूख लगती है या फिर भूख गायब हो जाती है। रोगी (जिनमें बच्चे अधिक होते हैं) के प्रधान लक्षणों में चिड़ चिड़ाहट दाँतों का पीसना, बढ़ा हुआ पेट, भूख का न होना, दौरे आना, हल्का बुखार और रक्त की कमी आदि हैं।

यकृत व प्लीहा (LIVER & SPLEEN)

यकृत शरीर का बहुत महत्वपूर्ण अंग है जो कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन और चिकनाई के व्याप्रीकरण में बहुत ही बड़ा योगदान देता है। यकृत के बढ़ जाने के कई कारण होते हैं जैसे मलेरिया, चिकनाई का अधिक प्रयोग, यकृत में सूजन आदि। यकृत के सामान्य न होने से भूख नहीं लगती, जीभ में कड़वा स्वाद, पित्त रस का बढ़ जाना जिससे उल्टी महसूस होती है, कब्ज या फिर पतले दस्त आते हैं। इलाज करने से पूर्व मूल कारण का पता लगाना जरूरी है और रोगी की पूरी तरह जांच होनी चाहिये। ऐसे रोगियों को संतुलित हल्का सूपाच्य चिकनाई रहित भोजन, फलों के रस और मक्खन निकाले हुये दूध पर रखना लाभकारी होगा। चिकित्सा की सफलता भोजन के पचे हुए भाग के शरीर में व्याप्त होने पर निर्भर करती है। रोगी को पूर्ण विश्राम और मानसिक शान्ति मिलना जरूरी है। शराब, तली हुई वस्तुएं या चिकनाई से भरपूर खाद्य पदार्थ या ज्यादा तेल मिर्च मसाले बिलकुल निषिद्ध हैं। रोगी को साफ दस्त आना भी जरूरी है। रोगी में भूख लगना और भोजन का पचने लगना रोग के अचेछे होने के लक्षण हैं। इसके लिये साल फ्रास, गेसट्रोमोन और हरबीटार्स काफी लाभदायक हैं। यह औषधियाँ बच्चों के लिए छोटी खुराकों में दी जानी चाहिए। अल्बो-सांग बीमारी के बाद होने वाली शारीरिक दुर्बलता के लिये लाभकारी है।

पित्ताशय में पथरी (GALL-STONES)

कभी कभी पित्ताशय में पड़ने वाली पथरी गम्भीर समस्यायें उत्पन्न कर देती है। क्योंकि कभी कभी यह पथरी इतनी बड़ी होती है कि यह पित्तनली का मार्ग रोक देती है। जब ऐसा हो जाता है तो रोगी को पित्तशूल

(Biliary colic) का दौरा पड़ता है। इसमें अकस्मात दायीं ओर पसलियों और कंधे में दर्द होने लगता है। गम्भीर अवस्था में रोगी को पसीना छूटने के साथ उल्टी आती है और पल्स घटती बढ़ती महसूस होती है। त्वचा पीली पड़ जाती है और आंखें भी पीली हो जाती हैं अन्य पीलिया के लक्षण भी शरीर में उत्पन्न हो जाते हैं। रोगी को भोजन की ओर ध्यान देना आवश्यक है। रोगी का कब्ज **हरबीटार्स** द्वारा दूर किया जा सकता है। हर हालत में ज्यादा भोजन नहीं करना चाहिये। चिकनाई वाले सभी पदार्थ वर्जित हैं। हरी सब्जियां तथा फल खूब खाना चाहिये। हल्का व्यायाम जैसे टहलना आदि लाभदायक हैं।

प्लीहा (SPLEEN)

मलेरिया से उत्पन्न दोषों में बढ़ी हुई प्लीहा या तिल्ली आम तौर से पायी जाती है। इसकी चिकित्सा के लिये दो सप्ताह तक विषम ज्वर हर औषधियों और **हरबीटार्स** का प्रयोग करना चाहिये। अल्बो-सांग एक आदर्श टानिक के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके सेवन से ऐसी दशा में उत्पन्न रक्ताल्पता, कमजोरी और भूख की कमी आदि दूर हो जायेंगे।

संक्रामक रोग

मलेरिया (Malaria)

मलेरिया बुखार के दौरे को तीन भागों में बांटा जा सकता है जैसे-

(1) शीत अवस्था (Cold stage) यह 1/2 से 2 घन्टे तक रहती है। रोगी को सिर दर्द और पीठ व हाथ पैरों में भीषण दर्द के साथ कंपकपी होती रहती है। रोगी को इतना जाड़ा लगता है कि वह दांत बजाने लगता है और शरीर में अत्यधिक ठंडक महसूस होती है।

(2) उष्ण अवस्था (Hot stage) यह करीब चार घन्टे तक रहती है। शरीर तपने लगता है रोगी सन्निपात में आ जाता है।

(3) पसीना छूटने की अवस्था (Sweating stage) यह अवस्था 1 से 2 घन्टे तक रहती है। रोगी का शरीर पसीने से नहा जाता है। शरीर का तापमान गिर जाता है और रोगी को दर्द व बेचैनी से आराम आ जाता है। इस प्रकार के दौरे मलेरिया के कीटाणु की जाति पर निर्भर करते हैं जैसे कि दौरे रोज आयें या एक दिन छोड़कर एक दिन पर या प्रत्येक चौथे रोज आयें।

सुजाक (GONORRHOEA)

सुजाक एक औपसार्गिक (Venereal) रोग है जो गोनोकाकल बैक्टीरिया द्वारा उत्पन्न होता है। इसमें मूत्रसंस्थान से सम्बन्धित सभी अंग जैसे गुर्दे, पेशाब नली व थैली आदि सभी प्रभावित हो जाते हैं। इसमें पेशाब के अंग में सूजन आ जाती है और पेशाब जलन के साथ रुक रुक कर आता है और साथ में गाढ़ा तरल पदार्थ निकलता रहता है। यदि शुरु में इसका निदान कर लिया जाये तो इस भयंकर रोग के दौरे कम किये जा सकते हैं। लेकिन इसकी उपेक्षा करने पर यह गम्भीर दशा में अन्य रोगों को जन्म देता है जैसे जोड़ों में दर्द, आँख व हृदय के रोग आदि। इन सभी अवस्थाओं में **अयोबिन** और **ब्रह्मडाइन**-प्रत्येक की एक एक टिकिया दिन में 2 बार लगातार 2-3 माह तक देते रहना चाहिये। **अल्बो-सांग** कमजोरी को दूर करने में सहायक है। जलन के साथ रूक रूक कर पेशाब आने पर व मासिक स्राव होने पर प्रत्येक चार घन्टे पर **हेमोप्लेक्स** देने से लाभ होगा। समय समय पर पेशाब कि जांच होना जरूरी है क्योंकि मवाद रूक जाने से ही चिकित्सा पूर्ण नहीं समझना चाहिए।

स्त्रियों में सुजाक होजाने में तेजी से आन्तरिक व बाह्य चिकित्सा होनी चाहिए। स्वच्छता पर विशेष ध्यान देते हुए उपरोक्त चिकित्सा ही अपनाये।

भोजन की ओर भी ध्यान देना आवश्यक है। भोजन हल्का हो और मद्यपान वर्जित है। दिन में 3 बार **अल्बो-सांग पाऊडर** का एक चम्मच लाभकारी होगा।

उपदंश (SYPHILIS)

ट्राइपोनीमा पालाडियम नामक कीटाणु द्वारा यह उत्पन्न होता है। इस रोग के प्रमुख लक्षणों में जननांगों में दर्द व अन्य दोष शामिल हैं। सहवास के कुछ दिनों बाद जननांग पर एक दाना निकल आता है जो कि बाद में बढ़ता जाता है और सख्त होता जाता है। अगल बगल की ग्रन्थियाँ भी बढ़ जाती हैं और सख्त हो जाती हैं। यह प्रारम्भिक दशा कहलाती है। दूसरी अवस्था में ग्रन्थियों के बढ़ जाने के साथ दूसरे अँगों में सूजन और बुखार आने लगता है। रोगी को बेचैनी अब होने लगती है। तीसरी अवस्था में स्नायु संस्थान प्रभावित होने लगता है जिसके फलस्वरूप पक्षाघात या लकवा मार जाने की भी संभावना बढ़ जाती है।

इस रोग के लिए विशेष रूप से **अयोबिन** की सिफारिश की जाती है। एक सप्ताह तक दिन में एक इंजेक्शन दें और साथ में **अयोबिन** की टिकिया भी खिलायें। घावों में **हेमोप्लेक्स** की टिकिया को पीस कर मलहम बनायें और लगायें। दिन में 3-4 बार **हेमोप्लेक्स** की 1 टिकिया दें और शरीर में लक्षण समाप्त होने पर दिन में केवल 2 बार देते रहें। कुछ समय तक **अयोबिन** और **हेमोप्लेक्स** साथ साथ दे। **अयोबिन** उपदंश की सभी अवस्थाओं के लिए लाभकारी है चाहे लक्षण प्रत्यक्ष हों या अप्रत्यक्ष।

छाती व फेफड़ों के संक्रामक रोग (CHEST & LUNG INFECTIONS)

फेफड़ों की सूजन (Bronchitis)

लक्षण व चिन्ह

फेफड़ों की सूजन (Bronchitis) श्वास संस्थान के ऊपरी भाग का रोग है। शुरुवात में रोगी को बेचैनी और छाती में खिचावपन महसूस होती है। सूखी खाँसी के दौरों के साथ ज्वर आ जाता है। धीरे धीरे सुखी खाँसी में बलगम आने लगता है। इससे छाती में दर्द कम होने लगता है और साँस लेने में भी आराम मिलने लगता है। फिर ज्वर बढ़ने लगता है। खाँस लेने

में परेशानी होती है और छाती में से खड़खड़ की आवाज या उबलने की आवाज (खुदबुद शुदबुद की आवाज) आने लगती है।

चिकित्सा

इस अवस्था में तुरन्त इलाज होना चाहिये। **काफिलिन** प्रत्येक 4 घण्टे से दें। तेज ज्वर में **हेमोप्लेक्स** मिला दें। रोगी को कुछ दिन बिस्तर पर आराम करना चाहिए और पानी तथा तरल भोज्य पदार्थ पर रखना चाहिए। छाती पर **चेसोल** या **रब्जान** की मालिश व पीठ के हिस्से में, भी मालिश करें। इस से लाभ होगा। इससे सिकाई की आवश्यकता नहीं होगी। गम्भीर दशा में **मेडीटैब** दें।

प्लूरिसी (PLEURISY)

लक्षण व चिन्ह

इस में छाती में सुई चुभाने जैसा दर्द होता है जो कि साँस लेते समय तथा खाँसते समय बढ़ जाता है। दौरों के समय जाड़ा लगता है और रोगी का तापमान 101° फ़ैरनहाईट हो जाता है। जैसे जैसे फेफड़ों के आवरण के भीतर पानी की कमी आती है, दर्द कम हो जाता है लेकिन साँस लेने में कठिनाई बनी रहती है। रोगी का तापमान कम नहीं होता, कभी कभी खाँसी आती है। अगर अधिक जाड़ा देकर बुखार उतरता रहता है और बाद में पसीना छूटता हो तो फेफड़ों में मवाद पड़ जाने का (Empyema) अन्देशा रहता है। छाती का स्किग्राम (Skiagram) करवा कर रोग की पुष्टि कर लेना चाहिए।

चिकित्सा

छाती में मवाद पड़ जाने (Empyema) की अवस्था में शारीरिक व्याधियों के साथ दुर्बलता आ जाती है जिससे रोगी का वजन घट जाता है। इस दशा में शल्य चिकित्सा द्वारा मवाद को साफ कर एन्टीबायोटिक

औषधियों को इन्जेक्शन द्वारा देना चाहिए। **हेमोप्लेक्स** इस दशा के लिये विशेष औषधि है। सुबह शाम छाती पर **चेसोल** की मालिश न केवल बाह्य दर्द को समाप्त करेगी बल्कि रोग के उपचार में भी सहायक होगी। ऐसी दशा में रोग प्रतिरोधक शक्ति को बनाये रखने में **अल्बो-सांग** विशेष सहायक होता है। कभी कभी तो रोगी को टी.बी. का इलाज भी कुछ समय तक देना पड़ सकता है।

राजयक्ष्मा (TUBERCULOSIS)

टी.बी. के रोगियों का वैसे तो सर्वोत्तम इलाज सैनीटोरियम में होने पाता है। इन रोगियों को पूर्ण विश्राम की आवश्यकता होती है। बुखार तथा खाँसी की अवस्था में पोषक आहार भी अति आवश्यक है। रोग के आरम्भ की दशा में रोगी कमजोर होता जाता है और बड़ी जल्दी थकान महसूस करने लगता है। उसको भूख नहीं लगती और रात्रि में पसीना काफी आता है। हल्की परन्तु स्थायी खाँसी शुरू हो जाती है। रक्त की कमी इस रोग की एक स्थायी पहिचान है। जैसे जैसे रोग बढ़ता जाता है, शाम को बुखार तेज हो जाता है और कमजोरी तथा पसीना आना भी बढ़ते जाते हैं। अब खाँसते समय दर्द भी होने लगता है और दौरे तेज होते जाते हैं। बलगम गाढ़ा होता जाता है और उसमें खून के चिन्ह होते हैं।

ऐसी अवस्था में हम **अल्बो-सांग** की सिफारिश करते हैं। क्योंकि यह रोगी में विशेष रूप से टी.बी. और सामान्य रूप से सभी रोगों के प्रति शरीर की प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाता है। सत्य तो यह है कि टी.बी. की शुरूआत में **अल्बो-सांग** अन्य औषधियों के साथ काफी होता है। अगर रोगी को सैनिटोरियम नहीं भेजा जा सकता है तो उसे बाग की खुली हवा में रहना चाहिए। खाँसी के लिए **मेडीटैब** की छोटी खुराके दें। खून को रोकने के लिए **चिनियमको** और **विटसान** दें। वजन की कमी को दूर करने के लिए भी **चिनियमको** और **विटसान** दें। वजन की कमी को दूर करने के लिए फलों का रस, दूध और टॉनिक का सेवन करावें।

कुकुर या काली खाँसी (WHOOPING COUGH)

लक्षण व पहिचान

यह बचपन में होने वाला एक संक्रामक रोग है। यह हल्की खाँसी और ठन्ड के साथ बुखार से शुरू होता है। प्रथम चरण करीब एक सप्ताह तक रहता है फिर अजीब ढंग की खाँसी होने लगती है। थोड़ी थोड़ी देर में खाँसी के दौरे आते हैं जैसे कुत्ता गुर्गता है वैसे ही आवाज के साथ “हूप” बच्चे में सुनाई पड़ते हैं। ये हठीली खाँसी के दौरे उस समय तक आते रहते हैं जब तक बच्चा उल्टी नहीं कर देता या चिपचिपा श्लेषात्मक म्त्राव उसके मूख से नहीं निकल जाता है। ये दौरे अधिकांशतया खाने के बाद या रात में सोने के पहले आते हैं। दौरों के समय आँखे बाहर निकल आती हैं और लाल हो जाती हैं। साथ ही साथ पेट में दर्द, नाक से खून बहना, मिर्गी के दौरों के समान हालत हो जाती है, कभी कभी सांस फूलने लगती है।

चिकित्सा

चूँकि रोग संक्रामक है और बच्चे बड़ी जल्दी इस का शिकार हो जाते हैं इस लिए सावधानी के तौर पर रोगी को बिलकुल अलग रखना चाहिये। रोगी को बुखार के समय बिस्तर पर हवादार कमरे में रखना चाहिये। यदि उल्टी ज्यादा हो तो रोगी को केवल दूध पर रखना चाहिए। नियंत्रित पथ्य और हल्के आहार से उल्टी पर काबू पाया जा सकता है। **डान्जिन** काली खाँसी की उपयुक्त औषधि है यह दौरों को कम कर राहत देगी। साथ में **विटसान** देने से दौरों की हठीली प्रवृत्ति कम हो जायेगी। छाती व पसलियों पर **चेसोल** की हल्की मालिश से भी राहत मिलेगी। **डेसिल** दर्द की हालत में दी जा सकती है।

मधुमेह (DIABETES)

यह रोग पैक्रिएस (Pancreas) की कार्य शिथिलता या खराबी से होता है और इसमें शरीर में भोजन के पोषक तत्व जैसे कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन

तथा चिकनाई का शरीर में व्यापतीकरण नहीं होने पाता। अधिक प्यास, अधिक भूख और पेशाब का बार बार होना इसकी पहिचान है। रोगी के रक्त में शर्करा का स्तर बढ़ सकता है (Hyperglycemia) या पेशाब में शर्करा आ सकती है (Glycosuria) इस रोग का सम्बन्ध पाचन संस्थान तथा शारीरिक क्रियाओं की गड़बड़ियों से है। ऐसी रोगी देखने में तो दूबले पतले होते हैं पर उनको भूख बहुत लगती है। उसको मांस पेशियों में कमजोरी मानसिक उत्कंठा (Depression) महसूस होते हैं और वह स्वभाव से चिढ़चिढ़ा हो जाता है। उसका मुँह, ओठ और त्वचा शुष्क हो जाते हैं। इस रोग से अन्य विकार जैसे रक्त चाप का बढ़ जाना या नेत्र दोष या शरीर के अंगों की हानि आदि हो सकते हैं। कभी कभी स्नायु मंडल भी प्रभावित हो सकता है। मधुमेह का इलाज (1) नियंत्रित आहार (2) हल्का व्यायाम और (3) औषधियों के माध्यम से ही सम्भव है।

आहार पर नियंत्रण रोगी के वजन और रोग की दशा पर निर्भर करता है। काम काजी रोगियों को समुचित आहार की आवश्यकता होती है। मधुमेह के रोगियों के लिये टहलना सर्वश्रेष्ठ व्यायाम है। भोजन में बिना शक्कर तथा चिकनाई का दूध, डबल रोटी या चपाती और थोड़ा सा चावल व हल्की चिकनाई होनी चाहिये। काफी मात्रा में चावल, शक्कर, स्टार्च से बने पदार्थ, आलू, केला और आम आदि जहां तक हो, नहीं सेवन करना चाहिए। हाँ यदि पेशाब की परीक्षा करने पर शक्कर बिलकुल न पायी जाये तो ये चीजों बहुत जरारी मात्रा में ली जा सकती हैं। दिन में एक या दो रसदार फल दिये जा सकते हैं। मधुमेह के लिए **मर्सिना** विशेष औषधि के रूप में इस्तेमाल की जानी चाहिए। प्रथम सप्ताह में इसकी 2 से 4 कैप्सूल कि एक खुराक दिन में 3 बार देनी चाहिए। जैसे जैसे पेशाब के परीक्षक द्वारा शक्कर का स्तर कम होता जाये, वैसे इसकी खुराक घटाकर 1 से 2 कैप्सूल कर देनी चाहिए और दिन में 2 बार ही दें। रक्त में शर्करा की जांच समय समय पर होना आवश्यक है।

लेकिन मानसिक आवेग तथा चिड़ चिड़ापन के लिए **मर्सिना** को **विटसान** के साथ देने की सिफारिश की जाती है। वजन गिरने के लिए तथा मांस पेशियों की कमजोरी के लिए **अल्बो-सांग** की 1 या 2 टिकियाँ काफी लाभदायक सिद्ध होती हैं।

मधुमेह के तमाम लक्षण शरीर में प्रोटीन की कमी के कारण होते हैं। अतएव प्रोटीन तत्वों से भरपूर सुपाच्य आहार और हल्का व्यायाम रोगी के लिए काफी सहायक सिद्ध होते हैं।

शोथ (DROPSY OR OEDEMA)

यह रोग दो किस्म का होता है।

- (1) दबाने पर त्वचा सामान्य रहे
- (2) दबाने पर त्वचा में गड्ढे पड़ जायें।

प्रथम श्रेणी का शोथ रोग शरीर में थायरॉयड हारमोन की कमी (Mixedema) के कारण होता है जब कि दूसरी श्रेणी का जलोदर हृदय के सामान्य कार्य न करने से होता है। चेहरे पर यह शोथ गुर्दे की खराबी से होता है। पेट में शोथ (जलोदर) (Ascites) यकृत की खराबी से होता है। हृदय के कार्य ठीक प्रकार न करने से पोषणीय जलोदर हो जाता है। ऐसे केस शुरूआत की दशा में विटामिन बी 1, प्रोटीनयुक्त आहार और **अल्बो-सांग** द्वारा ठीक किये जा सकते हैं। जब गुर्दे भली प्रकार कार्य नहीं करते हों तो **तुराइको** इस्तेमाल करें। जलोदर के साथ यकृत खराब हो तो **कायनोटोमाईन** दें। हृदय के लिए **ग्रान्डिको** दें। सभी प्रकार के शोथ में रोगी को नमक बिलकुल नहीं देना चाहिए। फलों का रस देना श्रेष्ठ होगा। चिकित्सा के दौरान रोगी को बिस्तर पर विश्राम करने की सलाह दी जाती है। इससे रोगी शीघ्र ही सामान्य हो जाता है।

ग्रन्थियाँ (GLANDS)

रक्त विहीन ग्रन्थियों (Lymph Glands) का बढ़ जाना दो प्रमुख कारणों से होता है:-

(1) सूजन के कारण-ऐसी दशा में दर्द रहता है और इलाज एन्टीबायोटिक औषधियों के सहारे किया जा सकता है।

(2) रोगों के कारण-ऐसी दशा में दर्द नहीं होता है। जटिल रोग जैसे रीढ़ की हड्डी में पानी उतर आना या जीवणुओं के शरीर में संक्रमण से (Virus Infection) या इसी प्रकार के अन्य रोगों में ग्रन्थियाँ बढ़ जाती हैं। इस लिए रोग की जाँच करा लेना श्रेष्ठ होगा। इस अवस्था को होडकिन रोग (Hodgkins Disease) भी कहते हैं। टी.बी. से ग्रसित रोगियों में ग्रन्थियों के इलाज के लिए शुद्ध वायु, सूर्य की रोशनी पौष्टिक खाद्य पदार्थ जैसे दूध या फलों का रस, **अल्बो-सांग** आदि अति आवश्यक हैं।

सूजन से ग्रसित ग्रन्थियों के इलाज के लिए एन्टीबायोटिक औषधियाँ सर्वोत्तम रहती हैं। इलाज के समय जब तक ग्रन्थियाँ स्वतः फुट न जायें, चीरफाड़ नहीं करना चाहिए। यदि घाव हो तो **रिपन्टो** से ड्रेसिंग कर दें।

अन्य सभी गम्भीर दशाओं में **अल्बो-सांग** के साथ दूध या फलों का रस काफी लाभप्रद रहेगा।

त्वचा रोग या चर्म रोग (SKIN AFFECTIONS)

चर्म रोग साधारण अथवा जटिल प्रकार के हो सकते हैं साधारण रोग कीटाणु नाशक दवाओं द्वारा तथा लगाने की दवाओं (जिसमें मलहम, पुलटिस या प्लास्टर भी शामिल हैं) से ठीक किये जा सकते हैं। लेकिन गम्भीर दशाओं में, शरीर के अन्दर होने वाली व्याधियों को ठीक करना आवश्यक है, इस लिए केवल खिलाने वाली औषधियाँ ही रोग से छुटकारा दिलाने में समर्थ होती हैं। रक्त शोधक के रूप में **अयोबिन** सर्वश्रेष्ठ है।

अल्बो-सांग का प्रयोग सामान्य रूप से रक्त के लिए लाभकारी है। एक्जिमा और खारिश के कारण त्वचा में होने वाली खुशकी के लिए **रिपन्टो** को प्रयोग में लायें।

स्केबीज त्वचा का एक संक्रामक आम रोग है। इस छूत के रोग में बड़ी खुजली होती है, खुजलाते वक्त रोगी को बड़ा आनन्द मिलता है लेकिन उसके बाद सूजन तथा जलन होती है।

त्वचा के इलाज में सफाई, शरीर की स्वच्छता और तन्दूरस्ती का बड़ा योगदान होता है। रोगी के वस्त्र व बिस्तर अलग रखें तथा यथा सम्भव बदलते रहें। परिवार के दूसरे सदस्यों को रोग न होने पाये इसके लिए उनके कपड़ों के साथ रोगी के कपड़े न मिलाये। सस्ते किस्म के साबुन न प्रयोग करें। **हर्बो-सल्फ** की टिकिया पीस कर पाउडर कर लें और इसका 1 भाग **रिपन्टो** के 10 भाग में मिलाकर त्वचा पर रात को लगावें और सुबह स्नान के समय धो डालें। इससे काफी लाभ होगा।

(अ) दाद (RINGWORM)

यह एक ऐसा रोग है जो शरीर के किसी भाग में हो सकता है। जरा से बिन्दू से शुरू कर छल्ले जैसी शक्ल में बढ़ता है। त्वचा का यह रोग दाढ़ी तथा सिर में भी हो सकता है। दाद के लिये **स्किनमेंट** सर्वश्रेष्ठ औषधि है। इसे हल्का हल्का दिन में 3 बार लगाते रहें, जब तक कि त्वचा इसे सोख न ले।

(ब) सोरियासिस (PSORIASIS)

इस चर्म रोग में शरीर में त्वचा मोटी व उभरी हुई दिखाई पड़ती है। यह बड़ा भयंकर रोग है।

(स) एक्जिमा (ECZEMA)

इस चर्म रोग की खास पहिचान त्वचा का काला हो जाना है। यह

कभी कभी छूत के कारण हो भी सकता है। इसमें त्वचा पर पपड़ी पड़ जाती है। ऐसी दशा में खाने के लिए **अयोबिन** और लगाने के लिए **रिपन्टो** की सिफारिश की जाती है। **रिपन्टो** को त्वचा में सोख जाने तक लगायें। हमारा **हर्बो-सल्फ** भी खाने की औषधि के रूप में तथा लगाने की औषधि के रूप में (**रिपन्टो** के 5 भाग में इसका 1 भाग मिला कर मलहम बनालें) काफी सन्तोषजनक लाभ प्रदान करता है। शुरु की दशा में यही रोग के निदान के लिए काफी है। **स्किनमेन्ट** का प्रयोग भी सफलतापूर्वक किया जा सकता है। सभी त्वचा के रोगों में रोगी को प्रोटीन, रस वाले फल, विटामिन सी और **अल्बो-सांग** भोजन में ज्यादा देना चाहिए ताकि शारीरिक रूप से त्वचा स्वस्थ हो सके।

(द) पित्ति (URTICARIA)

यह एक प्रकार का एलर्जिक लक्षण है जिसमें खुजली होने से शरीर भर में यकायक गोल गोल उभरे हुये चकत्त पड़ जाते हैं। ऐसे दौरै हाँलाकि कुछ देर तक ही रहते हैं पर दिन में कई बार हो सकते हैं। जैसा कि पहले ही हम लिख चुके हैं कि यह एक प्रकार की एलर्जी है जो कि किसी विशेष प्रकार के खाद्य पदार्थ खाने से जैसे अंडा, मछली या किसी दवा या सुगन्ध के शरीर में प्रवेश करने से या किसी संवेदना के कारण या किसी जीवणु के शरीर में संक्रमण से हो सकती है। इस लिए विभिन्न रोगियों में कारणों के कारण इस बात पर नजर रखनी होगी कि किस चीज के कारण ऐसा हो रहा है और उससे रोगी को बचना चाहिए। यही मूल कारण के निदान के लिए सर्वोत्तम होगा। ऐसे खाद्य पदार्थ या रंगों से बचे जिनके शरीर में सम्पर्क से ऐसे लक्षण उत्पन्न होते हैं। रोगी के स्वास्थ्य की ओर भी ध्यान देना जरूरी है। उसकी प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाना चाहिए ताकि संक्रामक किटाणु शरीर पर असर न कर सकें। रोगी को शारीरिक अथवा मानसिक उत्तेजना से भी बचना चाहिये। **कायनोटोमाईन** की दिन में 3-4 टिकियाँ दें। इससे आराम होगा। **होमोप्लेक्स** की 1 टिकिया दिन में

शहद या गर्म जल से देने से भी फायदा होगा। यदि ऐसे रोगी में कब्ज हो तो **स्प्योलैक्स** अवश्य दें ताकि उसका पेट साफ रहे। रोगी के पाचन और कब्ज पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। उपरोक्त औषधियों के साथ **अल्बो-सांग** भी दें।

घाव तथा कट जाना (WOUNDS & CUTS)

ऐसी दशाओं में कीटाणु नाशक ट्रेसिंग की तुरन्त आवश्यकता होती है। **रिपन्टो** को इस कार्य के लिए प्रयोग किया जा सकता है। यदि फोड़ा बन जाये तो उसे ट्रेसिंग करने से पूर्व फोड़ कर बहा देना ज्यादा अच्छा होगा। घाव भरने में **हर्बो-सल्फ** की ट्रेसिंग भी उपयुक्त है। सभी प्रकार के संक्रामक घावों के लिए **हेमोप्लेक्स** की एक टिकिया दिन में 3 बार खाने के लिए दें।

व्हीटलो (WHITLOW)

अँगूठे या अँगूली की सूजन के साथ होने वाला यह संक्रामक रोग है।

गम्भीर दशाओं में जहाँ सूजन अधिक हो, शल्य, चिकित्सा का सहारा लेना उचित होगा। रस दार फलों के सेवन से लाभ देखा गया है।

सूखा रोग (RICKETS)

शरीर में कैल्शियम और विटामिन डी की कमी से होने वाले इस रोग को अंग्रेजी में ओस्टोमैलिशिया (Osteomalacia) भी कहते हैं। अधिकतर यह बढ़ते हुए शिशुओं में होता है। ऐसे शिशुओं में विटामिन डी की कमी के कई कारण हो सकते हैं जैसे गर्भावस्था में माँ को उचित पोषण न प्राप्त हुआ हो या उनके भोजन में विटामिन डी कि कमी रही हो तब इसका कुप्रभाव गर्भ में पल रहे शिशु में सूखा रोग के रूप में बाद में उभर

कर आता है या फिर माँ और शिशु को पर्याप्त सूर्य की रोशनी न मिलने पाती हो। इस रोग के प्रारम्भिक लक्षण हैं:-

शिशुओं में बेचैनी और चिड़चिड़ापन होना तथा उनके सिर में अधिक पसीना आना। उनके शरीर की हड्डियों में विकृतता आने लगती है जैसे हड्डियों के सिरे मोटे हो जाना, देर से दांत निकलना आदि। बच्चा देर से चलने पाता है, पेट निकल आता है, टॉगे टेढ़ी हो जाती हैं, पैर के जोड़ विकृत हो जाते हैं आदि आदि। बोतल का दूध पिलाये जाने वाले शिशुओं में इस रोग के होने की सम्भावना अधिक होती है। इस शिशु रोग से बचाव और इलाज दोनों ही जरूरी हैं। कैल्शियम से भरपूर होने के कारण **अल्बो सांग** ऐसी दशाओं में बड़ा उपयोगी होता है। इसे दिन में दो बार दूध के साथ देना चाहिए। शिशुओं को माँ का दूध उपयोगी है परन्तु स्तन पान कराने वाली माँ को काफी मात्रा में कैल्शियम और विटामिन डी मिलना चाहिए।

नपुंसकता (SEXUAL INSUFFICIENCY OR IMPOTENCY)

स्वभाविक कामवासना एक प्राकृतिक गुण है और स्त्री व पुरुष दोनों के लिए इससे तृप्त होना स्वास्थ्य के लिए काफी लाभदायक है। लेकिन प्रकृति प्रदत्त कामवासना का दुरुपयोग पूरुश में न केवल नपुंसकता को जन्म देता है बल्कि उसका स्नायु संस्थान भी ध्वस्त हो जाता है, फलस्वरूप अनेक मानसिक विकार भी उत्पन्न हो जाते हैं।

यह नपुंसकता शारीरिक कमजोरी या मानसिक कमजोरी या मनोवैज्ञानिक कारणों से भी हो सकती है या कभी कभी किसी संक्रामक रोग या उससे उत्पन्न विकारों से भी हो सकती है। इस श्रेणी में पाचन का ठीक ना होना, यकृत की खराबी, औपसर्गिक रोग जैसे उपदंश (Syphilis) और सुजाक (Gonorrhoea) आदि आते हैं।

चिकित्सा:-

सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि चिकित्सक रोगी की बात पूरे ध्यान से सहानुभूति पूर्वक सुने और रोगी को विश्वास दिलाये। रोगी के लिए भी यह आवश्यक है कि वह चिकित्सक में पूर्ण आस्था रखते हुए सत्य को न छुपाये। तभी रोग के पीछे मूल कारण का पता चल पायेगा। काम शक्ति के लिए पोषक आहार का बड़ा महत्वपूर्ण योगदान है। इस लिए सर्व प्रथम रोगी का पाचन संस्थान सही करना चाहिए। रोगी को उचित व्यायाम तथा पत्नी के अलावा किसी अन्य स्त्री से सहवास न करना चाहिए। **सेंज़ाईन** कामांगों को उत्तेजित करती है। इसे दिन में 3 बार 2 टिकियों की खुराकों में दें।

स्नायुमंडल की थकावट के कारण होने वाली नपुंसकता (Impotencia neurasthenica) में **विटसान** भी दे सकते हैं। टॉनिक के रूप में दूध के साथ **अल्बो-सांग** सुबह व शाम दें।

युवकों में स्वप्नदोष (NIGHT EMISSIONS)

कई लोग बिना वजह ही स्वप्न दोषों के बारे में चिन्तित रहते हैं। अविवाहित युवकों में सप्ताह में एक स्वप्न दोष हो तो एक प्राकृतिक क्रिया ही मानना चाहिए। लेकिन जब कोई युवक अप्राकृतिक तरीके से वीर्य का क्षरण करने लगता है या ज्यादा शीघ्र शीघ्र स्वप्न दोषों से उसका शरीर कमजोर होने लगता है तो यह निश्चय ही चिन्ता का विषय है और इसे रोग की संज्ञा दी जानी चाहिये। लेकिन ऐसी स्थितियों में भी चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। इसे संयम नियम आहार व चिकित्सा से ठीक किया जा सकता है। रोगी को शाकाहारी भोजन, मट्ठा, नींबू का पानी और रसदार फलों का सेवन करने की सिफारिश की जाती है। उसे ज्यादा मसालेदार या गर्म वस्तुयें या माँसाहारी भोजन कदापि नहीं करना चाहिए। मद्यपान भी निषिद्ध है। चिकित्सा के लिए सुबह **अल्बो-सांग** दूध के साथ तथा **नेवास** की 1 से 2 टिकियाँ सोते समय दें। उसे कब्ज न रहने पाये यह ध्यान रखें।

पेशाब में फास्फेट आना (PHOSPHATURIA)

विटसान की एक टिकिया दिन में 2 से 3 बार 2 टिकियाँ नेवास के साथ दें। यही काफी है।

पेशाब के साथ वीर्य आना (SPERMATORRHOEA)

वैसे आधिकांश केशों में फास्फेट का पेशाब में आना, गलती से वीर्य समझ लिया जाता है। मट्ठा और फलों के रस का सेवन पेशाब में फास्फेट का आना कम कर देगा। अल्बो-सांग दिन में 2 बार दें। सैज़ाईन की छोटी खुराकें वीर्य के आने को रोक देंगी।

दमा या श्वास (ASTHMA)

फेफड़े में उत्पन्न दमा, साँस अवरोध और साँस के समय उत्पन्न आवाज और घबराहट से पहचाना जा सकता है। जब फेफड़े की श्वास नलिकाओं में सँकरापन आ जाता है तो रोगी को साँस लेने में काफी संघर्ष करना पड़ता है इसी कारण दमों के लक्षण उत्पन्न होते हैं। इसके मूल कारण निम्न लिखित हैं:-

- (1) एलर्जी
- (2) मानसिक तनाव, जो मनोवैज्ञानिक चिन्तन से उत्पन्न होता है।
- (3) श्वसा संस्थान में कीटाणु या जीवाणुओं के संक्रामण से। ऐसी दशा में एन्टीबायोटिक औषधियों से काबू पाया जा सकता है।

लेकिन दमों में दो बातें ध्यान देने योग्य हैं कि, श्वास नलिकाओं की श्लेष्मात्मक झिल्ली में सूजन आ जाना और श्वास नलिकाओं में संकुचन (Broncho Spasm)। ऐसा प्रतीता होता है कि बैक्टीरिया के अतिक्रमण से पूर्व श्वास नलिकाओं में अवरोध उत्पन्न होने लगता है। श्वास दमा साधारण या गम्भीर हो सकता है। अधिकांशतया श्वास नली में संक्रमण हो

जाने से यह उत्पन्न होता है। इस दशा को फेफड़े की सूजन वाला, दमा (Asthmatic Bronchitis) कहते हैं।

दमों का दौरा अक्सर रात को होता है और रोगी साँस के लिए संघर्ष करता हुआ बिस्तर पर उठ बैठता है। वह घबरा कर खिड़की खोलने लगता है ताकि उसे और हवा मिलने लगे। कभी कभी हृदय पर भी इसका प्रभाव होने लगता है तब इसे कार्डियाक दमा (Cardiac Asthma) कहते हैं। यह अधिकतर हृदय के रोगियों में या बढ़े हुए रक्त चाप वाले रोगियों में होता है।

फेफड़े से सम्बन्धित दमे (Bronchial Asthma) में रोगी देर तक साँस लेता रहता है। इसमें वायु कोषों को अस्वाभाविक अवस्था (Dilatation of Alveoli) जिसे ब्रॉन्कियेक्टसिस (Bronchiectasis) भी कहते हैं, से जटिलतायें उत्पन्न हो जाती हैं। अगर ऐसे में रोगी खाँस कर बलगम निकाल दे, तो दौरा शीघ्र काबु में आ जाता है वरना रोगी के श्वास लेते समय विशेष घरघराहट की आवाज होती रहती है। इस लिए ऐसे रोगियों को रोग के बारे में दवा के साथ शिक्षा की भी आवश्यकता होती है। जैसे उदाहरण के लिए उसे विशेष प्रकार के भोज्य पदार्थ, कुछ औषधियाँ, मद्यपान, तेज खुशबू, दिल को न भाने वाले दृश्य संवेदनात्मक घटनायें आदि से बचना होगा क्योंकि ये चीजें दमे के दौरों को उत्पन्न कर सकती हैं। रोगी की भली प्रकार से जाँच भी आवश्यक है। आँतों में विद्यमान परजीवी और चर्म रोग भी दूसरी श्रेणी के इसोनोफीलिया को उत्पन्न कर सकते हैं, जिससे दमे के दौरों जैसी रोगी की हालत हो जाती है। इन दौरों को रोकने में हल्का भोजन, कब्ज न होना और स्वास्थ्य के प्रति सजग रहना जैसे तथ्य काफी सहायक होते हैं। रात्रि का भोजन बहुत ही हल्का और सुपाच्य होना चाहिये और बेहतर तो यह रहेगा कि रात्रि के बजाय शाम को ही भोजन कर लिया जाये। रोगी को व्यक्तिगत रूप से जो भोजन माफिक हो उसी को लेना चाहिये।

लक्षण और चिन्ह:

दमे के रोग की पहिचान रोगी में दौरे के वक्त साँस लेने में कठिनाई, साँस का फूलना, तीव्र खाँसी, दमघुटना और गले व छाती में भारी कसावपन महसूस करना है। ये दौरे प्रायः रात में ही होते हैं और रोगी साँस लेने के लिए संघर्ष करता हुआ उठ बैठता है, बेचैनी में बिस्तर से उठकर कमरे की सब खिड़कियाँ खोलने लगता है ताकि उसे आधिक से आधिक वायु मिल सके। पहले तो छाती के हिस्से में कोई हरकत नहीं होती है लेकिन बाद में आवाज के साथ रोगी थोड़ी थोड़ी परन्तु गहरी साँस निकालता है।

चिकित्सा

मूल कारण के अनुसार चिकित्सा की जानी चाहिये। प्रथम तो दौरे होने ही न पायें ऐसा प्रयत्न होना चाहिए। साँस लेने वाले व्यायाम-बच्चों और व्यस्कों दोनों के लिए ही लाभकारी हैं। दम के दौरों को रोकने व कम करने के लिए तथा बलगम को फेंफड़ों से बाहर निकालने के लिए **डेस्मा** काफी लाभकारी है। दौरों के बीच **मेडिटैब** दें, छाती पर **चेसोल** की मालिश एक बाह्य सहायक औषधि के रूप में की जाती है। स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए **अल्बो-सांग** दें।

शिशुओं और बच्चों की चिकित्सा

दरअसल शिशुओं और बच्चों के स्वास्थ्य की देखभाल उसी समय से ही शुरू हो जाती है जब शिशु माँ के गर्भ में होता है। गर्भवती स्त्रियों को उचित शिक्षा देने से यह कार्य आरम्भ करना चाहिए। गर्भवतियों की आदतें संयमित होनी चाहिए। उनको उचित पोषण और व्यायाम की आवश्यकता होती है और उनके लिए यह भी जरूरी है कि उनका पोषण से भरपूर भोजन पच सके। उनमें शारीरिक या मानसिक श्रम या तनाव नहीं आने देना चाहिए। उनको खुशहाल वातावरण मिलना अति आवश्यक है। साथ ही गर्भावस्था को प्रथम सीढ़ी पर भावी माँ को किसी प्रकार की तेज असर

वाली औषधियाँ नहीं देनी चाहिए। क्योंकि इनका विपरीत असर या कुप्रभाव गर्भ में विकसित शिशु के शरीर की बनावट पर पड़ सकता है, उसके अंग विकृत हो सकते हैं। प्रचुर मात्रा में कैल्शियम, लौहतत्त्व, फौलिक एसिड वाले टॉनिक-नवजात शिशु के स्वास्थ्य विकास में सहायक होंगे। **अल्बो-सांग** को अन्य टॉनिकों के साथ तीसरे माह से दिया जाना चाहिए। नवजात शिशु के शरीर की रचना माँ बाप के शरीर के अनुरूप होती है पर उस पर गर्भावस्था के समय माँ को हुये रोग संक्रमण और दी गई दवायों तथा टॉनिक अपना असर अवश्य डालते हैं। समय से पूर्व पैदा हुए बच्चे ज्यादा हिफाजत चाहते हैं क्योंकि उनके अविकसित अंग-भोजन व दवा के ग्रहण करने तथा मल विसर्जन क्रियायें करने में पूर्ण सक्षम नहीं होते। ऐसे शिशुओं को उनके वजन के हिसाब से दवा की खुराकें निर्धारित करनी चाहिए। निर्धारित मात्राओं से कम खुराकें ही देनी चाहिए। यह ध्यान रखने योग्य है। बच्चों में संक्रमण बड़ी जल्दी होता है लेकिन फिर भी वे एरडी का तेल (Castor Oil) जैसे जूलाब सह लेते हैं। माँ का कर्तव्य है कि शिशुओं में कब्ज न रहने दे उनको सुपाच्य भोजन उचित मात्रा में उचित समय से उचित तरीके से देना कि उनमें अतिसार या अन्य संक्रामक रोग आदि न होने पायें। बढ़ते हुए शिशुओं में किसी रोग का संक्रमण उनके शारीरिक विकास में आगे चलकर बाधक होता है। इस लिए संक्रमण की स्थिति में जरूरी भी लापरवाही नहीं करनी चाहिये। हिफाजत के लिए चेचक, छोटी चेचक, बदन में दाने और पोलियो तथा काली खाँसी से बचाव के लिए टीके लगवायें।

गर्भवती स्त्रियों के समान बढ़ते हुए शिशुओं को भी विटामिन व पोषक सुपाच्य आहार की आवश्यकता होती है। **अल्बो-सांग** हड्डियों के विकास में सहायता करता है इस लिए इसे नवजात शिशुओं को अवश्य देना चाहिए। कब्ज को **टेक्सइन** से तथा पाचन क्रिया को **साल फ्रास** से ठीक रखना चाहिए। डकार (दूध पीने के बाद) लाने के लिए **बायो-साल** दें ताकि उनके पेट में वायु न इकट्ठी होने पाये और अफारा न बनने पाये।

बच्चों और शिशुओं में भूख की कमी हो तो **हरबीटार्स सीरप** दें। मलेरिया के कारण यकृत यदि बढ़ गया हो तो शिशुओं को 1 टिकिया **कायनोटोमाईन** को लेकर 4 खुराकें पीसकर बना लें और दिन में 4 बार दें। **कायनोटोमाईन** शिशुओं और बच्चों के लिए सीरप में भी उपलब्ध है।

दाँत का निकलना (DENTITION)

प्रायः दाँत शिशुओं में छठे मास में निकलने शुरू हो जाते हैं। कमजोर शिशुओं के लिए यह दुखदायी समय होता है और वे अक्सर उल्टी तथा दस्तों के शिकार हो जाते हैं। यदि उचित समय पर दाँत न निकले तो उनको **अल्बो-सांग** देना चाहिये क्योंकि यह एक आदर्श टॉनिक है जो उनको पर्याप्त मात्रा में कैल्शियम, फासफोरस, लोह तत्त्व और विटामिन देता है जिससे दाँत निकलने में आसानी हो जाती है। जिन शिशुओं में उचित पोषण नहीं होता उनमें स्वस्थ दाँत नहीं निकलने पाते हैं। इस लिये माताओं को इस ओर उचित ध्यान देना चाहिये। दाँत निकलते समय **साल फ्रास** बड़ी सहायक होती है। यदि बच्चा ज्यादा परेशानी महसूस करे तो **विटसान** दें।

रक्त चाप (BLOOD PRESSURE)

बढ़े हुए रक्त चाप की बीमारी अधिकतर वृद्धावस्था में होती है। ऐसी दशा में इसे 'आवश्यक रक्त चाप' कहते हैं। गर्भावस्था में होने वाले विषैले (TOXAEMIA) प्रभाव के कारण भी स्त्रियों में रक्त चाप बढ़ जाता है। इस बीमारी के प्रमुख लक्षण हैं - सिर में चक्कर आना, सिरदर्द, सांस में अवरोध या थकावट, चिड़चिड़ापन, अनिद्रा और दिल की धड़कन बढ़ जाना आदि। इसके गम्भीर, परिणामों में हृदय की गति रूक जाना, गुर्दों का कार्य न करना या लकवा मार जाना आदि हैं। कभी कभी रोगी नेत्रों की रोशनी भी खो बैठता है। ऐसे गम्भीर रोगियों का इलाज अस्पताल में ही होना चाहिये।

युवकों में कभी कभी गुर्दों के विकार के कारण भी रक्त चाप बढ़ जाता है। यह बड़ा खतरनाक होता है। मानसिक आवेग से भी रक्त चाप बढ़ जाता है ऐसे रोगियों का इलाज रक्त चाप कम करने वाली औषधियों से नहीं करना चाहिये। चिन्ता और मानसिक तनाव को कम करने के लिए **विटसान** की 1 टिकिया दिन में 3 बार देना चाहिए। **अल्बो-सांग** को कम या ज्यादा दोनों रक्त चाप की दशा में टानिक के रूप में देना चाहिए। कब्ज को न होने दें। इस के लिए **स्योलैक्स** दें।

चिकित्सा

आवश्यक रक्त चाप (Essential Hypertension) वाले रोगियों को चिकित्सा में औषधि के साथ साथ रोगी की खान पान की आदतों में संयम, रात्रि को हल्का भोजन, धूम्र पान और मद्यपान न करना, ज्यादा चाय या काफी न पीना आदि, आति आवश्यक हैं। फलों का रस रोगी के लिए श्रेष्ठ है क्यों कि इससे कब्ज नहीं रहने पायेगा और साथ ही उसे खुलकर पेशाब भी होगा। पेशाब लाने वाले पदार्थ शरीर में अतिरिक्त कोषाणु द्रव को कम कर रक्त चाप को कम कर देते हैं। इस लिए फलों के रस का सेवन रोगी के लिए पोषक होने के अलावा पेशाब भी लाता है। इस प्रकार यह दोहरा फायदेमन्द है।

रक्त स्राव (BLEEDING)

रक्त स्राव, जिसे हेमोरेज (Haemorrhage) भी कहते हैं, बवासीर के कारण या गर्भ से या किसी अन्य रूप में हो सकता है। रक्त स्राव के अनेक रोगी मानसिक आघात से पीड़ित होते हैं। इन दशाओं में **विटसान** देने की सिफारिश की जाती है। खून बन्द करने के लिए **चिनियमको** प्रमुख औषधि के रूप में दें।

कान के रोग (EAR INFECTION)

कान में संक्रमण बाह्य भाग में या मध्य भाग में हो सकता है।

बाह्य भाग में संक्रमण

यह कान में डालने वाली बूंदों से या कीटाणुनाशक (Antiseptic) पाउडर से ठीक किया जा सकता है।

मध्य भाग में संक्रमण

यह साधारण अथवा गम्भीर हो सकता है। साधारण संक्रमण की अवस्था में रोगी को कान में दर्द होता है। और बुकार कभी कभी आ जाता है। यह प्रायः बच्चों में होता है। ऐसे दर्द को **डेसिल** से तुरन्त कम किया जा सकता है।

गम्भीर संक्रमण की स्थितियों में कर्ण झिल्ली में छेद हो जाता है और मवाद निकलता है। इससे कभी कभी थोड़ा बहरापन भी आ जाता है। इन दशाओं में एन्टीबायोटिक को काफी समय तक खिलाना पड़ता है और कान में कीटाणुनाशक दवा डालना पड़ सकता है। ऐसे में दिन में दो बार **एन्ट्रोप्स** कान में डालें और **हेमोप्लेक्स** की 1 टिकिया दिन में 4 बार खिलायें। गले में कीटाणुनाशक दवा से पानी के गरारे करें। स्वास्थ्य की ओर ध्यान देना चाहिए और शारीरिक दुर्बलता के लिए **अल्बो-सांग** देना श्रेष्ठ होगा।

नेत्र (EYES)

आंखों की जलन के लिए उबले हुए डिस्टिल्ड पानी में **रासजेन्ट** डालकर (1 ड्राम पानी में 1 ग्रेन पाउडर) नेत्र बूँदें बनालें और डालें। ज्यादा दर्द में **चिनियमको** खिलायें।

स्त्रियों के गुप्त रोग (GYNAEC DISORDERS)

ये रोग गर्भाशय, योनि, फैलोपियन ट्यूब और अंडाशय से सम्बन्धित होते हैं। ये विकार स्त्रियों में हारमोन की गड़बड़ी या अंगों में सूजन या

मासिक धर्म की अनियमितता से उत्पन्न होते हैं। ये कौमार्यावस्था के शुरु होने पर या मासिक धर्म के समाप्त होने की उम्र (अधेड़ अवस्था) में होते हैं। ये लक्षण उचित चिकित्सा से दूर किये जा सकते हैं। मासिक धर्म के विकारों में अधिक स्राव होना या आगे पीछे होना, कम स्राव होना, दर्द होना शामिल हैं। इस लिए मूल कारण का पता लगा कर उचित चिकित्सा निर्धारित करनी चाहिए। मानसिक आवेग को ऐसी अवस्था में कम करने के लिए **विटसान** को शामक के रूप में लें।

पीड़ा के साथ मासिक धर्म (DYSMENORRHOEA)

यह अंगों के विकार जैसे गर्भाशय में फाइबरायड का हो जाना या अन्य किसी विकृत अवस्था के कारण होते हैं ऐसे रोगियों को शामक औषधियों, उचित मात्रा में विश्राम और खोये हुए विश्वास और धीरज की आवश्यकता होती है। संकुचन के साथ दर्द की अवस्था के लिए **ब्रह्मडाइन** सर्वश्रेष्ठ है। शामक के रूप में **विटसान** का प्रयोग करें। कुछ रोगियों में **चिनियमको** या **अमिग्लीया** देने की सिफारिश की जाती है। स्वास्थ्य की ओर सजग रहें जैसे हल्का व्यायाम, रक्त की कमी न होने देना या कब्ज न होने देना आदि। ये चिकित्सा में पूरक और सहायक दोनों ही हैं।

अन्य गर्भाशय विकार

साफ मासिक धर्म न आने (Amenorrhoea) पर **आराटिन्म** की 1 या 2 टिकिया दिन में 3 बार दें। खून आने पर असामान्य स्राव के लिए **चिनियमको** दें।

श्वेत प्रदर (LEUCORRHOEA)

वैसे तो श्वेत प्रदर का मूल कारण अज्ञात है पर यह कमजोर स्त्रियों में अधिक होता है। इस लिए प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाने के लिए **अल्बो-सांग** दें।

साधारण दशाओं में प्रमुख औषधि के रूप में **ब्रह्मडाइन** का प्रयोग करें। किसी किसी केस में **आराटिन्म** और **चिनियमको** साथ साथ देने से लाभ प्राप्त होता है। कभी कभी श्वेत प्रदर औपसर्गिक रोगों से भी सम्बन्धित होता है। ऐसे केसों में कम से कम बाह्य और आन्तारिक चिकित्सा जरूरी होती है। जीवाणु नाशक (Antimicrobial) औषधियों और योनि की जलन में कीटाणु नाशक दवायें प्रयोग करना उचित होगा। **अयोबिन** खिलाने से भी लाभ होगा।

गर्भावस्था (PREGNANCY)

गर्भावस्था में **अल्बो-सांग** माँ को पोषक तत्व प्रदान करता है तथा गर्भ के विकास में सहायता करता है। इसे स्तनपान करने वाली माताओं को भी देना चाहिए।

प्रसव: कभी कभी प्रसव वेदना बड़ी जटिल होती है। **आराटिन्म** प्रसव को सरल सुगम और स्वाभाविक कर देती है। प्रसव पीड़ा न होने पर **आराटिन्म** पीड़ा उत्पन्न कर देती है। **आराटिन्म** की एक टिकिया सुबह तथा **चिनियमको** की एक टिकिया शाम को दें। ऐसी अवस्था में होने वाली घबराहट पर काबू पाने के लिए **विटसान** बड़ी ही उपयोगी है। घबराहट या उत्तेजना के कारण यदि प्रसव नहीं होने पा रहा हो तो **विटसान** दें। प्रसव के बाद यदि खून बराबर गिर रहा हो तो **चिनियमको** दें। प्रसव के बाद बुखार सा आना चिन्ताजनक लक्षण है और इसके इलाज में लापरवाही बरतने से टी.बी. जैसी जटिल बीमारियां हो जाने का अन्देशा रहता है।

ज्वर (FEVER)

ज्वर के पीछे कई कारण हो सकते हैं - उदाहरण के लिए लू लग जाना। इन अवस्थाओं को विश्राम, फलों के रस, जल सेवन और **डेसिल** से ठीक किया जा सकता है। इन्फ्लुएंजा (Flue) को **डेसिल** से ठीक किया जा सकता है। **डेसिल** शरीर व स्नायु के दर्द और बुखार को कम करती है।

वात या गठिया के कारण होने वाले ज्वर में **डेसिल** काफी लाभ प्रद है। ये बुखार को उतार कर दर्द में राहत देती है।

सिर दर्द

यह तमाम रोगों की विभिन्न अवस्थाओं का द्योतक लक्षण है। ठन्ड लग जाने या ऐसी नाजुक अवस्थाओं के प्रारम्भ में हल्का-रह रह कर सिरदर्द होता है। इसके अन्य कारणों में कब्ज, नेत्रों में पीड़ा, मानसिक उद्वेग, बढ़ा हुआ रक्त चाप, नाक, कान और दाँत के विकार, आधा सीसी (Migraine), रक्त की कमी, गुर्दे के रोग आदि हैं। चिकित्सा प्रारम्भ करने से पूर्व इसीलिये मूलकारण का पता कर लेना जरूरी है। वैसे सिरदर्द से तत्काल आराम पाने के लिये **डेसिल** को प्रयोग में लाया जा सकता है। माथे पर **रबजान** के लेप से राहत मिलेगी। रात को **विटसान** देने से अच्छी नींद आयेगी।

सिर एवं केश सम्बन्धी रोग

बालों का झड़ना शारीरिक कमजोरी, विटामिनों की कमी या सिर पर फफूंदी के जीवणु के संक्रमण से होता है। शारीरिक दुर्बलता के लिये **अल्बो-सांग** दें। नारियल के तेल में **ओलोसिन** मिलाकर सिर में अच्छी तरह रोज मालिश करने से गाढ़ी नींद आयेगी। **ओलोसिन** केशों को झड़ने से रोकता है और स्वस्थ बालों को उगाने में भी मदद करता है। यदि सिर की सतह पर दाद (Ring Worm) हो गया हो और इससे केश गिरने लगे हों तो बाल छोटे करा कर सिर पर **स्किनमेंट** लगायें।

हृदय-रोग

इस रोग से पीड़ित व्यक्ति में अधिक शारीरिक परिश्रम से साँस फूलना, धड़कन बढ़ जाना और छाती में पीड़ा होती है और उसके पैरों में

सूजन आ जाती है। जिसे उंगली से दबाने गड्डे बन जाते हैं। हृदय रोग के पीछे कई कारण होते हैं उदाहरण के लिये जैसे बात संवन्धी संक्रामक रोग आदि। ऐसी दशा में **डेसिल** से जोड़ों में सूजन और बुखार कम किया जा सकता है। लेकिन एन्टीबायोटिक औषधियों का प्रयोग साथ ही साथ अधिक लाभकारी रहेगा।

करोनरी धमनी से संबन्धित रोग जैसे एंजिना के दर्द में **अमिग्लीया** विशिष्ट औषधि है। कोरोनरी धमनी में रक्त जम जाना एक चिन्ता जनक रोग है और ऐसे रोगी को पूर्ण विश्राम करना चाहिये या अस्पताल में भर्ती कर उसे दर्द नाशक जमे रक्त को पुनः संचरित करने वाली औषधियों को देना चाहिये। जुलाब ऐसी अवस्था में निषिद्ध है। फलों के रस का सेवन विशेष लाभकारी है। कभी कभी पेट में पाचन सम्बन्धी गड़बड़ियों से, जिनमें गैस प्रमुख है, हृदय रोग बढ़ जाते हैं। इसलिये पाचन विकारों के लिये **साल फ़ास** और **स्पौलैक्स** प्रयोग करें।

पीलिया (JAUNDICE)

इसे पाण्डु या कामला भी कहते हैं। आँख नाखून और त्वचा का पीला हो जाना इसके प्रमुख लक्षण हैं। शरीर में बुखार और हल्की खुजली सी महसूस होती है। हृदयगति मन्द हो जाती है। पाखाना मिट्टी के रंग का होने लगता है और पेशाब गाढ़े पीले रंग का आता है। भूख बिलकुल नहीं लगती। ये सभी लक्षण यकृत में सूक्ष्म जीवणु (Virus) के संक्रमण से उत्पन्न होते हैं। पीलिया साधारण और जटिल किस्म की होती है।

इसीलिये शुरूआत में ही रोग को पहिचान कर चिकित्सा करनी चाहिये। यह रोग अवरोधात्मक (Obstructive) और विषाक्त (Toxic) दो प्रकार का होता है। अवरोधात्मक पीलिया वाइरस संक्रमण या पेट में केचुए विद्यमान होने के फल स्वरूप दुष्प्रभाव के रूप में पेंक्रिएस के कार्य न करने से या पित्त वाहिनी में सूजन आदि के कारण होता है।

यकृत पर विषैला प्रभाव डालने वाली औषधियों के कारण विषाक्त (Toxic) पीलिया हो सकता है। पित्त के विकृत (Biliary Cirrhosis) हो जाने से विषाक्त (Toxic Jaundice) पीलिया हो जाने की सम्भावना रहती है। मूल कारण का निदान बहुत आवश्यक है। इसमें यकृत को जटिलता की स्थिति से बचाना चाहिये। **कायनोटोमाईन** की एक टिकिया दिन में 3 बार वयस्कों के लिये दें। बच्चों को अवस्थानुसार खुराक घटा दें उनको **कायनोटोमाईन सीरप** भी दे सकते हैं। सोते समय **हरबीटार्स** की एक खुराक (टिकिया या सीरप) लाभ प्रद सिद्ध होगी। मुनिसिपल विभाग द्वारा प्रदत्त क्लोरीन युक्त पानी में या रखे हुये जल में सूक्ष्म जीवाणु (Virus) हो सकते हैं इस लिए पीलिया से ग्रसित रोगी को पानी उबाल कर और ठन्डा करके ही देना चाहिये। रसदार फल और अधिक मात्रा में जल-रोगी को लाभ पहुंचाते हैं। दूध का पाउडर या मक्खन निकाला हुआ मट्ठा नमक के साथ, **अल्बो-सांग** मिलाकर रोग के दौरान तथा रोग ठीक होने के बाद बराबर देते रहें। रोगी को पूर्ण विश्राम करना चाहिये तथा रोग से मुक्ति पाने के बाद तक चिकनाई रहित भोजन लेना चाहिये।

गुर्दों का दर्द (RENAL COLIC)

पेट में भीषण रह रह कर पीड़ा होना इसका लक्षण है। गुर्दों के पीछे की और रीढ़ की हड्डी के लम्बर हिस्से में दर्द होता है जो पेशाब की थैली की और जाता प्रतीत होता है। पथरी पड़ जाने के कारण रह रह कर दर्द होता है। पथरी विभिन्न आकार की हो सकती है। छोटी पथरी या न घुलने वाले पदार्थ (Gravel) मूत्र नली (Ureter) से निकल कर पेशाब से बाहर चले जाते हैं। अगर कुछ पथरी के टुकड़े हों तो मूत्राशय में इकट्ठे हो जाते हैं। जब पथरी बड़े आकार की होती है तो वह मूत्रनलिकाओं में अवरोध उत्पन्न कर दर्द पैदा करती है। इसी को गुर्दों का दर्द (Renal Colic) कहते हैं। इस दर्द के आरम्भ होने से पूर्व रोगी ऐठन के साथ हल्का हल्का दर्द महसूस करने लगता है। रोगी को बार बार पेशाब महसूस तो

होता है पर थोड़ा थोड़ा उतरता है और प्रायः उसमें (पेशाब में) खून के निशान होते हैं। जब पथरी मूत्र नलिकाओं से गुजरता है तो दर्द भीषण रूप से होता है और असहनीय दशा में रोगी बेहोश तक हो जाता है। समयान्तर से पथरी निकल जाती है और दर्द में राहत आ जाती है।

लक्षण और पहिचान

दर्द निवारक औषधियों से इसकी चिकित्सा की जाती है। पैथेडीन जैसी औषधि के साथ बेलाडोना एट्रोपीन से बने योगों का प्रयोग काफी लाभ दिखाते हैं। पथरियों का पैदा होना आहार की गड़बड़ियों पर निर्भर करता है साथ ही मूत्र संस्थान भी प्रभावित हो जाता है इस लिए आहार को ठीक करके इस रोग को दोबारा नहीं पनपने देना चाहिये। अधिक मात्रा में पानी के साथ संतरे, मौसंबी जैसे फलों का रस तथा मट्ठे को नींबू के रस के साथ बारी बारी से प्रयोग करने से यह रोग दुबारा नहीं होने पायेगा और इससे छोटी पथरी स्वतः निकल जायेगी। **तुराइको** विशिष्ट औषधि के रूप में इस्तेमाल करना चाहिये। यह एलब्यूमिनूरिया (Albuminuria) रोग के लिए भी बड़ी लाभकारी है। पीछे के हिस्से में दर्द होने पर **रब्जान** लगायें।

मुख जिह्वा और दाँत

पाचन ठीक न होने से मुंह से दुर्गन्ध आने लगती है। दाँतों की उचित देख भाल तथा सफाई न करने से भी मुंह से दुर्गन्ध आती है। कभी कभी दुर्गन्ध का सम्बन्ध संक्रामक रोग जैसे पायोरिया या विटामिन सी की कमी से भी होता है। कभी कभी मुंह में छाले पड़ जाते हैं। पाचन ठीक न होने से उत्पन्न दुर्गन्ध को पेट व कब्ज को ठीक करके दूर किया जा सकता है। **साल फ़ास** से पाचन ठीक होजायगा और काब्ज के लिए **स्योलैक्स** दें। हमारे **टूथ पाउडर** से दाँतों की सफाई करें। इससे मुंहामा और पायोरिया नहीं होने पाता साथ ही यह पिचपिचे मसूड़ों को सख्त बनाता है। रोगियों

को **अल्बों-सांग** के अलावा फलों के रस का सेवन काफी करना चाहिए। **एन्ट्रोप्स** से मुख में गरारा करावें। इससे मसूड़ों का दर्द कम होगा और दर्द निवारक, कीटाणुनाशक और सूजन निवारक होने से मसूड़ों के लिए **एन्ट्रोप्स** हर प्रकार से लाभदायक है। ज्यादा जटिल परिस्थितियों में किसी दाँतों के डाक्टर की सलाह लेनी चाहिए।

पायोरिया

इसमें मसूड़ों में सूजन के साथ साथ दाँतों और मसूड़ों की संधि स्थान से मवाद निकलता है। फलस्वरूप मसूड़े सिकुड़ कर दाँतों की जड़ों को छोड़ने लगते हैं। साथ ही मुख से असहनीय दुर्गन्ध आती है। पायोरिया भोजन के चबाने में बाधक है और अन्ततोगत्वा पाचन क्रिया खराब कर देता है। यह मवाद कभी तो रोगी निगल जाता है या फिर यह रक्त में विलीन हो जाता है। जिससे रोगी का स्वास्थ्य बिगड़ने लगता है। हमारा **मेडिकेटेड टूथपाउडर** दाँतों में पायोरिया को रोक देता है और स्वस्थ दाँतों में पायोरिया होने नहीं देता। इसे नित्य सुबह और रात में प्रयोग करें। यदि मसूड़ों में सूजन ज्यादा हो तो खाने के बाद भी प्रयोग करें। पायोरिया के लिए **एन्ट्रोप्स** भी बड़ा उपयोगी है लेकिन गम्भीर दशाओं में दाँत निकलवा देना ही उचित होगा। पाचन और सामान्य स्वास्थ्य पर पूरा ध्यान देना चाहिए।

मुहाँमा और दाँत पीड़ा (TOOTHACHE-GUM-BOIL)

दाँतों के दर्द के लिए **डिसिल** सर्व श्रेष्ठ है। मसूड़ों की सूजन और मुख में छाले पड़ जाने पर **एन्ट्रोप्स** काफी राहत देता है। आवश्यकता पड़ने पर **विटसान** भी दे सकते हैं। यह दाँत के दर्द में रोगी को नींद ला देगा। कब्ज के लिए **स्योलैक्स** दें। सुबह व सोने से पहले हमारा **टूथ पाउडर** प्रयोग करें। विटामिन सी या नींबू का शर्बत या रसदार फलों को नियमित

रूप से प्रयोग करें। गहरे घावों की दशा में एन्टी माइक्रोबियल औषधियों को प्रयोग करें।

नासिका (NOSE)

कभी कभी नज़ला बड़ा दुखदायी होता है। नाक के बन्द होने पर यह अन्य रोग-जैसे नाक के अन्दर के रास्ते व श्लेषात्मक झिल्ली में सूजन आ जाने जैसी परेशानियां पैदा करता है। इन रोगों में **एन्ट्रोप्स** काफी लाभ देता है। दिन में इसकी 2-3 बूँदें नाक में डालने से नासिका के तमाम रोग ठीक हो जाते हैं। कब्ज के लिए **स्पोलैक्स** दें। रोज सुबह शाम 5 से 10 मिनट तक श्वास व्यायाम करें। खान पान को भी आवश्यकतानुसार बदल लें।

बवासीर (PILES)

मलद्वार पर कट जाना और बवासीर की अलग अलग स्थितियां हैं। बवासीर के पीछे मूल कारणों में समय से मल विसर्जन न होना, कब्ज, किसी अन्य कारण से मल साफ न हो पाना आदि हैं। ये स्थितियां बवासिर को ही नहीं उभारती बल्कि वेरीकोज शिराओं को ध्वस्त कर देती हैं। जिससे मलद्वार से खून आने लगता है। अन्दरूनी बवासीर (जिसमें मस्से मलद्वार से बाहर नहीं निकलते) में रोगी भारीपन महसूस करता है और मलविसर्जन के समय दर्द होता है। थोड़ा थोड़ा रक्त स्राव भी होता है जो गम्भीर रूप धारण कर सकता है। उस समय रोगी में खून की कमी भी हो सकती है।

बाह्य बवासीर

वेरीकोज शिराओं में रक्त जम जाता है जिससे बवासीर के मस्से फूल जाते हैं, और मलद्वार के बाहर आ जाते हैं। रोगी को असीम कष्ट होता है। ऐसे रोगियों में शल्य चिकित्सा का सहारा लेना चाहिए और एन्टिबायोटिक देना चाहिए। केवल रक्त स्राव को रोक देना ही काफी नहीं है। द्वितीय,

तृतीय और चतुर्थ श्रेणी की बवासीर केवल शल्य चिकित्सा से ही ठीक हो सकती है प्रथम श्रेणी की बवासीर को तो **स्पोलैक्स** की सहायता से कब्ज दूर करके ठीक किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में कोई तेज जुलाब देना हानिकारक होगा। रक्त स्राव होने में **चिनियमको** दिन में 2 बार दें, साथ ही **रिपन्टो** को मल विसर्जन के बाद तथा रात सोते समय मलद्वार में लगावें, अंगुली से गुदा के अन्दर भी लगायें। इससे मस्से मूलायम हो कर पीड़ा में राहत मिलेगी। साथ ही खून का गिरना भी रूक जायेगा। मलद्वार के स्थान पर कट जाने या खाल के चिटक जाने को फिशर (Fissure) कहते हैं। ऐसी स्थिति में मलद्वार में **रिपन्टो** सुबह शाम लगावें। रोगी में कब्ज न रहने पाये परन्तु लिक्विड पैराफीन या जैतून के तैल के अलावा कोई अन्य जुलाब नहीं देना चाहिये।

काँछ निकलना (PROLAPSUS-ANI)

कुपोषण के शिकार बच्चों में दस्त या पेचिश के बाद मलद्वार कट जाता है और बाहर की ओर निकल आता है ऐसी स्थितियों में आहिस्ते से गुदा को दबाये। सोते वक्त तथा मल विसर्जन के बाद **रिपन्टो** मलद्वार पर लगावें।

मुहाँसे (PIMPLES)

दो सप्ताह तक **रासजेन्ट** की 1 ग्रेन की खुराक खाना खाने के बाद सुबह शाम दें। कब्ज न होने दें। मुहाँसे की फुन्सियों के इलाज के लिये **रासजेन्ट** के साथ साथ **हेमोप्लेक्स** और **अल्बो-सांग** खाने के बाद दें। फिर भी यदि मुहाँसे न समाप्त हो तो आहार को संतुलित बनायें। चिकनाई का प्रयोग कम से कम करें। रसदार फल, मट्ठा, नींबू तथा हल्का व्यायाम और खुली हवा रोगी के लिए लाभ प्रद हैं।

वात ज्वर या गठिया (RHEUMATIC FEVER OR ACUTE RHEUMATISM)

जोड़ों में सूजन के साथ ज्वर आता है और कभी कभी हृदय भी प्रभावित हो जाता है।

सामान्य दौरों में पहले गले में संक्रमण खराश के रूप में होता है और फिर टाँगों की जोड़ों पर लाली व सूजन आ जाती है और दर्द होता है। फिर अन्य जोड़ों पर भी यह प्रभाव आ जाता है। मवाद पड़ जाने वाली स्थितियों पर विशेष ध्यान देना चाहिये और इसे एन्टी माइक्रोबियल औषधियों से इलाज करना चाहिए। ज्वर और जोड़ों के दर्द में आराम पाने के लिए **डेसिल** का प्रयोग किया जा सकता है। **चेसोल** या **रबजान** की जोड़ों में मालिश और उपरोक्त औषधियों में **अयोबिन** का प्रयोग बहुत लाभकारी होगा। सूजन फौरन कम हो जायेगी और रोगी को तत्काल राहत मिलेगी।

रोगी के पाचन की ओर भी ध्यान देना आवश्यक है। कब्ज न होने पाये। मल का साफ होना चिकित्सा में सहायक होगा। दिन में 1 मि.ली. वाले **रेमोरिन** के इंजेक्शन भी दिये जा सकते हैं।

सियाटिका (SCIATICA)

कमर से टाँग तक नस के खिचाव के साथ होने वाले दर्द को सियाटिका कहते हैं। जब सियाटिक नस पर सूजन या अगल बगल के अंगों से इस पर दबाव पड़ता है तो यह तकलीफ पैदा होती है। इसका इलाज जरा जटिल है इस लिए मूल कारण की ओर ध्यान देना आवश्यक है। सूजन न हो तो दर्द के लिए **डेसिल** दें। **रबजान** की दर्द के अंगों पर मालिश और सिकाई से लाभ होगा। अनिद्रा की अवस्था में **विटसान** दें।

लुम्बागो (LUMBAGO)

मेरूदंड के लम्बर भाग में पीड़ा।

मेरूदंड की नसों और बाह्य माँसपेशियों में दर्द का आभास होता है। **डेसिल** पीड़ा में लाभदायक है। मूलकारण का निदान चिकित्सा के लिए आवश्यक है। **डेसिल** के साथ **रबजान** की मालिश करें।

गले में संक्रमण (THROAT INFECTION)

फैरिंग्स (Pharynx) भी गले के संक्रमण का शिकार हो सकता है। सूजन और जलन के लिए **एट्रोप्स** लगावें और नमक डालकर गर्म पानी से गरारा करें। खाने के लिए **डेसिल** का प्रयोग करें।

टॉसिल का बढ़ जाना (TONSILITIS)

यह बच्चों में बहुधा होता है। गले में सूजन, दर्द और और खाने पीने में निगलते समय कठिनाई महसूस होती है। रोगी को तीव्र ज्वर भी हो सकता है। टॉसिल फूलकर गले के द्वार को संकरा बना देते हैं, साँस बदबूदार हो जाती है और जबड़े के जोड़ों पर स्थित ग्रन्थियाँ बड़ी हुई और उनमें दर्द रहता है। इन दशाओं में **हेमोप्लेक्स** के साथ **डेसिल** दिन में 2 या 3 बार देने की सिफारिश की जाती है। गले में **एट्रोप्स** लगायें। बाहर गले पर **रबजान** लगाने से लाभ होगा। साथ ही साथ गले में संक्रमण या मवाद पड़ जाने में एन्टीबायोटिक दवाओं को भी प्रयोग करें। सूजन और दर्द में धीरे से आराम आ जायेगा। बाद में शारीरिक दुर्बलता के लिए **अल्बो-सांग** देते रहें।

मूत्र सम्बन्धी विकार (URINARY-TROUBLES)

(कृपया गुर्दे के अन्तर्गत भी पढ़ें)

रोगी को बार बार पेशाब आना स्नायुमंडल की कमजोरी के कारण होता है। स्नायु कमजोरी के लिए **नेवास** एक सर्वोत्तम औषधि है। पेशाब

का ज्यादा मात्रा में जल्दी जल्दी होना मधुमेह की निशानी है जिस के लिये **मर्सिना** उपयुक्त औषधि है। पेशाब में वीर्य आने पर **सेंज़ाईन** दें। दर्द के साथ पेशाब रूका हो तो **तुराइको** और **चिनियमको** अदलबदल कर दें। **स्पोलैक्स** को पेट साफ करने के लिए प्रयोग कर सकते हैं। इन सभी स्थितियों में रोगी की प्रतिरोधक शक्ति बनाये रखने के लिए **अल्बो-सांग** बराबर देते रहना चाहिये। यदि पेशाब न उतरने के पीछे किसी प्रकार की पथरी या अन्य अवरोध प्रतीत हो तो पेशाब लाने की दवा (DIURETIC) कदापि न दें, बल्कि अवरोध को समाप्त करने के लिए शल्य चिकित्सा का सहारा लेना ही उत्तम होगा।

बिस्तर पर पेशाब होजाना

यह बालको में आम तौर से होता है और कभी कभी जटिल हो जाता है। मूलरूप से ऐसे रोगी घबराहट के शिकार होते हैं। इस लिये खाने के बाद **विटसान** दिन में 2 बार दें और सोते समय **नेवास** दें। सबसे मुख्य बात चिकित्सा में यह है कि बच्चे को डांटे नहीं बल्कि उसे ज्यादा वात्सल्य दें ताकि उसका खोया हुआ विश्वास वापस आ जाये। बच्चे को सोने के कम से कम 3 घण्टे पूर्व खाना खिला दें तथा सोने से पूर्व पेशाब करवा दें।

आधा शीशी का दर्द (MIGRAINE)

इसे हेमीक्रेनिया भी कहते हैं। किसी किसी को इसके गम्भीर रूप से दौरे पड़ते हैं। गालों या माथे में दर्द होना (पूरे या आधे हिस्से में) इस रोग की पहिचान है। यह नाक की श्लेषात्मक झिल्लि की सूजन (SINUSITIS) से भी हो सकता। राहत के लिए **डेसिल** की 2 टिकियां दिन में 3 बार दी जा सकती हैं। **विटसान** देने से भी रोगी को आराम आयेगा। कुछ केसों में रोगी को अंधेरे कमरे में रखना पड़ सकता है। रोगी को कब्ज नहीं रहना चाहिये। किसी भी प्रकार का शारीरिक या मानसिक श्रम रोगी पर नहीं पड़ना चाहिए। सुपाच्य हल्का आहार ही रोगी को दे। चिकनाई वाले

पदार्थ या ऐसा कोई भी खाद्य पदार्थ, जिसके लेने से सिर दर्द होने लगता हो, नहीं लेना चाहिए। अनिद्रा की दशा में **विटसान** दें क्योंकि रोगी के लिए नींद का आना अति आवश्यक है।

दौरों के बीच **गोसट्रोमोन** और **विटसान** प्रत्येक की 1-1 टिकिया दिन में 3 बार दें। **हरबीटार्स** का प्रयोग भी दौरों पर काबू पाने के लिए उपयुक्त रहेगा। यदि दृष्टि दोष हो तो किसी नेत्र चिकित्सक से चशमा ले लें। साइनूसाइटिस में **एन्ट्रोप्स** नाक में डालें।

रोगों का वर्गीकरण, औषधियों का वर्गीकरण तथा प्रयोग विधि

I. वर्गीकरण

रोगों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है:

(1) कार्य दोष उत्पन्न रोग

(जैसे मनोवैज्ञानिक स्नायु विकार आदि) ऐसे रोगों की चिकित्सा में नींद लाने वाली औषधियाँ, रोगी का खोया हुआ विश्वास लाने में चिकित्सक द्वारा उसे शिक्षित करना आदि उपयागी होते हैं।

(2) अंगदोष से उत्पन्न रोग

इन रोगों में अंगों के विकार प्रमुख कारण होते हैं। उदाहरण के लिए गुर्दे, यकृत या एन्डोक्राइन ग्रन्थियाँ जैसे थायरॉइड, पिचूटूरी ग्रन्थि, पैक्रियास में विकार आदि। इन अंगों का कार्य सामान्य नहीं होने पाता है। इनको औषधियों द्वारा ठीक किया जा सकता है।

II. वर्गीकरण

रोगों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से भी किया जा सकता है।

(1) अल्पकालीन रोग

जैसे न्यूमोनिया, पेचिश आदि। इनमें चिकित्सक द्वारा तुरन्त ध्यान देना आवश्यक है।

(2) दीर्घकालीन रोग

ये प्रायः पुराने व जटिल रोग होते हैं जिनकी चिकित्सा में समय लगता है। इनमें अन्य विकार या जटिलतायें भी हो सकती हैं। जैसे उदाहरण के लिए सुजाक या स्नायु विकारों के साथ सुजाक आदि।

III. वर्गीकरण

रोगों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से भी किया जा सकता है।

- (1) **जन्म जात रोग** (वंशानुगत रोग) उदाहरण के लिए गर्भावस्था की प्रथम अवस्था में तेज औषधियों के सेवन से शिशु में शारीरिक असमानतायें हो जाना आदि। (इस अवस्था में कोई भी औषधि नहीं देनी चाहिये)।
- (2) **ग्रहित रोग** (Acquired diseases) ये निम्न प्रकार के होते हैं:
 - (i) चोट या जल जाने से उत्पन्न विकार (Traumatic disorders)।
 - (ii) संक्रमण से उत्पन्न रोग (Infectious diseases) (शरीर में कीटाणुओं या वाइरस के प्रवेश से उत्पन्न रोग आदि परजीवी जीवों के शरीर में आ जाने से उत्पन्न रोग इत्यादि)।
 - (iii) सूजन से उत्पन्न विकार (Inflammatory disorders) उदाहरण के रूप में त्वचा में लाली या सूजन तथा फेफड़ों की सूजन से उत्पन्न दमा आदि।
 - (iv) एलर्जी से उत्पन्न विकार (Allergic disorders) उदाहरण के लिए - त्वचा में खारिश, दमा आदि।
 - (v) विटामिन की कमी से उत्पन्न विकार, जैसे बेरीबेरी, हड्डियों का टेढ़ा हो जाना, रतौधी (रात्रि में दिखाई न पड़ता), प्रोटीन की कमी के कारण जलोदर आदि।

- (vi) **विक्षित रोग** (Malignant disease) जैसे कैंसर, रक्त कैंसर आदि।
- (vii) **जीवनी क्रिया के अस्वभाविक होने से उत्पन्न विकार** (Metabolic disorders) जैसे थायरायड ग्रन्थि का अधिक सक्रिय हो जाना, मधुमेह आदि।
- (viii) **औषधियों से उत्पन्न विकार।**

कारण

- (क) औषधियों का गलत या अधिक प्रयोग।
- (ख) निर्धारित खुराक से कम या अधिक दे देना।
- (ग) कई प्रकार की औषधियाँ एक साथ खिला देना जिससे औषधियों के पारस्परिक विरोधाभास से उत्पन्न विकार।
- (घ) निषिद्ध स्तिथियों में दवा का खिला देना जिससे गलत परिणाम स्वरूप विकार पैदा हो जाना या सदा के लिए नाजुक अंग जैसे गुर्दे, यकृत या अस्थि मज्जा का क्षति ग्रस्त होजाना।

IV.

- (अ) त्वचा और श्लेषात्मक झिल्ली के विकार जैसे मवाद व विषयुक्त घाव, आँखों में लाली, बेसीलरो पेचिश, मूत्र संस्थान में संक्रमण।
- (ब) **संस्थान सम्बन्धित रोग** (Systemic diseases)
 - (i) अमाशय एवं अंतर्द्वियों के विकार
उदाहरण: पक्वाशय में घाव (Peptic Ulcer)
 - (ii) केन्द्रीय स्नायु संस्थान के विकार
उदाहरण: मूर्छा (Epilepsy)

- (iii) मोटर स्नायु संस्थान के विकार (Autonomic Nervous System)
उदाहरण: उदाहरण उदा हुआ रक्त चाप
- (iv) हृदय सम्बन्धी विकार
उदाहरण: हृदय शूल (Angina pectoris), मस्तिष्क की धमनियों में रक्त जम जाना (Coronary thrombosis)
- (v) श्वास संस्थान सम्बन्धी विकार
उदाहरण: फेफड़े से सम्बन्धित श्वास या दमा, फेफड़े में यक्ष्मा (टी.बी.)।
- (vi) गुर्दों से सम्बन्धित विकार
उदाहरण: नेफराइटिस, नेफरोसिस।
- (vii) यकृत से सम्बन्धित विकार
उदाहरण: संक्रामक हेपेटाइटिस जो अंत में पीलिया पैदा कर देता है।
- (viii) रक्त या अस्थिमज्जा से सम्बन्धित विकार
उदाहरण: रक्ताल्पता (Anaemia)।
- (ix) जननांग सम्बन्धित विकार
उदाहरण: मासिक धर्म का समय पर न होना या पीड़ा के साथ होना।
- (x) आँख, कान नाक और गले से सम्बन्धित रोग।

चिकित्सा प्रणाली

जब रोग प्रारम्भिक अवस्था में होता है तभी उसकी चिकित्सा हो जानी चाहिए वरना वही रोग गम्भीर रूप धारण करके अनेक उपद्रवों को जन्म दे देता है और पुराना हो जाता है जिसकी चिकित्सा कठिन ही नहीं

बल्कि दीर्घकालीन हो जाती है। प्रारम्भ की अवस्था में चिकित्सा में समय कम लगता है जैसे न्यूमोनिया या गोनोरिया शुरुवात की दशा में केवल एक सप्ताह में ठीक हो जाते हैं लेकिन गम्भीर और पुराने रोग 40 से 60 दिन की अवधि में ठीक हो पाते हैं।

टी.बी. या राज यक्ष्मा कम से कम डेढ़ साल ले लेते हैं। गलितकुष्ठ (Leprosy) के इलाज में 4 से 8 वर्ष तक विशिष्ट औषधियों को देना पड़ता है। सभी जटिल और पुराने रोगों में रोगी सामान्य रूप से दुर्बल हो जाता है। और बीमारी के बाद कमजोरी दूर करने तथा रोगी को सामान्य होने के लिए टानिक जरूरी है। साथ ही सुपाच्य हल्का आहार उसे देना चाहिए। साथ ही यह ध्यान रखने योग्य बात है कि निर्धारित मात्रा व निर्धारित समय से कम समय देने से, औषधियाँ लाभ के बजाए नुकसान करती हैं और नये नये विकारों को जन्म देती हैं। इस लिए चिकित्सा करते समय औषधि की खुराक व समय का पूरा ध्यान रखें।

औषधियों का वर्गीकरण

- (1) टानिक औषधियाँ जैसे अल्बो-सांग, अल्बोकाल, अल्बो विट पाउडर, ईशेन तथा लिवाक्टिन-जी।
- (2) पाचन संस्थान पर सीधा प्रभाव डालने वाली औषधियाँ -
चिनियमको, डयासिन, गेस्ट्रोमोन, हरबीटार्स, कायनोटोमाईन, मेगनाइन, साल फ़ास, स्पोलैक्स, स्पोलैक्स-ई तथा टेक्सइन।
- (3) स्नायु संस्थान पर सीधा प्रभाव डालने वाली औषधियाँ
अगरको, अमिग्लिया, डेसिल, नेवास, सेंज़ाईन, विटसान।
- (4) रक्त पर प्रभाव डालने वाली औषधियाँ
(रक्त वर्धक टानिक तथा रक्त शोधक)

अल्बो-साँग हेमोप्लेक्स, अयोबिन, फेरस फ्यूमरेट, फेरिमिन्ट्स, मेडीटैब, रासजेन्ट, हर्बो-सल्फ।

- (5) श्वास संस्थान पर सीधा प्रभाव डालने वाली औषधियाँ
डान्जिन, डेस्मा, काफ्लिन और मेडीटैब।
- (6) मूत्र संस्थान पर सीधा प्रभाव डालने वाली औषधियाँ
नेवास और तुराइको।
- (7) रक्त वह संस्थान पर सीधा प्रभाव डालने वाली औषधियाँ
अमिग्लीया, आराटिन्म, ग्रान्डिको।
- (8) गर्भाशय पर सीधा प्रभाव डालने वाली औषधियाँ
आराटिन्म, ब्रह्मडाइन, चिनियमको, जी जी तथा प्रोमम।

नोट-

- (अ) रोग की प्रारम्भिक अवस्था में एक या अनेक औषधियों का योग ही चिकित्सा के लिए काफी होता है।
- (ब) गम्भीर व जटिल रोगों में, रोग से मुक्त होने पर रोगी के पोषण और पाचन पर उचित ध्यान देना आवश्यक है।
- (स) दवाओं का असर रोगी के कोषतन्तुओं की क्रियाशीलता, रोगी के शरीर की बनावट और पोषण पर निर्भर करता है।

चिकित्सक की सफलता, उसके वैज्ञानिक ज्ञान, रोगों के लक्षणों से पूर्ण रूप से अवगत होना, दवाओं की कार्य प्रणाली, दवाओं के बुरे असर आदि के ज्ञान के साथ साथ उचित दवा के चुनाव पर पूर्ण रूप से निर्भर करती है। औषधियाँ स्वयं में एक विज्ञान हैं और उनके प्रयोग से लाभ पाने का एक कला है। इस लिए एक सफल चिकित्सक होने के लिए औषधियों

एवं रोगों के गहन अध्ययन के साथ साथ रोगों का व्यवहारिक ज्ञान होना आवश्यक है।

एक चिकित्सक को रोग के सभी पक्षों पर गम्भीरता से सोचना पड़ता है और बेहतर यही होगा कि इलाज शुरू करने से पहले वह रोगी की आदतों, रोग के लक्षणों और दवा के गुणों और अवगुणों के बीच अटूट सामंजस्य कर ले। निदान के समय रोग के लक्षणों का सावधानी से निरीक्षण आवश्यक है।

औषधि मिश्रण (DISPENSING)

रोगी की उम्र को ध्यान में रखते हुए दवा की मात्रा निर्धारित करनी चाहिए। शिशुओं और बालकों में यकृत तथा रस संस्थान विकसित नहीं होते, इस लिए उनको छोटी खुराकें ही देनी चाहिए। इसी प्रकार वृद्ध रोगियों में भी पूरी तरह क्रियाशीलता नहीं होने से औषधियों का पूर्ण रूप से विलय नहीं होने पाता। इस लिए वृद्धों को सामान्य खुराक का 3/4 भाग ही देना चाहिए। हमारी निर्देश पुस्तिका में जो खुराकें लिखी गयी हैं वे सामान्य वयस्क 20 से 60 वर्ष की उम्र के बीच वाले) के लिए ही हैं। इस लिए 10 वर्ष या इससे कम उम्र वाले बच्चों के लिए वयस्क खुराक की आधी खुराक ही दें।

बच्चों व शिशुओं में कोई भी दवा पाउडर या टिकियों के रूप में न दें, ना ही उनसे इस मामले में जबरदस्ती करें, नहीं तो वे दवा को उल्टी करके बाहर निकाल देंगे। उनके लिए सबसे बेहतर यही होगा कि दवा को पीस कर पाउडर बना लें और शहद या वनप्सा शर्बत में घोल कर चटा दें। वे आसानी से दवा इस प्रकार खा लेंगे। दस्त और पेचिश में विशेष औषधि को देना चाहिए साथ ही रोगी के शरीर में जलाभाव न होने पाये यह ध्यान रखना बहुत जरूरी है। **डेसिल** को शरीर के सभी बाह्य अंगों की पीड़ा में उपयोग किया जा सकता है। लेकिन इसे (**डेसिल**) दस्त, टायफाइड, (मोती झारा ज्वर), पेट के शूल और हैजे की दशा में कदापि प्रयोग न करें।

अंत में हमारा यह नम्र निवेदन है कि इस निर्देश पुस्तक में हमने यथा सम्भव रोगों की जानकारी और अपनी औषधियों से उनका इलाज करने के बारे में पूर्ण विवरण देने का प्रयास किया है फिर भी चिकित्सा में सामंजस्य कर लें ताकि रोगी को पूर्ण फायदा मिल सके तभी हम अपने इस कार्य को सफल समझेंगे और उनके सहयोग से मानवता की सेवा का अपना उद्देश्य पूरा कर सकेंगे। मानव स्वयं में संसार की सबसे जटिल मशीन है और कोई एक नियम या अपवाद हर रोगी पर खरा नहीं उतर सकता। चिकित्सकों के विवेक एवं उनकी विवेचना ही उनकी सफलता का आधार होगी ऐसी हमारी धारणा है। हम उनकी सफलता के आकांक्षी हैं और उनकी सफलता ही हमारी सफलता होगी। साथ ही हम हृदय से भारत एवं अन्य एशियाई देशों के चिकित्सकों के पिछले 90 वर्षों से प्राप्त सहयोग के लिए आभारी हैं और आशा करते हैं कि उनका अमूल्य सहयोग हमें भविष्य में भी प्राप्त होता रहेगा। जरासी भी संशय की दशा में चिकित्सक गण हमें लिख कर विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। हमें उनकी सेवा कर अति हर्ष होगा।

सफलता की शुभकामनाओं सहित,

डिशन

अनुक्रमणिका (Index)

अगरको.....	24	अपेन्डीसाइटिस	103
अल्बोकाल.....	25	आंतों की वेदना (शूल)	104
अजीर्ण.....	100	इन्जेक्शन (सुई लगाना)	23
अनुपान	20	उपदंश	108
अनिद्रा	93	एक्जिमा	115
अल्बो-सांग	25	एनट्रोप्स	41
अल्बोविट पाउडर	29	एँठन के दौरें	93
अमिग्लीया.....	30	कान के रोग	125
आराटिन्म.....	31	कायनोटोमाईन	56
अयोबिन.....	52	काफ्लिन	53
ओलोसिन	64	कांछ निकलना	135
औषध कैसे दी जाय	20	कृमि	104
आधा शीशी का दर्द.....	138	कुकुर या काली खांसी.....	111
औषधियों का वर्गीकरण	143	गले में संक्रमण	137
औषधि मिश्रण	145	गर्भाशय विकार	127
वेदना और पीड़ा	97	गर्भावस्था	128
पेट और आंतों में दर्द.....	98	गुर्दों का दर्द.....	131
आमाशय में सूजन	102	ग्रान्डिको	47

गेसट्रोमोन	44	दमा या श्वास	120
जी जी सिरप	45	दांत का निकलना	124
ग्रन्थियाँ	114	धूम्रपान	88
घाव तथा कट जाना	117	नपुंसकता	118
चिनियमको	35	नेत्र	126
चेसोल	34	नेवास	63
जहर-को	83	नासिका	134
जीवन शक्ति	13	पायोरिया	133
शोथ	113	पक्वाशय में घाव	87,101
जोड़ों की सूजन	97	पथ्य और भोजन	86
ज्वर	128	पोषण	15
टॉसिल का बढ़ जाना	137	फेरिमिन्ट्स	42
टूथ पाउडर	60	फेरस फ्यूमरेट	43
डयासिन	40	पेट और आंतों में दर्द	98
डान्जिन	36	पेचिश व पतले दस्त	102
डेस्मा	38	पित्ताशय में पथरी	105
डेसिल	37	पित्ती	116
तुराइको	81	पीलिया	130
त्वचा रोग या चर्म रोग	114	पीडा के साथ मासिक धर्म ..	127
दाद	115	प्लूरिसी	109

प्लीहा	106	मुहाँसे	135
बवासिर	134	मूत्र सम्बन्धी विकार	137
बायो-साल	32	यकृत व प्लीहा	105
बाह्य चिकित्सा	22	रक्त दोष	18
ब्रह्मडाइन	33	रक्ताल्पता	96
भावना	7	रासजेन्ट	66
मलेरिया	106	रेमोरिन क्यापसूल	67
मूर्छा	95	रेमोरिन तेल	68
मानसिक थकावट	94	रक्त स्राव	125
मलविसर्जन	91	रब्जान	71
मद्यपान	88	राजयक्ष्मा	110
मुख जिह्वा और दाँत	132	रोगों का वर्गीकरण	139,140
मेडीटैब	59	रिपन्टो	70
मेगनाइन	58	लिवाक्टिन - जी	57
मर्सिना	61	लुम्बागो	137
मात्रा	20	बात ज्वर या घटिया	136
मधु मेह	87,111	विटसान	82,93
मुहाँमा और दांत पीड़ा	133	व्यापतीकरण	90
मिरगी	95	व्हिटलो	117
मोटापा	86		

शिशुओं और बच्चों की	सिर में तीव्र वेदना और
चिकित्सा 122	अंगों में बाह्य पीडा 93
श्वेत प्रदर 127	सोरियासिस 115
सम्मिश्रण 21	स्वेदन विधि 22
साक्टोमिन्स 71	सेंज़ाईन 76
साल फ़ास 74	स्पोलैक्स 78
संक्रामक रोग 106, 108	स्पोलैक्स-ई पाउडर 80
संग्रहणी 104	स्किनमेंट 77
सन्निपात 92	स्वप्रदोष 119
असहनशीलता 90	स्त्रियों के गुप्त रोग 126
सुजाक 107	स्नायु विकार 92
सूखा रोग 117	हरबीटार्स 49
सियाटिका 136	हर्बो-सल्फ 51
सिर दर्द 129	हेमोप्लेक्स 49
सिर एवं केश सम्बन्धी रोग 129	हृदय रोग 129
	हीलिंग डस्ट 48